

NOT FOR SALE

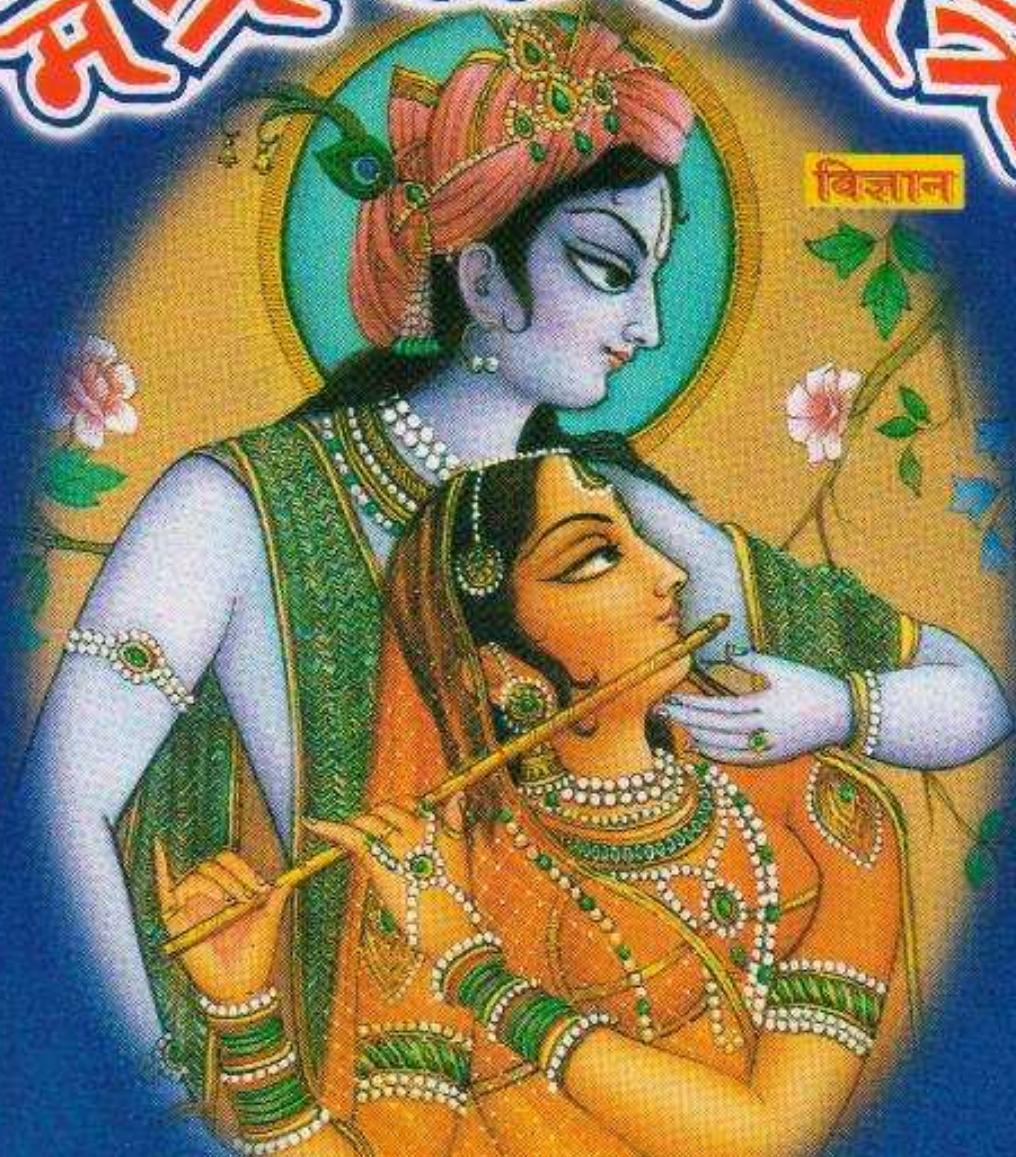
कृष्ण कळके जगद्गुणं

अगस्त 2003

मूल्य : 18/-

# कृतंत्र-यंत्र

विज्ञान

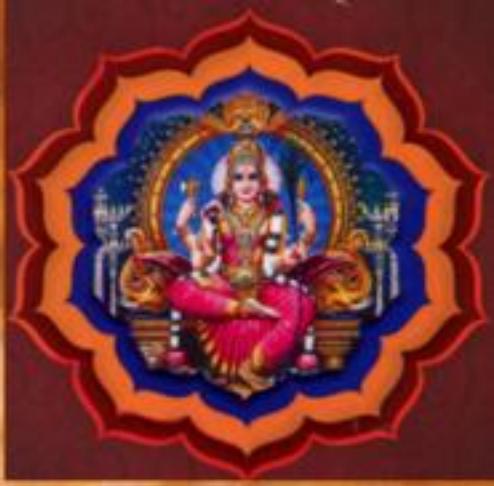


प्रेत बाधा निवारण संभव  
पहली उड़ान स्फटिक पाता

श्रीकृष्ण बाधा साधना  
पदमा कमता साधना

तद्मी साधना के अत्युक्त प्रयोग





## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server!

आनंद भद्रा: कृतव्य वस्तु दिव्यतः  
मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी प्रज्ञति प्रगति और भारतीय गृह विद्याओं से सम्बेदन मासिक पत्रिका

# शिवालय प्रकाश

॥ ॐ परम तत्त्वाय नारायणाय गुरुभ्यो ततः ॥



## साधना

कृष्ण साधनाएं	29
पिंडदोष समाप्ति	32
प्रत्यंगिरा साधना	46
लक्ष्मी-पद्मा प्रयोग	68
प्रेत बाधा निवारण	72
Annapoorna	
Sadhana	82
Vindhya vasini	



## विशेष

Sadhanā	83
Shakti Vinayak	83
Ganpati Sadhana	84
Shiva Gouri	84
Sadhana	85

## दीक्षा

रामेश्वरी दीक्षा	49
------------------	----

प्रेरक संस्थापक  
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली  
(परमहंस रूपार्थी  
निखिलेश्वरानन्द जी)

प्रधान सम्पादक  
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

कार्यवाहक सम्पादक  
श्री. कैलाशचंद्र श्रीमाली  
संयोजक व्यवस्थापक  
श्री अरविन्द श्रीमाली



## सद गुरुदेव

सदगुरु प्रवादन	5
गुरु वाणी	44

## स्त्रीमा

शिव्य धर्म	43
नक्षत्रों की वाणी	60
मैं समय हूँ	62
बाराहमिहिर	63
जीवन सरिता	64
ज्योतिर्चक्र	66
इस मास दिल्ली में	80
एक दृष्टि में	88

दर्श 23	अफ 8
अगस्त 2003	पृष्ठ 88



## विवेचन

योगेश्वर श्रीकृष्ण	25
कुण्डलिनी जागरण	37



## स्तोत्र

श्री कृष्ण स्तोत्र	76
--------------------	----

## :: सम्पर्क ::

मूल्य (भारत में)

एक प्रति : 18/-

नाइट्रिक : 196/-

प्रकाशक एवं स्वामित्व  
श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

द्वारा

दुर्दमन किन्टर्स  
487/505, गोलगढ़ी,  
गोलगढ़ रोड, नई दिल्ली - 87

से मुहित तथा

मंत्र तंत्र यंत्र विज्ञान लाइब्रेरी  
कालीनी जीघरपुर से प्रकाशित

सिद्धाश्रम, 308 जोड़ा एनकॉम, पीलभुरा, दिल्ली - 110034, फोन: 011-27182248, टेली फॉन: 011-27196700  
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, व०० श्रीमाली नार्थ, लाइब्रेरी जीघरपुर - 342001 (राज.) फॉन: 0291-2432213, टेलीफॉन: 0291-2432210

WWW address - <http://www.siddhashram.org> E-mail add. - [mtvv@siddhashram.org](mailto:mtvv@siddhashram.org)

## नियम

पत्रिका में प्रकाशित लाली रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'भज-तज-यत्र' दिवाने पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्बद्ध का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तरं—पुस्तक करने वाले पाठक पत्रिका ने इतनी भी पूरी सामग्री को गल्प समझे। किसी नाम स्थान या घटना को किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जाय, तो उसे संघोग समझे। पत्रिका के लेखक धुमधार साधु—सत्ता होते हैं, अतः उनके पते के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद-विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, पुस्तक या सम्बद्धक जिम्मेदार होंगे। किसी भी सम्बद्धक को किसी से प्रकाशक का पारिश्रमिक नहीं दिया जाता। किसी भी प्रकाशक के वाद-विवाद में जोधपुर न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पात्रक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका यार्डीलय से भगवाने पर हम उपनी तरफ से प्राप्ताणिक और सही सामग्री अथवा यत्र भेजते हैं, पर किसी भी उसके बाद में असली या नकली के बारे में अथवा प्रगत होने ये न होने के बारे में हमारी जिम्मेदारी नहीं होगी। पाठक अपने विश्वास -२ ही लेसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मिल जाए। सामग्री के मूल्य पर तक या वाद-विवाद मान्य नहीं होगा। पत्रिका का वार्षिक युल्क गर्भानन्द में १९०/- है परं यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को वैमानिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं तरीके वार्षिक कार्यालय से इसका अध्ययन दो दर्द, लीन वर्ष या वर्षावर्षीय सारस्वता को पूर्ण समझे। इसमें किसी भी प्रकाशक की आपाति या आलोचना किसी भी रूप में रद्दीकार नहीं होगी। पत्रिका में इवानीश्वित किसी भी साधन में सफलता—असफलता, हानि—लाभ की जिम्मेदारी साधक की स्वयं की होनी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रदीप न करे, जो नीतेक, साधारण एवं कानूनी नियमों के विवरण हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विवाद भाग्य होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्त्त्वारियों की तरफ से होता है। प्राठकों की पांच पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का लाली सामावेश किया गया है जिससे कि नवीन पाठक लाली उठा सके। साधक या लेखक अपने प्राप्ताणिक अनुष्ठयों के आधार पर जो मत्र, तत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्यव्याख्या के फ़ार हो) बताते हैं, वे ही दे दें हैं। अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यव्याप्त है। आवरण पूर्ण पर या अन्दर जो भी पाठ्य प्रकाशित होता है, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेदारी फोटो जेजन वाले फोटोग्राफर अथवा आटिस्ट की होती। दीक्षा प्राप्त करने का दारपूर्य यह नहीं है कि साधक उससे सम्बन्धित लाली तुपन्त प्राप्त कर सके, यह भी दीक्षा और सतत प्रक्रिया है। अतः पूर्ण भद्रा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करे। इस सम्बन्ध में किसी प्रकाशक की कोई भी आपति या आलोचना स्थीकार्य नहीं होनी। पुरुदेव या पत्रिका परिवार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकाशक की जिम्मेदारी यहन नहीं करेगे।

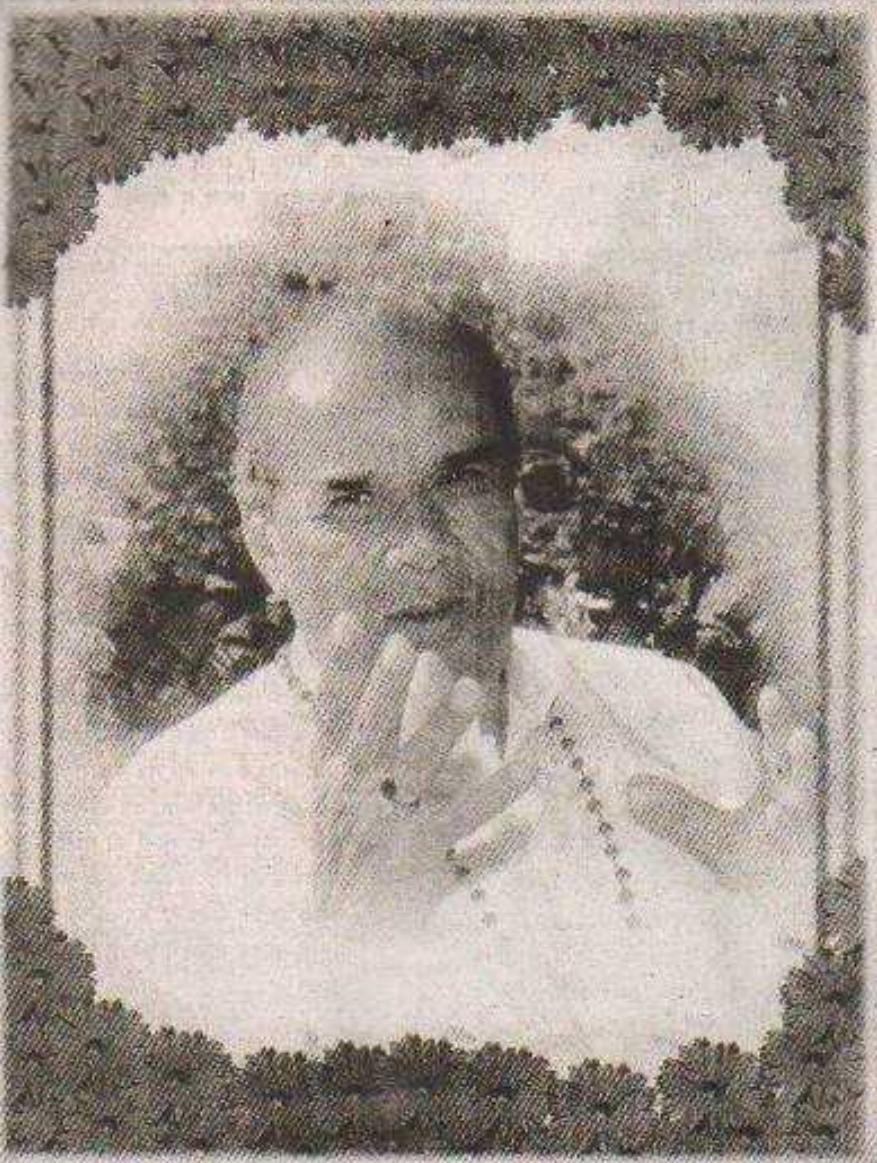
## प्रार्थना

अज्यवेद रूपं सामार्थं वेद,  
एज्यं परेवं भवतां सदैव।  
ओं दावर्चिन्त्यं ओं जस्यमूर्तिः;  
निखिलं श्वरत्वं सततं प्रणम्यम् ॥

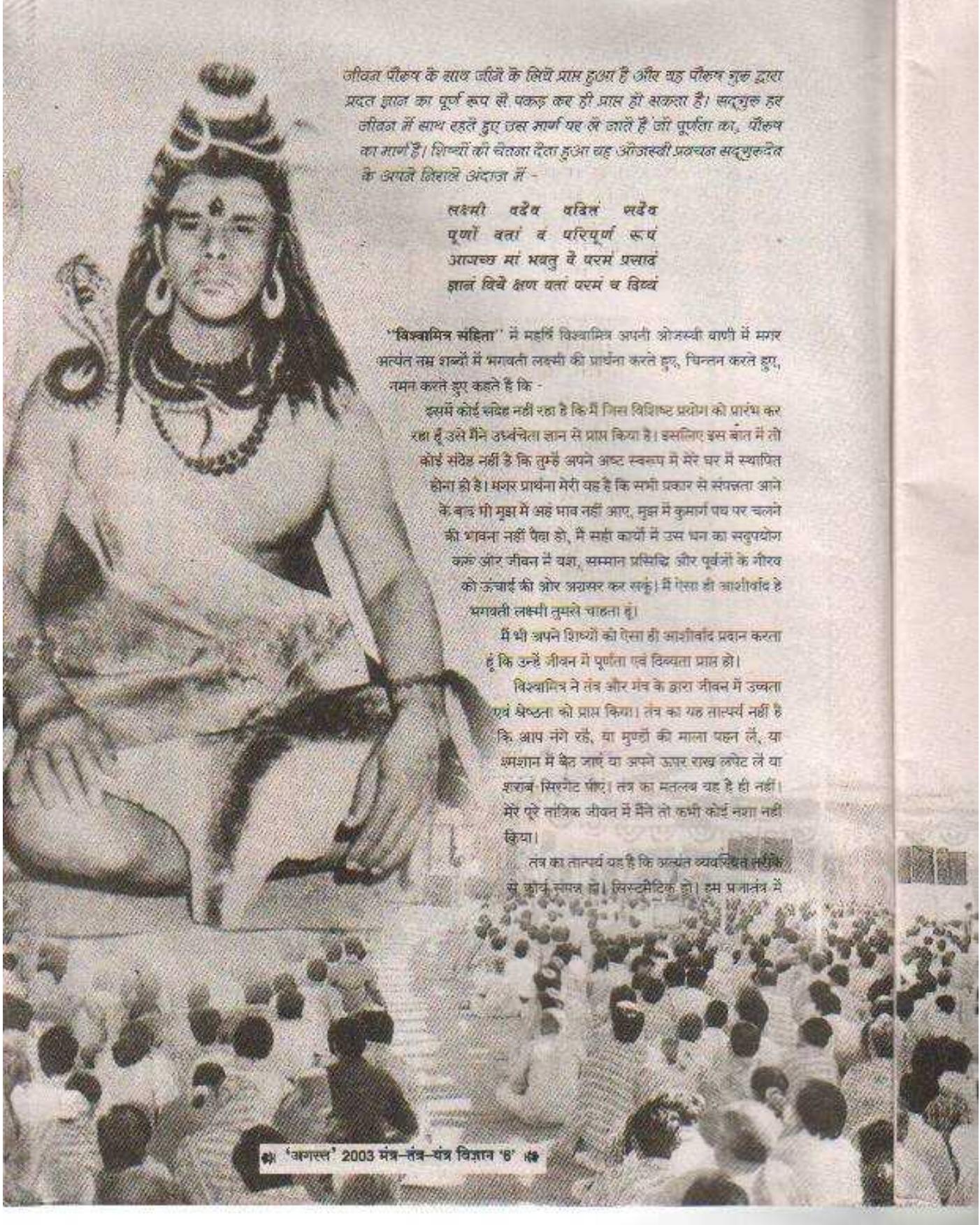
हे गुरुदेव! आप ऋग्येव के साक्षात् प्रनिमृति हैं, समवेदीय अवों में वेद हैं, आप परममूर्ति और यज्ञ स्वरूप हैं। ओं नम्नवी होने हुए भी उदाह त्रिलक्ष्म बुक्त हैं, निखिल रूप में आप सिद्धी, साधकों और शिष्यों द्वारा सनसु बन्धनीय और अभिनमनीय हैं।

## ॐ दीक्षा ॐ

किसी महात्मा के पास एक व्यक्तिमित्य ही जाता रहता था। उसका एक ही आश्रय था, कि उसे ईश्वर से साक्षात् हो जाए। वह नियम नियम से जाता, थेटा और अपनी जिज्ञासा प्रकट करता। उन्हें जाने उपरे कुछ डतापा और खुंझ छाने लग गई, कि क्यों नहीं उसे ईश्वर से साक्षात् हो रहा, जबकि वह गुरुदेव के आश्रम रोज ही जाता था। उनके दर्शन भी करता था और मानन-कीरन में बढ़-चढ़कर भाग लेता था। प्रारम्भ में तो उसने मृक्तन: कुछ नहीं कहा, विन्दु गुरु तो मूल ही छोटा है, वे उसके मनोभावों की बताते-भाति पढ़ हो रहे थे। जब उसके चेहरे से विशेष प्रकट ही छोटे नहा, तो एक दिन उन महात्मा ने उसे बुला कर पूछ ही लिया, कि वह यिन्हें क्यों रहता है। उत्तर में वह व्यक्ति फट पड़ा और बोला—“यदि आप जैसे महात्मा के साक्षिध्य में रहकर भी ईश्वर का साक्षात् नहीं कर सका, तो मेरा आपके पास आने का अधि ही बन्धा!” उत्तर में वे महात्मा मुँह कुरात, और उसे उपने साथ नहीं तक चलने को कहा। वह व्यक्ति प्रसन्न हो गया, कि आप संभवतः गुरु कोई दीक्षा मिलेगी और मैं ईश्वर के दर्शन कर नगा। नहीं का तट पर पहच कर उन महात्मा ने उस व्यक्ति को भी अपने साथ नहीं में उतनने को कहा, जोग बीष धारा में पहुँचने पर उसका सिर बलात् धानी के भीतर रहा दिथे तथा कुछ क्षण बच छोड़ दिया। व्यक्ति ने ऊपर निकल कर ढाँफने ढाँफने पूछा—“आपकी इस किया का क्या अर्थ?” उत्तर में उस व्यक्ति ने पूछा—“जब तुम धानी के भीतर थे, तब तुम्हारे मन में क्या भाव था?” व्यक्ति ने उत्तर दिया—“काश। मुझे किली भी तरह से व्यास लेने का अवसर मिल जाए!” तब महात्मा ने कहा—“जिस दिन तुम्हें दानी उटपटाहट ईश्वर के लिए पैदा हो जाओ, उसी दिन तुम उसके साक्षात्कार का उपाय भी प्राप्त कर लोगे।” गुरु दीक्षा के माध्यम से अपने शिष्य के मन में भी मालोड़न विलोड़न का तीव्र दबाव होते हैं और जिसके मन में ईश्वर प्राप्ति की लालना होती है, वह एक झटके से अपना सिर उठा कर ईश्वर का साक्षात् कर ही लेता है। आपह सत्य है, तो उस चैतन्य सत्ता की पवनता शब्द वायु की तरह प्राप्त होती ही जिस प्रकार व्यास-प्रश्वर यहीं दीक्षा की किया का रहन्नपर्य है। जिसने दबाव सहा, वही ने दीक्षा के मर्म में प्रवेश कर सका। दीक्षा द्वारा गुरु उटपटाहट ही पैदा करते हैं।



ગુરુ ગતિ પાર લગાવો



जीवन पौलप के शाष जीवों के लिये प्राप्त हुआ है और वह पौलप नुक द्वारा प्रदत ज्ञान का पूर्ण रूप ले पकड़ कर ही प्राप्त हो सकता है। सद्गुरु नव जीवन में साथ रहते हुए उस मार्ग पर ले जाते हैं जो पूर्णता का, पौलप का मान है। शिर्षों की चित्तता देता हुआ वह औंजस्ती प्रवचन सद्गुरुदेव के अग्ने लिखाले अदाज ने -

लक्ष्मी वदेव वदितं वदेव  
पूर्णो वतां व परिपूर्ण स्वर  
उराजच्च मार भवतु वे परमं प्रसादं  
ज्ञानं विचेऽक्षण यतां परमं व विद्यं

‘विश्वामित्र चहिता’ में महर्षि विश्वामित्र अपनी ओंजस्ती वाणी में मगर भत्यत नम शब्दों में भगवती लक्ष्मी की प्रार्थना करते हुए, चिन्तन करते हुए, नमन करते हुए कहते हैं कि -

इसमें कोई संदेह नहीं रहा है कि मैं जिस विशिष्ट प्रयोग को प्रारंभ कर रहा हूँ उसे मैंने उद्धवनेता जान से प्राप्त किया है। इसलिए इस चात में तो कोई संदेह नहीं है कि तुम्हे अपने आठ स्वरूप में मेरे घर में स्थापित होना चाहे है। मगर प्रार्थना मेरी यह है कि सभी प्रकार से संपत्ति आने के बाद भी मृग में अह भाव नहीं आए, मृग में कुमार यथा पर चलने की भवन नहीं पैदा हो, मैं सहा कर्ता मैं उस घन का सदुपयोग करूँ और जीवन में यश, सम्मान प्रसिद्धि और पूर्वों के गौरव को ऊँचाई की ओर अग्रसर कर सकूँ। मैं ऐसा ही जाशीवाद हूँ

मैं भी अपने शिष्यों को ऐसा ही जाशीवाद प्रदान करता हूँ कि उन्हें जीवन में पूर्णता एवं विद्यता प्राप्त हो।

विश्वामित्र ने तत्र और मत्र के द्वारा जीवन में उच्चता एवं वेष्टना को प्राप्त किया। तत्र का यह सात्यर्थ नहीं है कि आप नोने रहे, या मुण्डों की माला पहन लें, या अशान में केल जाएं या अपने ऊपर रख्ख लेट ले या शराब पिरनेट पीले। तत्र का मतलब यह है ही नहीं। मेरे पूरे नाशिक जीवन में मैंने तो लभी कोई नशा नहीं किया।

तत्र का तात्पर्य यह है कि जल्दी व्यवसिद्ध नहीं है कार्य समझ जा। सिस्टमेटिक हो। इस प्रगतिवत में

रहते हैं, वह सो नहीं है। जब प्रजा का राज्य सुचास रूप से चले उसे प्रभावित कहते हैं। अबर राजा का राज्य भवान क्षय से भले उसे राजनेत्र कहते हैं। और हम सही दृश्य से लक्षणों का प्राप्त करे उसे लक्ष्य सेव कहते हैं। महर्षि विश्वामित्र ने उद्वेचेता रूप से लक्ष्मी तत्व का निर्माण किया और अद्वितीय संवेद बन रखे।

उद्वेचिता का अर्थ है मनुष्य उस आश्वानिक उच्चता को प्राप्त कर सके जिसे पृष्ठांशु दूषित करा गया है और मनुष्य का नात्यर्थ है जो अमशान की ओर इस कदम बढ़ा रहा। अब ऐसा होता है मनुष्य तो उसका पदनाम कदम मूल्य की ओर बढ़ा है। उद्वेचिता उस जगत् चौसठ साल तेहम विन है तो जन्म के दूसरे दिन चौसठ साल बड़म विन होगी और धैर्य-धैर्य वह एक-एक इन भूमि की ओर अग्रसर होगा। इसको मनुष्य कहते हैं।

मगर यह जीवन नहीं है। अमशान की ओर जाने वाला जीवन नहीं कहता। जो पैदा होता है वह मूल्य को प्राप्त होना ही। मगर यह जरूरी नहीं है क्योंकि मुझे बहुत अच्छी तरह जान है कि विष्णु अपनी मरे नहीं क्योंकि उनका नाम आपके ओर दृष्टको पाठ है। उनके बेटे का नाम मुझे याद नहीं, आपको भी नहीं। विश्वामित्र अभी मरे नहीं, अब नहीं नहीं, कणाव, मुलस्त्य, इक्ष्वाक्य, धगवान् बुद्ध, महावीर न्यायी नहीं, विश्वदानंद समाप्त रुप नहीं।

ये सभी जीवित हैं। जीवित का नात्यर्थ है निनकी कीर्ति-जीवित रहनी है, जिनका यश जीवित रहता है। जीवित कब रहता है? तब जब जीवन के पथ पर चलते-चलते कभी समझूँ मिल जाएँ।

मगर उसमें भी तो स्थितिहास है। या तो तुम उसके पास से निकल जाओ, उसको नहीं पह जान सको क्योंकि तुम्हारे पास वह दृष्टि तो है ही नहीं और तुम पाप में से निकल और अमशान तक पहुँच सकते हो। और तुम्हारे पिताजी के साथ ऐसा ही हुआ। उनको जीवन में काहि सकूँ जल्लर मिल होगे, वह हो दी नहीं सकता सदृशु से भेट नहीं हुई हो। यह हो सकता है कि उन्होंने पहचानने में गलती कर दी हो और पाप में से निकल गए हों, और अमशान में जाकर मो नह। तुम्हारे दावाजी के साथ भी वह घटना थी, तुम्हारे परवाना के साथ भी यही घटना घटी और तुम्हारे साथ भी यही घटना घट सकती है।

मगर यहि बीच में कोइ सबजूँ मिल जाएँ तो उनके परण फकड़ लेना। मैंने शब्द प्रयोग किया है सबजूँ, गुरु नहीं। गुरु वह कहलाता है जो छल भी कर सकता है, पापकर मो कर सकता है, ढोन भी कर सकता है। ऐसे गुरु तुम्हें प्राच्यक गती और मोइलल में मिल जाएँगे।

एक बार बहु वर्ष पहले शिल्पी नाना ता तुम्हारी मानाजी से कहा-

हालिंगर जकड़ स्नान कर आते हैं। कार में ले जाए या नो बस में रह। बस में चेट। कुछ प्रवास सौ विलोनीटर जाए जान कि उस बस में ऐसे अंगूठी बैठने वाला थिला। “अंगूठी खलन लो, महान जातिक नाशयग तत शमाली कि अंगूठी।”

जाना तो प्रचार है ही, थोड़े बहुत लोगों नाम से जानते हैं ही चहूर से बेशक न पठनाने। उस बस में कोई मुझे जानता नहीं था मैं बिल्कुल सामान्य अवस्था में बढ़ा था, थोड़ी कुरां, न कई माला, न कोई जिपूट। आम घासों की लबद्ध बढ़ा था। चाहता लो दिल्ली में दस काले बगा खलना था और वे विश्व भव्य अनुशव करते कि गुरुतों में कार में चेट। मगर मैंने गमा जग्ना उचित समझा नहीं।

मैं उसे देख रहा था। वह भासह रूपरेष में एक अंगूठी बच रहा था और कह रहा था - इसके प्रत्येक मल की इच्छा पूर्ण होती है। वह नाशयग दस श्रीमानों की तरफ रिक्ष अंगूठी है।

मैंने कहा - मर्हया बधार जाना!

उसने कहा - क्या है?

मैंने कहा - एक अंगूठी विला, मेरी भी एक इच्छा है।

उसने कहा - भासह रूपरेष लंगें।

मैंने कहा - ये अंगूठी नुस्खा कहा से लाए।

उसने कहा - नाशयग दस श्रीमानों से जाना। उन्होंने रिक्ष करके दी देता। और उन्होंने कहा है कि विसको बहुत ज्ञान अद्वा तो उसको जेना, अश्रुदावन को गत देना। हुमें नहीं क्या या नहीं।

मैंने कहा - पक्ष अंगूठी मेरे नाम की निकाल दे, मेरी एक तबलोफ क्षेत्र। मेरी इच्छा पूरी हो जाए?

उसने कहा - परी जलर होनी नाशयग दस श्रीमानों वह नाम नहीं सुना?

मैंने कहा - नाम तो सुना है मगर उसी वेष्यगे जा नीदा नहीं मिला।

उसने कहा - तुम ज्या केवलान। बड़े झालानी हैं।

मैंने कहा - तुम्हों तो देखा होगा।

वह बोला - बिल्कुल। बड़ा अच्छी तरह से दिलाता हूँ और उन्होंने हुस्ते अंगूठियों दी और कहा कि विसको बहुत ज्ञान हो उनको देना। तुम्हारे क्या मनोकामना है?

मैंने कहा - मेरी पन्नी की बिलिस ही क नहीं रही।

तो उसने कहा - पन्नी के लिए उन्हपं नहीं पड़ी।

मैंने व्याप्त नपदे विव, अंगूठी तो तो उस अंगूठी पर जन्हीं चुव रखा था बिल्कुल।

मैंने कहा - लरितार में त्यारी लुकन कहा है क्योंकि दूरितार ने जा ही रहे हैं, कौर मत रिक्ष कोई भीन हो तो खराब हो।

उम्मने कहा - हरिहर में उनका लड़का आवश्यकारा है, उनकी दुकान से खरीद लेता।  
मैंने पत्नी से पूछा - यह जोश लड़का आवश्यकारा कहां से आ गया। वो न लड़कों के नाम गुणी भी नहीं हैं,

वह जोश लड़का कहा से आ गया? मैं सोचने लगा।

उम्मने कहा - क्या सोच रहे हो?

मैंने कहा - सोच तो बहुत कुछ रखा हूँ, मगर दुकान कहां है जोम प्रकाश की।

उम्मने कहा - आप हरिहर में गजबाट दर चले जाना। तुम्हें खरीदना क्या है?

मैंने कहा - एक तो मात्रा खरीदती है। नारायण वस्त्र श्रीमाली का बहुत नाम सुना है, मुझे है लड़का बड़ा योगी है, ताकिक भी है। अगर उनके पास जाएं सो क्या मिल लेने हैं?

उम्मने कहा - वे तुमसे मिलेंगे नहीं, लाख-चार दिन पढ़े रहना पड़ता है फिर मिलने हैं।

मैंने पूछा - तुमने उन्हें देखा है?

उम्मने कहा - देखा है, बिल्कुल देखा है, बार-बार पृष्ठ रहे हो कर्व गी, जारी हैं।

हैं?

मैंने कहा - ऐ, आई, दो तो नहीं के मध्य मेरी बड़ी मिलने की इच्छा है।

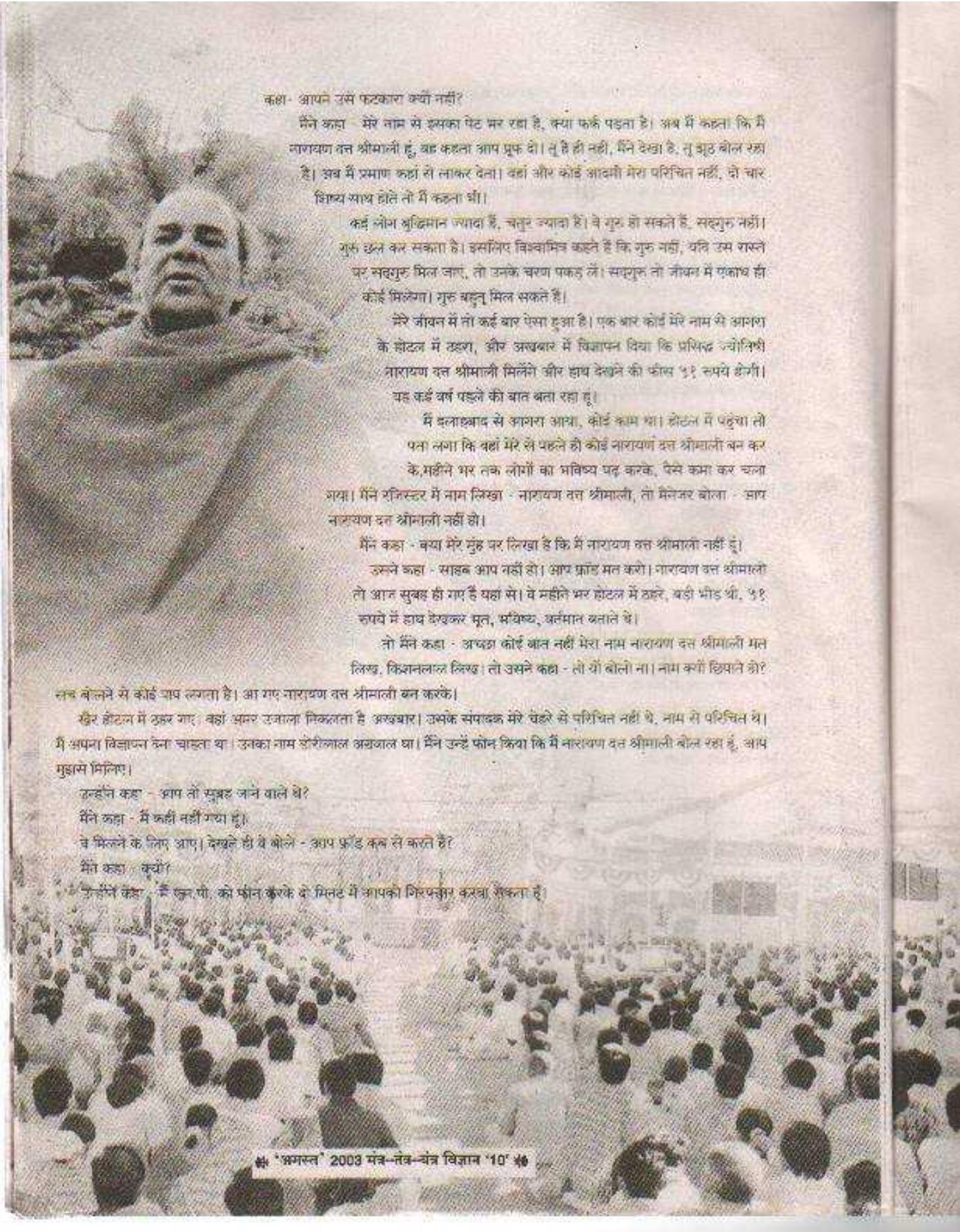
क्यों दिनदर्त हैं?

वह बोला - उम्ही बड़ी स्पैफ शाही है, और लंबी जटा है, धोती पहनते हैं, और बुद्ध नहीं पहनते हैं। तुम जा जोगे तो पहले दिन नहीं मिलेंगे, लेकिन बैठे रहोगे तो मिलेंगे। मगर ये सभी दिनिया देनी पड़ती।

मैंने कहा - उम्हि किसने है उनकी?

उम्मने कहा - उम्हि तो उससे मिलायारी गल के है। तुम्हें मिलना है तो हरिहर में उनके लड़के पास जाना।

आज भी वह अनुरोद मेरे पास पहुँचे हैं  
स्नोक मना मेरी पूरी होती या नहीं होती  
मगर यापद नपद जो मैंने भेट चढ़ा  
दिया। इस स्नानर मे कहु जाए  
होल जो मेरे नाम से अस्तुतियाँ  
बेच रहे होंगे। पत्नी ने



कहा - आपने उम्र फटकार लियो नहीं?

मैंने कहा - मेरे नाम से इसका पेट भर रहा है, क्यों कोई पड़ता है। अब मैं कहता कि मैं नाशयण वत्त श्रीमाली हूं, वह कहता तो प्रभुक है। न हो ही नहीं, मैंने देखा है, न गृह बोल रहा है। अब मैं प्रमाण कहा से लाकर देता। वहाँ और कोई आदमी मेरा परिचित नहीं, वो चार डिंग्य याथ होते ने मैं कहना चाहीं।

कहे लोग शुद्धिमान ज्यादा हैं, चतुर ज्यादा हैं। वे गुरु जो सकते हैं, सद्गुरु नहीं। गुरु ठन कर सकता है। इसलिए विवरणिक कहते हैं कि गुरु नहीं, वह उस गप्ते पर सद्गुरु मिल जाता, तो उनके चरण पकड़ ले। सद्गुरु ने जैवन में लकाश ही कोई मिलेगा। गुरु बहन् मिल सकते हैं।

मेरे जीवन में तो कोई बात देखा हुआ है। पक भार कोई मेरे नाम के आशंका के सोटन में रहता, और अखबार में विज्ञापन दिया कि प्रधिन ज्योतिषी नाशयण वत्त श्रीमाली विनेसे और हाथ देखने की कीमत ५१ रुपये होती। वह कई बार गढ़ते की बात बता रहा हूं।

मैं इन्वाइट्राइट से आशंका आया, कोई काम था। ट्रेटमेंट में पहुंचा तो पता लगा कि वहाँ मेरे से पहले ही कोई नाशयण दस श्रीमाली बन कर के, महीने भर तक लोगों का प्रविष्ट्य पढ़ करके, ऐसे कमा कर चला गया। मैंने रिट्रिटर में नाम लिखा - नाशयण वत्त श्रीमाली, तो मैंने भर बोला - माप नाशयण दस श्रीमाली नहीं हो।

मैंने कहा - क्या मेरे सुन्दर पर लिखा है कि मैं नाशयण वत्त श्रीमाली नहीं हूं। उसने कहा - माहब आप नहीं हो। आप फौंड मत करो। नाशयण वत्त श्रीमाली तो आप सुबह ही गए हैं यहाँ से। वे महीने भर होटल में रहे, बड़ी भीड़ थी, ५१ रुपये में हाथ देखकर मूल, परिष्कृ, अलमाल बताते थे।

तो मैंने कहा - अप्छड़ा कोई जात नहीं मेरा। नाम नाशयण दस श्रीमाली मत लिख, किसानलाल लिख़। तो उसने कहा - तो यों बोलो ना। नाम क्यों छिपाते हो?

नव बोलने से कोई जाप लगता है। आ गए नाशयण वत्त श्रीमाली बन करके।

खिर होटल में उड़ार गए, वहाँ अमर उजाला गिरहता है अखबार। उसक समाचार मेरे चेहरे से परिचित नहीं थे, नाम से परिचित थे। मैं अपना विज्ञाप्न केना चाहता था। उनका नाम लोरीलाल अयोधाल था। मैंने उन्हें फोन किया कि मैं नाशयण वत्त श्रीमाली बोल रहा हूं, आप मुझसे मिलिए।

उन्होंने कहा - आप तो सुन्दर जाने वाले थे?

मैंने कहा - मैं कहीं नहीं गया हूं।

वे मिलने के लिए आए। बेहुल ही वे बोले - आप फौंड कब से करते हैं?

मैंने कहा - क्यों?

उन्होंने कहा - वे लोग यों को फोन करके दे मिलट में आपको जिरफतार करवा देकता है।

मैंने कहा - मैंने किसी की हत्या की, कोई चलत जाम किया तया?  
 उसके कहा - आप नारायण दत्त श्रीमान्ती हैं?  
 मैंने कहा - हूँ नारायण दत्त श्रीमाली।  
 उसके कहा - आप सुबह ही मैंने रथाना किया है उनको।  
 मैंने उनको दक्षिणत बात बताई कि असल में सी नारायण दत्त श्रीमाली हैं मैं। उसके  
 कहा - कोई ग्रामण है आपके पास।  
 मैंने कहा - कोई स्टार्टिफिलेट तो नहीं है मगर यह किसाव छपी है मेरी फोटो मिल  
 नहीं।

वह बोला - फोटो से उनका भी मिलता था। फोटो लगातो आपका ही है  
 मगर यह चबकर लगा है।

मैंने कहा - चबकर लह है कि दर्भग्राम से मैं एक विन लेह आ गया। पड़ने  
 आता तो उस नारायण दत्त श्रीमाली से भी बेट सो जातो। वो सुबह ही चले  
 गए में लोपला को पहुँचा। वही गडबड दृष्टि चरण।

तो उन्होंने कहा - वह तो वह प्राप्ति निकला। महोने घर में कम से कम  
 पाठ्य इनार क्रमा कर गया लोगा।

ऐसा बहुत बर मुआ भर जीवन में। इसलिए आप धिक्षा भी दृश्यम भिले तो  
 पहले कन्फर्म लर लें कि गुरुजो वही हैं या वो हैं बदले हुए गुरुजी हैं। कोई बर तो  
 मुझे अपने आप पर दाउट लोगा है कि मैं कही हूँ या नहीं हूँ। कर्मकि मध्ये तो गहरा  
 चलोगे गुरुदेव भिल जाने हैं।

ऐसे गुरु बहुन हैं। हूँ उनकी बात नहीं कर रहा। मैं कह रहा हूँ सदगुरुदेव।  
 विश्वामित्र कहते हैं कि जीवन में रातसे में आगर, सदगुरु भिल जाएं तो छोटे मक्कों हैं  
 कि तुम पाप से निकल सकने हों बिना पहचाने। मगर यहि पहचान लो तो उनके पाव  
 पकड़ लो। वह सदगुरु होंगे तो उन्हें पूजिता का ज्ञान होगा। नहीं होगा तो गुरु बन  
 सकता है, सदगुरु नहीं बन सकता।

गुरु पाल्याद दहल, दौड़ कर लकड़ा डै। गुरु लालच कर सकता है मगर सदगुरु  
 नहीं कर सकता। सदगुरु होजा और कवन लंबोट लगाए भी होगा तो भी राजा उपरके  
 परों में शुक्रग। उसके पाप बेशक देखा नहीं हो मगर बड़े से बड़ा या गुरुकृत उसके देखा  
 में शुक्र जाता है कर्मकि उसके पाप ज्ञान का निर्मा होती है। और छनिक्षार में या सदगुरा  
 में जो रहने वाले गुरु हैं उनको आप गाली भी न दें तो वे सुस्कुलारों।

विश्वामित्र ने बहुत गहरी बात कही है कि यहि सदगुरु भिल जाए और यहि तथन  
 उसके ग्रन्थ पकड़ लिए नो नो नुम्हे जीवन की दूसरी प्रणाली पर खड़ा कर देना। उस  
 दूसरी को छुड़ा देने जो अपान के ग्रन्थ जाते हैं। जो दूसरी प्रणाली होगी वह

सुत्त्वरोक्ति असृतं पापद



वह मृत्यु से अमृत्यु की ओर जाने वाली पराइडी कीरी। उस पराइडी का तुम्हें शान नहीं है क्योंकि इनका तुम्हारे पिताजी को भी जान या नहीं। उसलिए तुम्हें वे नहीं दे पाए। उनके जो कुछ जान था वही आपको दिया। उनको जान या सतान के ने पदा जल्नी चाहिए, हड्डी के से मारनी चाहिए, सूख के ने बोनना चाहिए, सिंजलट के से पेंची चाहिए। उनको जो कुछ आता या बचता है निखा दिया। वह जान उनको नहीं था इसलिए वह बता मा नहीं पाया।

जी आज नम प्रश्नन करो माँ से तुम्हारे दिना भी लीचंग यह लोधपुर जा कर छिंगइ जाएगा। वे कहेंगे - तू जोधपुर भान जा। न करना क्या है यह माला पहल कलके लागा दिन बेटा रहता हो? कुछ कमाल्या या शख्ता भरेगा?

ये नहीं कह रहे हैं क्योंकि वे अपनी पराइडी पर चल रहे हैं। मैं तुम्हें कह रहा हूँ कि यह पराइडी गलत है। यह पराइडी तुम्हें नीध अशान पढ़ायाएगी। आज से बीस पचास साल आप और बड़े जाकर तुम लेटेंगे जो जो कलन होगा वह भी दोष उतार लेगा। उसे भी साथ ले जाने देगा नहीं।

उम रास्ते पर चलते में कोई अनेक नहीं है। वह पर मी सद्गुरु मिल जाए तो समझ ना भग्य खुल गया। यह जामझो पहले और फिर उनके पाव पकड़ लो, बद्दल के पकड़ जो क्योंकि वह जापने पर छुड़ा सकता है। इसलिए छुड़ा सकता है क्योंकि वह बहुत माया करता है, बहुत सम्पूर्ण करता है, बहुत श्रमित करता है और अपने आपको दिखाता है। क्योंकि वह सबको न साध लेकर चल नहीं सकता।

और नम साड़े में पहुँचकर हो जिक्रमाल है ये गुरुजी हैं, इन्होंने दिखिया है फिर भी भीमार रहते हैं। वे कैसे गुरुजा हैं?

जामरों बूढ़े जित हमें अभिषेक करती है। वह तुम्हारा लाभ सद्गुरु से लुड़ने की कार्यिक करती और सद्गुरु से लाभ छुड़ा दिया तो फिर तुम्हारी पराइडी वहाँ है अम्बान जो ओर जाने वाली।

मैं नहीं बदल रहा हूँ, एक दूसरी पराइडी पर चला होने से यहि हमारे दात्त्र प्रमाण है तो हम भूत्यु से अमृत्यु भी आप वह सकते हैं। जास्त यह नहीं कहता कि मृत्यु की ओर नह।

सेकड़ों लोग मृत्यु से अमृत्यु की ओर बढ़ रहे हैं, और इस रास्ते पर एक पकड़ माल वह बालक बढ़ सकता है तो एक अस्त्री माल का युद्ध भी वह सकता है। इसके लिए उस कोई बाधक नहीं होती।

यह जो भूम्हारे में गुह शिष्य के संबंध है उन्हें आप चाह कर भी नहीं हो। सबसे और मैं प्रत्यक्ष जीवन में तुमसे मिलता हूँ, लेंगे कोई दो राय नहीं है। पूर्ण स्त्रीलह कला। इस्तास लगने वाला वर्षि जीवन लिखने जीवन को छेद लकड़ा है, उससे पिछले जीवन को भी उत्तर सकता है। मैं त्रिलकड़ा हूँ, और जब ऐसा लकड़ा हूँ तो नम्हें पहचान भी नहीं हूँ और मैं पकड़ एक शिष्य को बहुत जल्दी। एक पहचानना है। जिन्होंने जब तक हम तुम आपको नहीं बढ़ाना तो उतना ही गुह पहचानना है, जो उस जीवन में मैंने तुम्हे उप पराइडी पर बढ़ाया है। आप तुम हर आर हाथ छुड़ा लेने हो।

दूसरे लिङ्गन पर्वतीमां जीवन का येर पास नेत्रों नोखा है और मैं  
सोहँ जल नहीं कर रहा हूँ। अप्पा जीवने ने मेरा कई बारे नहीं है।

जल दूसरे लिङ्गन पर्वतीमां का जल्हा भोखा तो मेरे पास है। मैंने नम्हे  
जल बह जाकर लगाई है, लेकिन उस पराणी पर खटा करने के  
क्षमिता की है जोन इन शार तुम्हारे शवु तुम्हें पत़ड़कर दूसरी पत़ड़ही पर  
बढ़ देते हैं वे रात्रि कमी मा के रूप में आकर खेत छोने हैं, कमी बाप के  
बाद में आकर खेत छोने हैं कमी पति, कमी पुरु, कमी बामारी और कमी  
चूंच के रूप में। वे जनु भाकर लड़े जाने हैं और वे आकर मरा हाथ लुटा  
जाएं और आप उस रास्ते पर बढ़ जाएंगे। मैं आजान दूना, और देस हूँ कि  
नुम्ह जलन रखने पर बढ़ जूँ हो, उस रास्ते पर जीवन से कुछ पूर्णता नहीं  
जीन सकती, स्वरूपता नहीं मिल सकती, मैं जिस जलने पर चल रहा हूँ  
वह नीर देखा हुआ है। जिस रास्ते पर तुम चल रहे हो उस पर तुम्हार  
पूर्व चले और कुछ प्राप्त नहीं कर पाए।

और इसका जमाण यह है कि तुम्हें अपने द्वादा का नाम पता है परन्तु  
अपने परदादा का नाम पता नहीं। तो चर जो अपने परदावा का नाम  
कहा सकते हैं परन्तु एक भी ऐसा नहीं जो परदादा के जिता का नाम बता दे  
ता है यदि ही नहीं जबकि तुम्हारे तुर्जन हैं, कोई पराया आठानी नहीं। मननव  
पिछने वी साल पहले के व्याकिं जो भूल गए थे। तुम भी भूला दिए  
गए थे।

और अगर इसके तुम यही जावन समझते हो तो तुम सही गहरे पर  
हो, तो कुछ ऐसे पास आने की नकलत नहीं है। किर तुम अपना राधा  
जरबान करता, उससे कहि नहीं हो।

मगर जिस रास्ते पर मैं तुम्हें भला रखा हूँ वह समुद्रि का रास्ता भी है  
पूर्णता का रास्ता भी है, पश्चिमी का रास्ता भी है, श्रेष्ठता का भी रास्ता है।  
इसलिए श्रेष्ठता का रास्ता है न्योकि उम पर चल कर तुम हजार जाली  
लोगों को करत्याण कर मवते हो। पैरों से नहीं कर नकलते, धन से नहीं कर  
नकलते और तुम्हारे पास अगर वह जान और जिन्न नहीं है तो तुम नहीं कर  
नकलते।

जब शिरकदर ने लुटा भारत का तो एक हजार हाथियों पर हीर लदे थे  
माती और स्वर्ण मुद्रण उड़ा पर लहर थी और उनकी कलार थी। मगर  
उसके स्वनापनि मैल्युकम्य न कहा जा अगर आपने भन्नारी को नहीं देखा

ना भाल वध की नहीं देखा।

तो शिवबर ने कहा - अजहा सैन्यारी को पकड़ जर नाओ।

चाह हत प्राप्ति है बाल हठ, स्वी हठ, राजा हठ, सैन्यारी हत। राजा निश्चय कर ले कि ऐसा करना है तो करता ही है।

सैन्यारी भी पकड़ा ही नहीं करता विद्या की। और औरत भी एक बाल सोच ले कि उसकी जिज्ञा हरम जग्नी ही तो करके ही रहती है।

अकबर ने बीरबल से कहा - कौन-कौन सी हठ होती है?

बीरबल ने कहा - चाह हठ होती है - बाल हठ, स्वी हठ, सैन्यारी हठ और राजा हठ।

अकबर ने कहा - रवी हठ तो मैं जानता हूं, बेगम बहुन तंग करती है। सैन्यारी और राजा हठ भी समझ में आती है, मगर यह बाल हठ क्या होती है? बालक माने जो दे दो। इसमें हठ क्या जरूरी?

बीरबल ने कहा - वह तो हीक है मगर शास्त्रों में कहा है बाल हठ होती है।

तो अकबर ने कहा - तुम बाल हठ विद्या ओ। देख नेमे हैं क्या होती है बाल हठ।

दूसरे दिन बीरबल ने एक हठ बाल के बालक को दरबार में बिठा दिया।

अकबर ने कहा - बेटे तुझे क्या चाहिए?

उस बच्चे ने कहा - बोतल मालिया।

अकबर ने बोतल मालिया, उसको दे दी।

अकबर ने कहा - बस, और क्या चाहिए।

बालक बोला - हाथी चाहिए।

अकबर ने कहा - दरबार में हाथी किसे आएगा?

बालक बोला - नहीं, नहीं मुझे हाथी चाहिए।

अकबर ने कहा - कोई बाल नहीं हाथी ले जाए।

महाबल हाथी लेकर आया।

अकबर ने फिर कहा - बस, और कुछ।

तो बालक बोला - इस हाथी को बालल में डालो।

अकबर बोला - अरे बालल में हाथी किसे जाएगा।

बालक ने कहा - नहीं बोतल में हाथी डालो।

जब वह रोने लगा।

अकबर ने कहा - मूर्ख यह नहीं हो सकता। यह और नोर से रानि लग।

अकबर ने बहुन समझाया। मगर बालक नहीं गाना। हास्कर अकबर ने कहा - बीरबल तुम राही कह रही थी।

तुम मो हठ के बहुन पकड़े हो। मैं कितना भी समझाऊ कि वह शस्त्रा जलत है, मैं तुम्हें पश्चीम जीवन से आवाज दे रहा हूं मगर तुम

जीवन पर बहो रखते हो।

और तुम मनो या न मनो नम्भार मेरे प्राणों के संबंध है, इसीलिए चाहे तुम आपना रहो, दिल्ली रहो या बाबई तुम्हें दोढ़ कर न्ये पाल आपने ही पहनते हैं। वह रहने हो। भी दूम देरे बिना रह नहीं सकते। तुम्हें मनी याद आती है, एक फूफकालीट होती है, एक नड़ाक, एक छेंडी-

होती है। तुम्हारे योगी में बोलियो तो है, कभी धन की नकलीक आती है, कभी व्यापार की नकलीक आती होगी, कभी पर्णी चंगा अपहर्णी होती है। यह स्वयमविक है। मगर किसी तुम्ह मन में मुँह हटा नहीं सकते और मन से शमलिए नहीं हटा सकते क्योंकि तुम्हारे मरे जोड़ इनी जीवन के संबंध नहीं हैं। तुम्हारे मेरे कई जन्मों के संबंध हैं और जो मैं तुम्हें आज समझा रहा हूँ वही मिलते जीवन में मौजूद होते हैं।

मगर जीवन तुम घर वापस जाते हो तो मिला बहाने है तुम्हें क्या मिला बहाने बना? क्या लेकर आया?

यह कोई ऐसा फ़ोटो दिखाये नहीं है कि दिखाएं यह लाया। अब तुम क्या बताओगे कि यह ऐसे पाप जान है। मान का कोई जन्म तो होता नहीं। वे उस जीव को जब भी समझ सकते क्योंकि उनका पापहर्णी जातग है। आप उनको कल्पित भी करना आवश्यों तो नहीं कर पाएंगे। वे कल्पणा तुम्हारी दिखाना चाहते होंगे तो याहू हैं, गुरु के पास जाकर तेरी भुक्ति नहीं हो जाए है। तुम्हारा पर बेटे तो पहुँच दो दो पैसे कमाकर चलना।

और तुम बेटे जाओगे तो किस तुम्हारे रहना वही है अपशान का। किस मेरी आवाज, मेरा चीखना, चिल्लना बेकार हो जाएगा। किस तुम्ह मरेंगे, दोबारा जन्म लेकर भटकने भटकने मेरे पास ही आओगे। ईरिद्वारा, मधुरा मटक कर कहीं चैन रही मिलेगा और तुम किस मेरे पास जाओगे। मैं किस तुम्हें बताऊँगा कि तुम गलत रस्ते पर चल रहे हो।

यह बार-बार का इंट्राट स्वर्म होता आहिए अब। यह सब हल बार नहीं चल सकता। इस बार ही जीवन में आर-पार होना आहिए।

और मैं तुम्हें उस अमृत के रास्ते पर चला याहू हूँ। तुम जो साल तो मेरे साथ चल बार देखो। और दो साल बाद तुम्हें नवे यथा छान डे, झूठ हो तो छोड़ देना। यही जिन्नती साथ नहीं चलता, वा साल में तुम्हें कुछ अनुभव हो तो तुम भल छोड़ो।

मैं तुम्हारे हर दण साथ रहता हूँ और तुम्हारे मेरे प्राणों के संबंध हैं, शरीर के संबंध नहीं हैं। तुम मेरे शरीर से न पैदा हुए हो, न मैं तुम्हारे शरीर से कोई संबंध रखता हूँ। न मैं तुम्हारा भाई हूँ, न मिला हूँ, न संबंध हूँ, न बेटा हूँ। मगर मैं तुम्हारा गुरु हूँ यह तुम नकार नहीं सकते।

इस जीवन की पगड़ी घर में भी तुम्हारी तरह गुहर्य हूँ और जो तुम्हारे गुहर्य में समझाए है वे मेरे भी हैं। और तुम्हारे तो शावर त्रुट होंगे पचास पच्चीस मेरे तो कम से कम पचास हजार हैं जो जालाचनाएं करते हैं, बुरा भना करते हैं। मगर शबुओं से घबराने से कुछ होगा नहीं। होगा तब जब तुम उस पगड़ी पर बढ़ाओगे मैं तुम्हें दिखा रखा हूँ।

उस पगड़ी पर बढ़ कर ही तुम एक सामान्य मनुष्य या नर से पुरुष बन सकते हो। शंकराचार्य से पूछ उनके शिष्य पाद पद्मा ने कि जीवन का बोक्तु ध्येय ज्ञान है, ज्ञान क्या है?

और उन्होंने कहा - सामान्य जब जन्म लेता है तो वह एक सामान्य नर होता है। और उसे नर कहते हैं जो अपने समान एक और नर उत्पन्न कर दे। वह उधोगामी व्यक्तित्व होता है। वह चाहे तो साधना द्वारा, गुरु कृपा द्वारा उधोगामी बन सकता है।

उधोगामी बनने का तर्फ है पूर्ण बनने की किशा। नियमें पूर्ण पौरुष बन माहस और क्षमा ही वह पूर्ण है, बहुत बड़ा जीव के मनुष्य में और पूर्ण में, वर्स में और वृक्ष में।

अतएव यह है कि मनुष्य-मरुता है तो उसे अधिकर नहीं होता कि कोई विशेष गम चुने।

उमर गांधी मनुष्य लोक से ऊपर और भी अन्य लोक हैं। जेपा कि उमर गांधी सब में कहा है

पर्वत: नवा तत्सवितुरवरेण्यं ...

भूलोक, भूव, लोक, स्थः लोक, भूलोक, जन लोक, तप लोक, सन्य लोक ये सात लोक हैं और मनुष्य एक लोक में दूसरे, दूसरे में तीसरे, तीसरे ने चौथे और वही सातवें लोक में पहुँच सकता है। उसी अपनी सब जो समझते हैं। उमरने हैं उमस्को केवल रखने की उमरत नहीं है, पर्वत लाख के प्रश्नकरण करने से कुछ नहीं ही सकता।

उमर गांधी बाल विज्ञ तृष्णि है तो जाप देखेंगे कि उमरने के बात जिकड़ी प्राणी शिवराम करने रहते हैं। अपद मनुष्य तो मारने में १०० करोड़ हीं हैं मरने वे वज्र अन्य जीव हैं, पर्वती हैं। और वे निरन् उम-नवज में हैं कि वो ही अपने जिल जान भौंर उम समय जो भी नहीं नेपाल होना है जो भी नहीं गांधी होना है उमसे वह जन्म ले नेता है। उमके दाव में धरन करने की किंवा नहीं है। वह पढ़े कि न विज्ञप नर्म में जन्म ले नो नर के जाप वह किया नहीं है।

और उह संघोग है कि गरीब के पर में जन्म ले ले तो अपैर के पर जन्म ले ले, श्रेष्ठ घर में जन्म ले ले, शाही के घर जन्म में ले ये बहीं और जन्म ले ले। वह एक चाहर है, एक झल है। उम समय वह प्राणी बहों से गुजर रहा था, नर्म होने के उम समय किया जो रही थी और वह उसमें प्रवेश वह जाय।

मध्य जब नर आपनी साधना के डार पुरुष को जान है तो मृत्यु तो उमर्की भी होती ही। देख कुर्स फट आजा तो मैं उम छलनुआ हूँ। और भी जनर स्वरूपा में होना है तो समाप्त होना ही है। यह तो योग की एक बहुत जल्द पराक्रान्ति है कि उम शरीर को एक नया जीवन दें। आपने सांप को देखा होगा कि वह विलक्षण पुराना के चुनी उतार करा है और ताजी चमड़ी उस पर आ जानी है। और आपकी भी चमड़ी ढूँगने वा तम्भ दिन आप नाजी चमड़ी आ जाएगी। उस चमड़ी के नीचे चमड़ी है। अब आपमें वह क्षमता नहीं कि आप उपर वाली चमड़ी का उतार कर देकर स्टेप्ले

योग के द्वारा जर्जर भावा की बदला जा सकता है और आपसे चिर योवलमय बना जा सकता है। मैंगी बात स्टेप्ले लग जानी है और जहा तुम्हारी बृद्धि नहीं पहुँचती वह सब तुम्हारे लिए अचूप ही बहुत है। तूम उतनी ही बात पर विश्वास करोगे जहाँ तुम्हारी बृद्धि पहुँचती है।

उमर आज दाढ़ी गिर होगी मैंगी और मैं उसे कहना कि मनुष्य चांद पर पहुँच गया हो वह बहती तु परागत है। उग्नवान के डार आप योगी ही रख सकते हैं।

आज मैं आधि हि-दुन्नाल मन रहा है कि आपनीका का एक कुंडल है, चंद्रमा भगवन पर पांव कीले रख रखने हैं। आपांक ऊपर की बृद्धि वहाँ पहुँच नहीं पा रही है और हम पहुँचे हैं तो हम कहते हैं कि तेस पर लोक है वैसे चंद्र लोक भी है। आपनी चंद्र लोक पर भी पहुँच सकता है।

उन्होंने वायुवान के दर यापनी, योर्ही अपनी माध्यमा के द्वारा पहुँच सकता है। योर्ही आपने शरीर की भूमि जग्य, परंपर सकता है। गगर आप विश्वास करोगे ही नहीं क्योंकि आपकी बृद्धि वही तक जहाँ पहुँचती है। एक उपर्युक्त एक योगी जब तक आप किसी भी लोक में रह सकता है। उस नाम वोडा नाम, एचार्ड नाम भी रह उम गर्भ का बाहर वह जान ले करना रहता है जिसमें जन्म लेकर वह अद्वितीय बन सके।

प्रति... याम को जन्म लेने के लिए २५००० वर्ष तक इन्होंना पढ़ा देवकी के गाम का और २५०० वर्ष तक वे उम जागी लोक में रहे।

उम ग्रन्थ: नाम, म. २३, चौथे द्वयः लोक में रहे, चौथे जन, ल४ वा भूमि लोक में रहे।

उन्हें यह समझता ही कि मैं कौन से गर्भ में जन्म लूँ। और कृष्ण से हाँक २१०० वर्ष ब्रह्म कुद्र के रूप में जन्म जिया। जाप दीर्घा। २१०० वर्ष का हितिहास चल रहा है। ब्रगवर द्वारा हमार वर्षों के बाद इन्‌के नाम परिवर्तन आता है।

बिनकुल सही गर्भ बुनें से सही व्यक्तित्व बन सकता है, यह नर के हाथ में वर्षों द गर्भ जन्मना, तमहार हाथ में जहो है। मृत्यु के बाद में तुम्हें जो भी गर्भ मिल जाएगा उसमें जन्म लेना पड़ेगा। हस्तिएं तुम्हें पिछला जन्म यहाँ नहीं जन्मना क्योंकि तुम्हें पता ही नहीं कि तुम्हें कौन सा गर्भ चुना। वह तमहार हाथ में ही नहीं है।

जन्म पूर्ण के हाथ में देना है कि यह मन चाह जर्म को चुने और वह जब तक चाह रह सकता है प्रधान समय में वह यज्ञी अन्य लोकों में भी। अगले चित्ताश्रम में जाकर रहना चाहता है तो उह सकता है और यह यहाँ जन्म होने चाह तो वहाँ रह सकता है।

जीव जन के द्वारा प्रथा पूर्ण पूर्ण बन सकता है। तुमने तप अभ्यास करा नहीं और तुमने तांत्रिकों को भी नहीं जहाँ। तुमने धूतनाथ, प्रेतनाथ, पिण्डाचनाथ जौ देखे मगर तांत्रिक नहीं कर्ये जो कि जीत है बहुत तेज़ी से जन्म जन्मनावन, पुनर्निवारणन वाले और उनके सामने उच्चकोटि की शक्तियाँ भी हाथ बांधे जाती हैं। वहाँ वह उद्धव हो, अग्नि सा, वरुण सा, यम ही या मृत्यु ही। मृत्यु की हिन्मत नहीं होती कि अपहा मर दे दूर पर। ऐसी तांत्रिक जिया है।

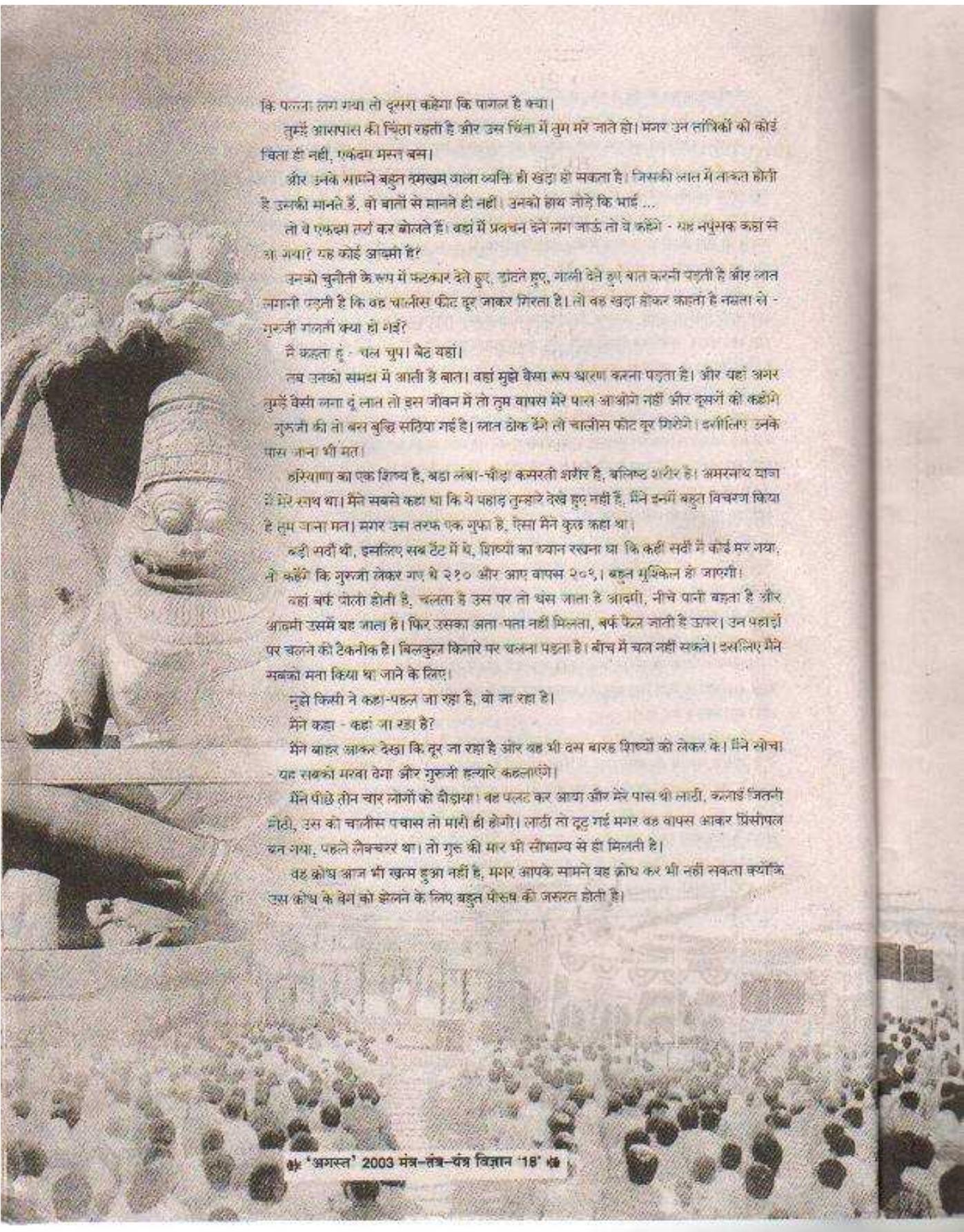
तुम कभी काम लेता नहीं, बुद्ध वर्ष पहले वहाँ लानिक सम्मेलन था। भ्राता में उसमें जन्म था। वह कह विचित्र तांत्रिक थे। तुम्हारा कभी सीधामाय बने मेरे साथ चलने का तांत्रिक सम्मेलन हो। अपने तुमने जन्मता हो वहाँ चलकर देखने की। दोनों ही जाते हैं। बिंबा प्रारब्ध के बहु साथ ही नहीं सकता।

मैं पहले याताएं करवाता था, बदैन ये ले गया, जन्मनाथ ले जय, विष्णु जो। उन्हें वहाँ ले में नहीं गया तो अप सी नहीं जा पाए, और गंगे नाथ दो सी जाने जाते ही हैं। अब मैं नहीं जाता तो तम भी नहीं जाते क्योंकि मैं अपनी प्राण शक्ति से भी उपकर तुम लोगों को ने जाता था। तुम जो बिनिदार नक आकर्ते नहीं जा पाते और मिठ्ठों के अपनाए, अंगोंशों और गंगोंको में भी जाएं गोमुख नह ले गया। उसस्ते साल की बृद्धा जो भी ने गया। अंगोंकी जाना तो कठिन है, गोमुख नह और भी कठिन है। आठ साल का बालक में था जब ने और नाउ शाल की बृद्धा भी थी और जहीं विर्यों का अहित नहीं हुआ। वह कि आज भी गीमुख तक जाना बहुत ही दुष्कर होता है।

प्रारब्ध दे उनके ही उन्हींने देखा। नहीं प्रारब्ध है तुम्हार तो तुम कहोगे गीमुख नहीं होता कुछ, उमने बृद्धा नहीं तो किस जिए जान लें। अब तुम्हारे तज में नहीं पहुँच सकता। तुम कहते हो नहीं होता तो मन लेता है नहीं जाता।

मेरे कहने का तात्पर्य है कि उन तांत्रिकों में आदिनीय शमनाओं हैं और उस सम्मेलन में हिन्दूलय के बैं तांत्रिक आए थे जो अपने आप में स्विद्ध आत्माये हैं। बहुत हास्तावन है। विचित्र वेष धारण करते हैं, यह उनकी प्रथा मस्ती है। वे इस बात की परवाह नहीं करते कि लग क्या कहोगे। वे जोगे हैं तो बिनकुल नहों हैं, नर मुण्ड पल्ले हुए हैं तो नर मुण्ड पहने हैं, मरम लगाई है तो मरम लगाई है और बीच आपसे बीच आपसे पहने हैं। ऊह! इस बात की जिता नहीं कि लोग क्या कहेंगे और आप क्या कहेंगे। आप इन्होंनिए हुन्हों हैं।

तब ही कहना है कि मस्तों के साथ इसमें हुए आरती गांडों, तो तुम जूमते ना हो, मरम यह फिला रहती है कि दूसरे का हाथ या जलना नहीं नह। तुम याचते हो



कि पल्लव लग गया तो दसरा कहेंगा कि पानल है क्या।

तम्हें आरपाल की चिरा रहती है और उस चिरा में तुम मरे जाने हो। मगर उन तांत्रिकों को कोई बिला हो नहीं, एकदम भ्रम बस।

और उनके माध्यमे बहुत रम्यम गला व्यक्ति ही खुद ही भवता है। जिसकी लाल में नक्श छोटी है उनकी मानस है, वो बालों से मानने ही नहीं। उनको हाथ जाने कि भाई ...

तो वे एकदम तर्ह कर बोलते हैं। बहा में प्रबचन देने जग जाऊ तो वे कहेंगे - यह नपुणक कहा से जो जया? यह कोइ आज्ञा है?

उन्होंने चुनीनी के स्वप्न में कहकार देने सुए, दौड़ते हुए, नामी देने द्वा चात करनी पड़ती है और लाल जगनी पड़ती है कि वह चालीस पीढ़ दूर जाकर गिरता है। तो वह खड़ा बैठकर कहता है नहाना से - मुझनी गलानी क्या हो नहीं।

दै कहता है - चल चूपा बैठ यहाँ।

तब उनको समझा में आसी है बात। वहाँ मुझे कैसा स्वप्न आरण करना पड़ता है। और यही अपर तुम्हें वैष्णी लगा दू लाल तो इस जीवन में तो तुम बापस ऐसे पास आओगे नहीं और तुम्हें को कहेंगे

गुरुजी की नो बन बुद्धि समिधा नहीं है। लाल ढोक देंगे तो चालीस पीढ़ दूर गिरेंगे। इन्हींलिए उनके पास जान भी मत।

हरियाणा का एक डिल्ली है, बड़ा लंबा-चोड़ कमरती शरीर है, बलिष्ठ धरीर है। अमरमाथ याज देने पर रात्र था। मैंने भवने कहा था कि ये पहाड़ तुम्हारे देख हुए नहीं हैं, मैंने उनमें बहुत विचरण किया है तुम जाना मत। मगर उस तरफ एक गुफा है, इसमें कुत्त कहा था।

बड़ी सरी थी, इन्हींलिए सब टैट में थे, शिष्यों का श्याम रखना था कि कहीं सरी में कहूँ मर जया, मैं कहेंगे कि गुरुजी लेकर जल थे २१० और आए बापस २०५, बहुत गुप्तिकान हो जाएगी।

वहाँ बहुं याली होती है, चलता है उस पर तो थम जाता है आदमी, नीचे पानी बहता है और आदमी उसमें वह जाता है। पिर उसका आता-पता नहीं भिजता, वहै फैल जाती है उपर। उन पहाड़ों पर चलने की टेक्नीक है। बिलकुल फिरारे-पर यानना पड़ता है। बीच में चल नहीं सकते। इन्हींलिए मैंने भवनों मता किया था जाने के लिए।

नुसे किसी ने कहा-पहल जा रहा है, वो जा रहा है।

मैंने कहा - कहाँ जा रहा है?

मैंने बाहर लाकूर देखा कि नूर जा रहा है और वह भी दूस बारह शिष्यों को लेकर के। मैंने सोचा यह सबको मरवा देगा और गुरुजी हम्मारे कहलाएंगे।

मैंने पीछे तीन चार लालों को दीड़ाया। वह पलट बर आया और मैं पास थी लहरी, जलाई जितनी नहीं, उस को चालीस पाचस तो माली ही हो जो। लाठी तो दृढ़ गई मगर वह बापस आकर प्रिसापल चल गया, पहले लैबचरर था। तो गुरु की मर भी सोभान्य से ही मिलती है।

वह क्षोध आज भी खूब हुआ नहीं है, मगर आपके सामने वह क्रोध कर भी नहीं सकता क्योंकि उस क्रोध के बेग को झेलने के लिए बहुत पैसेव की जसरत होती है।

मैं कुछ देन पहले सोच रहा था कि जब मेरे उम्र तात्त्विक सम्मेलन में था तो मेरा कवा। अब यह, कवा आज, कवा छोड़ दा और यहाँ गृहस्थ शिष्यों के साथ किस हँसी से बोलना पढ़ रहा है। यह समय की बात है।

तात्त्विक सम्मेलन तो शोले ही रहते हैं और संवेदन बने और तुम चल सको तो तुम देखोगे कि युवक जिसको कहते हैं। तब नुम्हें शर्म आएँगे कि क्या हम पुरुष हैं। वे उन राजियों को अपना सम्भव जान कर लेते हैं। उनके सामने सब शक्तियाँ हैं जो घरे घरे खड़ी कौपीनी रहती हैं। न पृथ्वी की दिशान कोई है उन पर आपका भारती की। इन्द्र, यम, कुबेर जादू बोधे खड़े रहते हैं। वे तात्त्विक उनकी बातें हैं कि यह सामान लाकर देना है तो उन्हें लाना ही पढ़ता है और उस जगत में मो लखनाल के गदा पर भोले हैं और राजाओं और देवों हैं गद्धारन की। मुबह वापस राजाओं रखना कर देते हैं अपने मर्दों से और खाले में दृढ़ तरह की संक्षिप्त खाते हैं, २० लक्ष की मिठुरव्यु खाते हैं तो तुम कल्पना भी नहीं कर सकते। जगत में भी वे बानंद और मरसी के साथ रहते हैं फिरोंक उनके पास तात्त्विक क्षमता होती है।

तुम्हारे लिए लाख दो लाख इवान करना बहुत बड़ी बात होती है। मैं अपनाता हूँ यह कुछ घटना ही नहीं है। अगर जिसी ने राजायनिक विद्या शीर्षी हो, अगर मैं ताके से सोना बना सकता हूँ तो तुम मुझे बोगे भी क्या? हजार रुपये देकर तुम खुश हो जाओगे कि गुरुजी देखिए, क्या मैंने विद्या है।

ताथे का भाव है ८० रुपये किलो, और सामने का भाव है ५ लाख रुपये किलो, ८० रुपये से बांध लाख करनकर्ता ही रखते हैं तो तुम विद्या मुझे क्या देंगे। तुम्हें देने की हिमात नहीं है। मैं तुम्हे वे सकता हूँ और बहुत कुछ दे सकता हूँ।

मैं केवल प्रबन्धन करने वाला या प्रबन्धन करना वाला ही जुरु नहीं हूँ मैं गृहस्थ जीवन की समस्याओं को मूलकाने वाला भी हूँ, राजायनिक विद्या में उन्हाँ ही हूँ जितना तंत्र है, मंत्र में, ज्ञान में, चेतना में। प्रत्येक जीवन के लेने में उन्हीं ही दृष्टिना रखता हूँ और वे कात्रों के पवित्र सामने आएं तो उनके लिए मौ मैं उन्हाँ ही तैयार हूँ।

उन्होंने एक ही चोंड पकड़ रखी है और जिसी पार कर रहे हैं। जीवन में बहुमुखी प्रतिभा होनी चाहिए। तभी व्यक्ति पूरब की सकता है।

राम के बाद केवल कृष्ण मेरे वह नर्म चुनने की क्षमता आ रही। उसके बाद कुछ मेरा आ रहका और वह एक नामूली दा व्यक्ति, राज परिवार की छोड़ करके उस जगह पहुंचा कि आज यसार के रूप वेशों में बुद्ध धर्म फैला दूआ है। एक व्यक्ति ही तो था और वह भी यही बात कह रहा था - आनंद मुझे २०० शिष्य चाहिए। २०० शिष्य तो तो मैं बहुत कुछ कर बैठता। दुर्भाग्य है कि मैं ३०० शिष्य आप नहीं कर पाया।

वह गुरु के सामने एक बहुत बड़ी उर्ध्वटना होती है। यह आकस्मीत रहता है। जो समर्पित शिष्य उसे

जिल्हे चालि। जब वे नहीं होने दें तब उसे आपने आरक्ष कर रखा है। आप दोनों से गुरु-गुरु कहे और प्रव द्वारे आकर्ष के, उसा प्रखेड़ मुझे नहीं चालिए। मैंगे कोई इच्छा नहीं कि जाप चरणों को धोकर पी जो।

तोक उ आपके दर्श है कि अब चरण स्थान करे और ऐ भारीवाय दृ शंगर देखा आइयाह दै कि आपमे कुछ प्रखुरना और तेजस्विना ज्ञान, तद स्थम आए, निझिगिरान बाली बन नहीं हो, चुनेतिये कली अब सो, साथने खुद होकर बात करने की दामता दो, चाँदगामने चाल गोला हो, संन्यास हो, लोक था, जाए नेत्रां जो दी चाहे संग्राम हो। जीपत ताकन, फूमत जे साथ दीज, गोली भक्तों न आए लगे, न दुसे, धूक-धूक करती रहती है वह पटे। तथा फायदा।

तुम ऐसी जिनगा भी रहे हो। कभी जीर्ण को मना रहे हो, कभी बड़ीदी को मना रहे हो, कभी अफवाह के आगे हाथ लोड रहे हो कि नकारी है, यहूं तो क्या?

तामे ताक्ष हो ओर आखु मे आंख दालकर कह स्को-द्युमें देनी है, मर हाल मे देनी है। जिवा रहने के ना।

बहु भोजया यह हो बहु भवन भस्यो। बोधवर देखो वह विग्राह वया लेख। बुद्धार, भावरा से लिजाल नहीं सकता, न स्वेच्छ करेगा यो वो दीन साल धर बहना, सरो तरस्वार, एक वाय पिल आएओ।

दुनिये कला शब्द होना चाहिए और मैं जब तुम्हे दीन, हीन, जनन देखता हूं तो वो भला है कि कहा फैसल गया हूं अपने बोच मे। मैं तुम्हे शेर बनाने की कोशिश कर रहा हूं।

इस तुम हो गार नीददो के बीच रह रह हो और मैं तुम्हे बापद्यु मरना दिल्ला नहीं हूं। तुम्हे जनन नहीं है कि तुम शेर हो उपर्युक्त विद्विता रख दो, साथ नीड नहीं दो और जिस दिन तुम्हे एकलाल हो जाएगा कि तुम शेर हो, उन गुरु के शिष्य हो जिसने प्रखलना के राक्षन उपर्युक्त विद्विता न प्रशान्तिर्वाच न पवराया। मैंको फूर भवन मे बेचरगा जलता ही हूं। उन पंडितों को न्याई मे जाना है और उनको न पटकरना ही है और सर्वाधिकों को भी जाकर लाते भावता हूं।

ये एकल नुकता स्वप्न परिवर्तनी की एक किया है। जिसमे तुम आगे न जरुर पुरुष बन देदो आर अंडताम नहीं चुन सको।

कुरु के बाद चब २५०० वर्ष आगे हो और बापस लोड छिकि आकर नहीं बहु भवना कि तुम कहा हो। यह भवनग जात है कि बुद्ध की

जीजा न पहुचाना नहीं था, कृष्ण की जो नहीं पहुचाना था। लोग कहते थे कह बहु जापत है, शास्वान न दे, जीपियों  
का दोष भगवत है। लेकिन उसने उनकी गरवाओं

नहीं की। जो मद लेते हैं उसको गरिमा  
गिलती है पर वे चिना नहीं करते।

जो भी सही बात का ध्यान रखना मेरे देश-देश नुस्खे अगले १०० साल तक गिरेगा नहीं और नुस्खे बढ़नां परमें और गति में बढ़ावान चाहोगे, अपनीला तो सुझे जश्वर होगा, अब कभी पीड़ियां तुम्हें थवक होंगी जश्वर।

जो भी अगले सुझे पहचान लिया तो वह रखना हर क्षण, हर घण्टे में तुम्हारे साथ है - २४ घण्टे। और कभी भी, किसी भी क्षण

तुम भीठे बुद्धक देखोगे तो मैं सुझे नियान खड़े बिल्लगा, यह गरसदी है।  
तुम्हारे जीवन का प्रत्येक क्षण नुस्खा में और समाज में दीनदा चाहिए, और  
नुस्खा में भी दीनदा चाहिए। जीवन के साथ। नुस्खे पक तो आधना में नफलता प्राप्त  
करने वाले जोका नुस्खा ऐसा हो जाएगा, मगर उसके लिए तोकल आवाह, जिसका  
चाहिए, जो चाहिए, सोचने में चिनारी भाँटिए। ऐसी कई साधनाएँ हैं जो जोध नुस्खा में  
को जाती हैं, आख बिल्लकर सब जप किया जाता है। तुम्हारा नीकन इनका  
चाहिए।

जिस नुस्खा जन कर के बढ़ाउ रखी जूने वाले आपना जाप कर पाओगे, फिर आपने  
कभी पीड़िया नुस्खे पक गर्व कर पाएंगे क्योंकि आपने वाली पीढ़ी विजय की नहीं जन जी  
होंगे, सामने की होंगी ब्रह्म तेरिया हू, ५० साल तेरे में सुषुप्ति बिनाहो  
नहीं, मैं जो बह रहा है विजय होता नहीं।

जब मैं शिखों से मिलता हू, तो उनसे खड़ा ब्यार महसूस करता हू ऐसा नहीं महसूस करता,  
कि नुस्खा हो। मगर बुझ जन का देखते हैं कि तुम पहचान नहीं पा रहे हो।

होना को मात्र साकर के बहन नुस्खे बोकर के, स्मारक बोकर के और परिशान बोकर के और  
अपने दिन को ठेव बोकर, जीता मैं कलना पढ़ा - अबून ह भूमि पहचान। मैं पेड़ों में पौधों हू, नीति  
में गंगा हू, पहाड़ों में बिनालय हू, देवता जो मैं बदल हू, नुस्खे पहचान और जिस दिन पहचान लेना है।  
ग्रामांशल युक्त ज्ञान किसी भी एक जी नीत जापा। न यह जान आधना में चोटी पहना कर एक ज्ञानी बना  
हू, तुम्हें मैं जो भन आमल नुस्खे भेजा बास्तिक स्वरूप पहचान नहीं दे देता हू जापा। और तुम पहुँच  
हो जाएगा।

जीता पहुँच नहीं वही उत्तमा सार है, भवें, वस्त्र, ज्ञानदेव आत्मव्याप में यही तो है कि मैं यह हू, यह हू। क्या  
कृष्ण पहुँच हो? ज्ञा वह धर्म हिन्दु रहा हो?

वह धर्म नहीं दिया रहा था। पहले अज्ञान थे सातवे अध्यात्म तक उपने अनुग्रह के अधिकार विं  
तुम बैन हो, तुम्हें विनाय पाने चाही हो, कायरों की नस्त मत मर।

वह धर्म नहीं पा रहा था तो कृष्ण ने कहा नुस्खे पहचान क्योंकि इन गवकों में मार चला हू, व  
दीमा, झाँप, दोप, अन्तरामा इनकी गाप कर चुका हू, तुम्हें करन निमित बनना है।

आर नी भी नहीं जल-जल हिन्दि नुस्खे नहीं मैं हू अब तुम्हें साधना मैं लकड़ा लिल्लनी ही है, तुम नी अप  
निमित बनने। अंडेव धनुष ने नहीं राना पड़ा, पर सालों लो मैं हू, रक्ष मैं चला जाना। नहीं तुम महासान्द के  
फुल में जलन खड़ा कर देना जीता, जीरव खड़ा है। अंडेव तुम्हारा देजा नहीं मार तुम्हें समाने खड़ा होना पड़ा, जीना  
तुम्हें है। विजय के माना बुझे जले में पहनाई है, मेरे जले में पहनाने की जलत मही है। यह अवश्यक है।

कृष्ण भी बार बार यही कह रहा है और मैं पक यही कह रहा हू, मैं आगो दुःखा कृष्ण मैं नहीं अप यहा हू, और  
कह भी रक्ष हु जो गला नहीं कर रहा यह भी नुस्ख बना हू।



जूँगा को पहचाना दी नहीं था। उसे तीन अध्याय तक समझाना पड़ा कि अंतर्जीवन से मुझे पहचान लेगा तो हम युद्ध ने जीत जाएगा। बुद्ध को मो आर-बार वह समझाना पड़ा २५०० वर्ष बाद और युद्ध के २५०० वर्ष बाद मैं वापस तुम्हें समझा रहा हूँ। बता रहा हूँ कि तुम्हारा बड़ी माझे हो, कभी तुम बुद्धि को परे रख कर पहचान सको और जिस दिन पुहचान लोगे उस दिन तुम अपने जो नैण्वाचित अनुभव कर सकोगे।

यह जो तुम्हारा सांसारिक युद्ध है, समाज से युद्ध है, अभियों का युद्ध है, उसमें तुम खड़े हो और मैं साथ खड़ा हूँ। मगर लड़ाना तुम्हें है। तुम्हें केवल खड़ा होना है, कहीं बोई चिन्ह नहीं करना है, खड़े होकर विजय भी को प्राप्त करना है। ऐसे तो जान के साथ मरो जिससे हजारी कलोंडी की आँखों से आसू टपके जब मरो तुम। तब तुम हारी जिंदगी की विशेषता है।

ऐसा ही सकता है, मगर हो सकता है तुम्हारे द्वारा जब तुम उस प्रगटिहीं पर बढ़ो जो मैं विद्या रहा हूँ। और मेरे घर के वरशाने खुले हैं २५ घंटे, ठक-ठक करोगे, मैं सौंधा तुमसे मिलने को तैयार हूँ। तुम ठक-ठक करो ही नहीं दिल के दरवाजे पर धस्तक तो हो नहीं, आवजन भी नहीं दो तो मेरा दोष नहीं है।

मैंने तुम्हें कहूँ जन्मी ने आवजन दी है, तुम्हें फटकारा है, आज भी फटकार ही रहा हूँ, आपनूसी तुम्हारी नहीं कर रहा हूँ। आज मो फटकार के समझा रहा हूँ कि हकीकत में तुम कौन हो। तुम एक क्षमता पिंड करो कि उस अपेक्षा को पहचानो। तुम सिर्फ धोती कुर्ना पहने हुए व्यक्ति को मत देखो, उसके अंदर जो कृष्ण है वहाँ तक पहुँचने की ज़करत पड़ेगी और वहाँ तक पहुँचोगे तो मुझसे अलग हो हो नहीं सकते। पिर समाज को बोई व्यक्ति खोच कर तुम्हें मुझसे भलग हो हो नहीं कर सकता क्योंकि रमझी को बोई आज तक प्राणों से अनेक नहीं कर सका।

और समय बहुत कम है। हो सकता है तुम्हारे पास बहुत समय है और मैं कह रहा हूँ समय कम है तो उसके पांछे एक जरूर है, चिन्ह है। जब तुम मध्य नहीं पहचानोगे तो पिर तुम हींगियों के चुंगल में फैस जाओगे। वे तुम्हें कृष्ण जान चेताना नहीं दे सकेंगे।

तुम उससे पूछोगे कि ये साधना क्या है तो ये कहेंगे - बच्चे तुम  
नहीं समझ सकते, ये अद्वितीयों की बातें हैं। ये तुम्हें हरा कर  
किए जाएँ।

ऐसा इस बेग में हुआ है। आर-आर बुद्ध, महावीर, कृष्ण ऐसा नहीं  
हुआ है, कथो-कथी पैदा होते हैं और उनके समय में लोगों ने उन्हे  
पढ़चाना नहीं, शालियों दीं, तिरलकार दिया, भगवन् दुःख को लाठियों  
से किया, महावीर के कानों में जीनें ढाकीं और इन्हा मसोड की क्रौंच पर  
दब दिया। समाज ने ऐसा ही किया। उन्होंने नहीं पहचाना उनको। भरने  
के कारण उनके स्मारक बनाए जाते हैं।

वह सब कह कर भै मैं घमड़ नहीं कर रहा हूँ। मैं आपका परिचय दे  
रहा हूँ। इसलिए कि शायद तुम्हारे अंदर वह चिनारी पैदा हो जाए,  
जब तुम अपने आपको जहचान सको। और जब तुम अपने आपको  
पहचानोगे तो ज़रूर मुझे पहचान सकोगे और पहचानते ही तुम एक  
चाराप, एक चानामुखी बन जाओगे। साधनाओं की लेजस्विला तुम में  
जा गक्की है। कलाओं लोगों के लीच तुम नायक बन सकते हो, तुम  
नायक वे सकते हो इस देश की थीं, आपने आप वह थीं और जिन होटे  
मोटे लोगों के सामने तुम निडाशिदा रहे हो ये तुम्हारे समाजे शुरू सकते  
हैं। अगर तुम्हें प्रश्नरता है, तो कहा है, जमता है।

गिडियाजा और हाथ नाड़ना नृप छोड़ दें। ऐसे तुम अपना और  
मेरा दोनों का अपमान मत करो। तुम्हारा कोई कुछ नहीं बिशाड़ सकता।  
ओर वहाँ देखा नहीं। कोई बहुत बड़ा तात्त्विक हो उसे चुनौती देकर देखो  
कि वह तुम्हारा क्या बिशाड़ स्वरूप है। वह तुम्हारा कुछ अहित नहीं कर  
सकता क्योंकि उस समय थी जैसे तुम्हारे अंदर विदा होता है।

तुम जीवन में उस पराडी पर बढ़ नहीं, तुम गुल की और सबसे  
को पहचान सको, जीवन में विजय एवं सफलता प्राप्त कर सको,  
साधनात्मक बल और मेज़ शक्ति प्राप्त कर सको ऐसा ही मैं हृदय से  
नुर्झे आशीर्वाद देता हूँ।

- परमहंस स्वामी निष्ठिलेखरानंद

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान पत्रिका आपके परिवार का अमिन त्रैग है। इसके साधनात्मक वल्यु को समाज के सभी स्तरों में समाज सद से स्वीकृत किया गया है, क्योंकि इसमें प्रत्येक वर्ग की समस्याओं का छल सरल और सहज रूप में समाहित है।

# वार्षिक विज्ञापन

इस पत्रिका की वार्षिक क सदस्यता को प्राप्त कर आप पार्श्वे अद्वितीय और विशिष्ट उपहार

## तंत्र बाधा निवारक दीर मैरेख यंत्र

तंत्र की सैकड़ों हजारों विधियां हैं, परन्तु जितनी तीव्र और अचूक भैरव या भैरवी शक्ति होती है, उन्होंने अन्य कोई नहीं होती। दीर भैरव शिव और पार्वती के प्रमुख भाजे हैं, जिनको प्रशंसन कर मनोवाचित लाभ प्राप्त किया जा सकता है। मूलजः इस साधना को गृहरथ जीवन को दीरता से जीने के लिये उपयोग किया जाता है। दीरता का अर्थ है प्रत्योक बाधा, समस्या, अहंकार और परिस्थिति को अपने जियांब्रण में लेकर, उस परिस्थिति पर पूर्ण वर्चुरूप उथापित करते हुए, दीरता से जूँड़ने हुए विजय प्राप्त करने की क्रिया। यही दीरता दीर भैरव यंत्र को द्वारा भी उथापित करने पर प्राप्त होने लगती है। गृहरथ जीवन सुख, शान्ति और जीवित रूप से जीवित होता है। समस्याओं पर हाथी होते हुए भी पूर्ण आजन्दयुक्त बने रहता - यही दीर भाव है। मुख्यातः इस साधना को तंत्र बाधा, मूल आदि को समाप्त करने के लिये किया जाता है।

यह तुरंग उपहार तो आप पत्रिका का वार्षिक सदस्य अपने लिखी मित्र, विशेषार्थी वा स्वनग को द्वारा कर सकते हैं। यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप रवरां भी सदस्य बनकर यह उपहार प्राप्त कर सकते हैं। आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड नं. ८ स्पष्ट अक्षरों में भरकर हमारे पास भेज दें, शेष कार्य हम रखते करेंगे।

Fill up and send post card no. 4 to us at:

वार्षिक सदस्यता शुल्क-195/- इक रुपय अतिरिक्त 45/- Annual Subscription 195/-+45/-postage

### श्रमपक्ष

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर 342001, (राजस्थान) Mantra-Tantra-Yantra Vigyan, Dr. Shrimali Marg, High Court Colony, Jodhpur-342001, (Raj.), India

फोन (Phone) -0291-2432209, 2433623 टेलीफोन (Telefax) - 0291-2432010

# कृष्ण कंडे गवाहु गुण



भगवान् श्रीकृष्ण ने पूर्ण पुरुष और महामानव के रूप में दर्शन दिया है। ज्ञान-विज्ञान, ऐत्री, बुद्ध भक्ति, सातु-पितृ भक्ति, परमी प्रेम, स्त्री जाति के प्रति आदर, साजनीति, एवं कौशल, विषय कला दिखायी पड़ी है। अत्याकार तथा अत्याचारियों का शमन, समझत क्षेत्रों में अपना आत्मर्थ कार्य प्रस्तुत कर मानवता का मठान आदर्श सम्पूर्ण जगत् के सभी प्रस्तुत किया है।

संन्यासीप्रका<sup>१</sup> ने आश्रमकरातारी ने जब अपनी माता की मुर्ति के लिए भगवान् श्रीकृष्ण से प्रार्थना की, तो वे गंसा, द्वय, बदा, पद्म तथा लक्ष्मी निज दुर्घों से बुक्त हो श्री सम्पद रूप में उनके सामने प्रकट हुए एवं उन्हें कृतार्थ किया।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖ ❖

श्री कृष्ण जन्मोत्सव का महान पर्व जन्माष्टमी का रात्रि न कभी बनता है, न कभी नष्ट होता है, उनका न कभी विश्व में समाज जाता है। आन ही के दिन भक्तिवान व स्वरूप समस्त अवलोक्ये के मूल अवतारी पूर्ण वृग्न वृग्नेतन, दोषीश्वर भगवान् श्रीकृष्ण का पृणालीभूत अपने समस्त अंशों सहित हुआ।

हाँ! इनका जवाह्य है, कि उनको दिव्य देह, जो जित्य भूत्यद देह है, वह जन्म लेती है भी उत्तम्यान होती प्रलील होती है, यही कारण है, कि उन्हें जन्मना, अविनाशी कहा गया है।

यह उनकी अहेतु की कृपा है, जो उन्होंने सारस्वत वल्प में अपनी सम्पूर्ण कलाओं के साथ इस भूमण्डल के सीधायशानी व पृथ्ये प्रदायक बनाया।

इन्हीं अजन्मा, अविनाशी भगवान के विभिन्न शृणियों ने, वृष्णियों ने, योगियों ने विभिन्न विभेदणों से अलंकृत कर अपनी अपनी दान-क्षमता के अधर पर विवेचन करने का प्रयास किया है।

किसी भी कल्प में आविर्भाव हुए भगवान का वस्तुतः न तो कमेन्नित, रनोवीर्यसम्भूत पचमीतिक देह होती है, न ही प्राकृत जीवों की तरड़ जन्म होता है। भगवान की मंगलमय श्री देह विविध मायिक देह नहीं होती। उनका दिव्य दरीर बाधन, वृद्धि, विद्वत वृजन, वर्षापूर्ण, परिवृग्नेतम्,

अद्वितीय, परम गूढ़, परम ज्योति स्वरूप, सर्वशक्तिमान, सर्वशक्त्याधार कहा गया है।

भगवान् शिव, ब्रह्मा, भगव, व्यास देव, शीष्म पितामह आदि असंख्य महानुमतों ने भगवान् श्रीकृष्ण के पूर्ण पुरुषोत्तम होने का वर्णन कर उनके आशाधना तथा पूजा की अपने जीवन करना चाहिए। का परम चीमाण माना है।

“श्रीप्रद्यमगवद् गीता” में भवयं भगवान् के वाक्य हैं -

“उरुं कृत्तद्वद्वद्व जगत् प्रभवः प्रलयस्तथा।”

अर्थात् मैं ही समस्त जगत् की उत्पत्ति और प्रलय हूं सबका अधिकारण हूं।

“वीरं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थं सनातनम्।”

अर्थात् समस्त जीवों का समस्त भूतों का सनातन वीर मैं हूं है।

“अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते।”

उत्पत्ति मैं ही सभी के उत्पत्ति का कारण हूं और मुझसे ही जगत् जगत् जटिल है।

अतोऽपि नङ्गवद्वयात्मा भूताकामीश्वरोऽपि सब्।

एकति ल्यामविष्टुव लभ्याम्यात्ममत्यव्यय॥

अर्थात् मैं अनन्मा, सर्वज्ञापक, समस्त भूतों में इश्वर रूप लीन हो जाता है।

श्रीनदिग्बन्ध गीता में अनेकों ऐसे उद्धरण हैं, जिनसे भगवान् श्रीकृष्ण की विराटना व सम्पूर्णता का पूर्ण आभास होता है। गीता में श्री “तद्व तेव” कहते हैं -

“तद् हि ब्रह्म परं ज्योतिर्गृहं ब्रह्मणि ....”

अर्थात् आप ही परमब्रह्म, परम ज्योति स्वरूप हैं, आपका स्वरूप परम गूढ़ है।

इसी लक्षण “महाभास्त” में शीष्म पितामह ने श्रीकृष्ण

के महस्य का वर्णन करते हुए कहा है -

कृष्ण एव हि तोकानामुत्पत्तिर्विचावव्यः।

कृष्णस्त इह कृते विश्वमिद् भूत चराचरम्॥

अधात् श्रीकृष्ण ही समस्त लोकों की उत्पत्ति तथा प्रलय के वैशाख

आधार है, यह सम्पूर्ण विश्व और समस्त प्राणी श्रीकृष्ण की

कीदूर के हेतु है। श्रीकृष्ण ही जनातन कर्ता हैं, सभी भूतों से ज्ञान

प्राप्त, अन्यत यकृति प्रव अच्छुत हैं, अतः सबके पूर्णतम हैं।

महाभास्त में लो ‘सर्वज्ञ तेवर्वि नारद’ का कथन है -

कृष्णं कमलपत्राक्षं जार्चविष्ववित द्वे लराः।

जीवन्मृतास्तु ते द्वेया न सम्भाष्यः कदाचन॥

अर्थात् जो लोग कमलनदन श्रीकृष्ण की पूजा नहीं करते, वे जीवित ही मृतवत होते हैं, और उनके साथ वार्तालाप भी नहीं होने का वर्णन करते उनको आशाधना तथा पूजा की अपने जीवन करना चाहिए।

-ऐसे अनेक वाक्य विभिन्न असंख्य स्थानों पर कहे गये हैं। श्रीकृष्ण के भक्तों, संतों के जो प्रत्यक्ष अनुभव है, वे सर्वथा अकाटव तथा प्रमाण स्वरूप हैं।

श्रीकृष्ण का अवतार अन्यन्त गूढ़ और जटिल बन गया है, क्योंकि विभिन्न भक्तों ने अपनी-अपनी भावना के अनुसार देखा और बर्णन किया है - कोई उन्हें चतुर्भुज नारायण का अवतार कहता है, तो कोई उन्हें समस्त वैदेता का सम्मिलित अंश स्वरूप कहता है, तो कोई उन्हें नारायण ऋषि का अवतार कहता है।

“द्वृष्टवैर्वतं पुराणं” में घषण्ठ किया है - जब भगवान् श्रीकृष्ण का अवतार हुआ, तो उस अमय चतुर्भुज नारायण पृथ्वीपति विष्णु और नारायण ऋषि लीन हो गये। इन्हीं सब कारणों से यह कहा गया है, कि जो भगवान् के दिव्य जन्म और कर्म के तत्त्व को जान लेता है, वह शरीर-न्याज के बाद भगवान् में लीन हो जाता है।

ऐश्वर्यस्य समग्रस्य वर्षस्य वशसः श्रियः।

ज्ञान वैराग्ययोश्चेव स्पण्डं भज इतीरण॥

अर्थात् ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य इन छः का नाम “भग्न” है, और ये जिसके स्वरूपभूत होने हैं - वह “भगवान्” है।

ऐश्वर्य - उस सर्वशीकरिता शक्ति को कहते हैं, जो सभी पर निर्बाध रूप से अपना प्राप्ताव स्थापित कर सके।

धर्म - उसका नाम है, जिससे सभी का मंगल और उद्धार होता है।

यश - अनन्त ब्रह्माण्डव्यापिनी मंगल कीति ‘यश’ है।

श्री - ब्रह्माण्ड की समस्त सम्पत्तियों का जो एकमात्र मूल स्वरूप महान् शक्ति है, उसे ‘श्री’ कहते हैं।

सामान्य, शक्ति, यश आदि में जो स्वाभाविक अनासक्ति है, वह वैराग्य है।

ज्ञान तो स्वयं भगवान् का दिव्य स्वरूप ही है।

रवेकल की समस्त वस्तुओं के साधारकार को ‘ज्ञान’ कहते हैं।

इन सभी गुणों से सहज सम्पन्न है "श्रीकृष्ण", जिन्होंने अब आदर्श मानव की तरह जीवनयन किया और निष्ठाम वाच ग्रन्थक द्वावहरण प्रस्तुत किया।

किन्तु भगवान् श्रीकृष्ण मात्र ऐसवर्य सप्त ही नहीं है, वे मधुर सप्त भी हैं, उनमें सम्पूर्ण ऐसवर्य और सम्पूर्ण माधुर्य का पूर्ण प्रकाश है, इसीलिए वे 'पूर्ण' हैं और 'भगवान्' हैं।

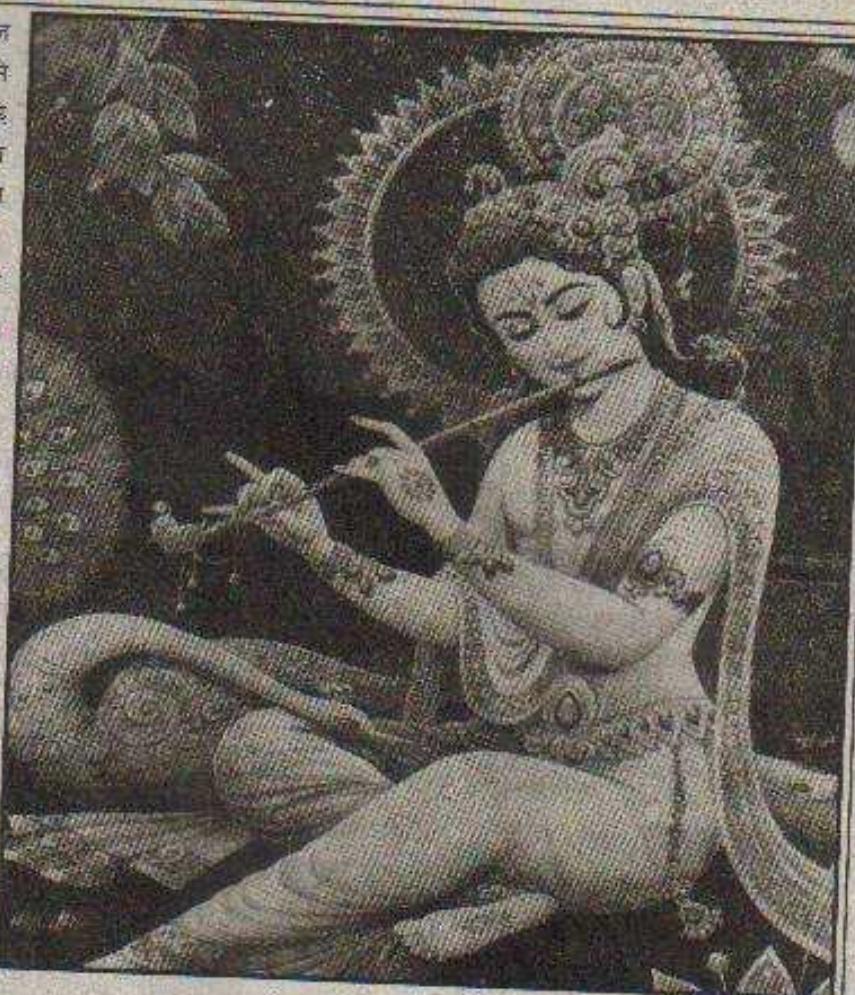
श्रीकृष्ण में प्रेकारान्तर से चौमठ गुण बताये गये हैं। इनमें से पचास तो उच्चभूमि पर ज्ञानारित जीवों में भगवत् कृपा से प्रकट हो सकते हैं, किन्तु इसके अतिरिक्त पांच गुण ऐसे हैं, जो श्री ऋद्र में ही होते हैं, पांच गुण श्रीपाति में प्रकट हैं।

किन्तु चार ऐसे गुण हैं, जिनका पूर्ण प्राकृत्य केवल मात्र श्रीकृष्ण में ही है। वे गुण हैं - लीला माधुरी, प्रेम माधुरी, रूप माधुरी और वेणु माधुरी इन चारों द्वितीय गुणों के कारण ही श्रीकृष्ण "मधुरतमधुर" है।

भारतवर्ष में ऐसी कोई भाषा नहीं है, जिसमें श्रीकृष्ण का वर्णन न हो। जितने भी प्रसिद्ध साधु, जो हुए हैं, सभी पर श्रीकृष्ण भक्ति का प्रभाव देखने में आता है। हमारी प्राचीन भाषा संस्कृत में श्रीकृष्ण पर विशद साहित्य तो ही ही, हिन्दी, बंगला, मराठी, उड़ीया, झारखंडी, कछड़, लेलगु, तमिल आदि भाषाओं के साहित्य भी श्रीकृष्ण के गुणगान से भरे हुए हैं।

भारतवर्ष के भक्त हैं ही, साथ ही अहैतु वेगान्त के प्रवतंक भगवनपाद आदिशंकराचार्य ने भी श्रीकृष्ण की आराधना की जीवन का सौभाग्य मान कर इससे अधिक भगवपूर्ण स्तोत्रों की रचना की है, जिनका पठन कर मन श्रीकृष्ण के माधुर्य में आसनक हो उत्तमा है।

भगवान् शंकर नित्य श्रीकृष्ण की मानस पूजा करते थे,



जिनका विधान उन्होंने "भगवत् मानस पूजा" नाम से लिखा है, इसके अतिरिक्त उन्होंने श्री कृष्णाष्टक, श्री गोविन्दाष्टक और श्री अन्युताष्टक आदि अमेक स्तोत्रों की रचना की। श्री शंकराचार्य जो ध्यान किया करते थे, वह इस प्रकार है-

**हृष्मभोजे कृष्णः सरसजलदश्यामलतत्त्वः,**  
**सररोजरात्रः स्वर्णवी मुकुटकटकाद्वाभरणवान्।**  
**शरद्वाकरामाथप्रतिसदवदनः श्रीमुरात्सिकः;**  
**वहन् श्वेथो जंगीजणपरिवृतः कुंकमवितः ॥**

अर्थात् कगलबत आसन पर समल जलधर के समान श्याम तन बाले कमलनयन श्रीकृष्ण विराजमान हैं, उनके गले में वैजयन्ती माला, शीश पर मुकुट, हाथों में कंकण और प्रत्येक अंग में विविध आभूषण शोभायमान हैं। अनका श्रीमुख शरद चन्द्र के समान मनोहारी है, उन्होंने अपने हाथ में मुश्ती धारण कर रखी है, केलर युक्त चन्द्रन से वे श्रृङ्गालित हैं, और उन्हें गोप तथा गोपरमणियों ने चारों तरफ से घेर रखा है।

‘प्रबोध सुधाकर’ नाम गंथ में ‘श्री शंकर’ ने वह स्पष्ट किया है, कि - भगवान् श्रीकृष्ण न तो उंशवनार है, न एकदेवीय अपितु वे तो समस्त अवतारों के प्रभुर्क, सर्वगत, स्वलिमा, साक्षात् परब्रह्म हैं। वे भगवान् श्रीकृष्ण को इदा, दिष्ण, महेश से रसवंथा पृथक्, विकार रहिन और यद्यश्रेष्ठ एक सचिन्मयी नीलिमा बताते हैं - “कृष्ण वे पृथगस्ति को उद्धविकृतः सचिन्मयी नीलिमा।”

शंकर चिदानन्द के प्रछान्त अनुयायी ‘स्वामी श्री मधुसूदन रसवंथी जी’ जिन्होंने “अद्वैत सिद्धि” नामक उद्वान गंथ की रचना की, वे भगवान् श्रीकृष्ण के अतिरिक्त किसी अन्य तत्त्व के अस्तिन्त्र को ही अद्विकार नहीं करते हैं - “जिनक हृष्ट वशी से सुशोभित है, जो वीताम्बर से सुशोभित है, जिनका मृत्यु पूर्ण बन्दमा के समान सुशीतल है और जिनके नयन कमलबन है”, उन श्रीकृष्ण से परे सन्द कोई तत्त्व मेरी समझ से तो ही ही नहीं। भगवान् श्रीकृष्ण ने उपरी प्रत्येक लीला में सर्वेषां निष्काम भाव का पालन करके आसक्ति कुमाना में रहित कर्मयोगी का और अंदकार रहित रसत्वपूर्ण व्यवहार करके रामदशी बहाजानी का आदर्श मात्र वाणी से नहीं, स्वयं के आचरण से प्रस्तुत किया।

उद्धिवेचनीय, अधिन्दानन्त, परम्पर विरुद्ध गुण धर्माश्रयी श्रीकृष्ण के अनेक गुण हैं। उनका निलन स्मरण किया जाय, उनमें कहीं ज्यादा मंगल होता है। उनके प्राकृत्य विवरण पर उनका स्मरण कर उनसे प्रार्थना करते हैं -

“हे परिपूर्ण यद्य! हे परमानन्द!! आपकी महिमा का वर्णन तो महान् योगी भी न कर सके, तो मैं तो मात्र एक रजकण के समान हूँ। आप बहुत महान् हैं, जो आपने मुझे नगण्य को अपना आश्रय प्रदान किया। मेरे अन्दर प्रेम, माधुर्य, त्याग, समर्पण कोई भी गुण नहीं है। तुम्हारी मधुर छवि निराशरे हृषि मन में सिर्फ एक यही भाव आता है, कि कभी तुमसे अलग न रहूँ। याहे समस्त सुखों का भी मुझे त्याग करना पड़े, तब भी मुझे कोई कष्ट नहीं है, यदि तुम्हारी चरण-धूलि में आश्रय मिल जाय। यदि आपने समीप नहीं रख सकते, तो इतनी कृपा कर दो, कि यह तन कहीं भी रहे, किन्तु मेरा मन निरन्तर तुम्हारी मुरली की धून पर नृत्य करता रहे, और मेरे नेत्र हर पल तम्हारे स्पृह का पान करते रहें।”

**आरती कुंज विहारी की।  
श्री गिरधर कृष्ण मुरारि की।**

आरती कुंजविहारी की।

श्रीगिरधर कृष्ण मुरारि की।

गले से बैजहारी भाला।

बजारी लघुर भाला।

ब्रह्म में कुपडल भालाकाला।

बंद के आजमडलनदालाला।

गरानसाम उंगा कांतिकाली।

राधिका एकक रही आली।

तटक में दाढ़ बलाली।

बलर ती उलक।

कन्तरौ तिलक चंद्र सी छालक।

ललित छवि श्यामा प्यारी की।

श्री गिरधर ...

कलकलय लोर गुकुट खिलमे।

देवता दसम की तरसै।

बालर्सी सुमल राति बरसै।

बड़ी सुरंग।

लघुर लिंगदा तेलालली संग।

अतुल रसि गोर कुमारी की॥

श्री गिरधर ...

जहा ते प्रकट लहौ गंगा।

स्कल भल छारिणी श्रीरंगा।

स्वरज ते हीत लोह लंगा।

बसी सिव सीम जटा के बैथ।

हुरे अध कीद। चरन छवि श्री बलवारी की।

श्री गिरधर ...

चककली उछजवल तटरेनु।

बज रही घूम्हावन बेनु।

चमूविसि गोपि उवाल देनु।

हंसत लूँगव चाकली चंद।

कटल भव फल। देर मुल लील तुशारी की।

श्री गिरधर ...

आरती कुंज विहारी की।

श्री गिरधर कृष्ण मुरारि की।

भक्ति, शक्ति, बुद्धि, परामर्थम् तथा नीति के संबंधम् हैं  
**योगीश्वर श्रीकृष्ण**

ॐ

ਜਿਸਾਂ ਹੁਣਾ-ਮਕਿ ਸਿਲਿ ਰਾਮਨ ਦੀ ਊਮੈ ਤੋ ਰਾਬ ਕੁਠ ਪ੍ਰਾਮ ਕਰ ਲਿਆ

कृष्ण साधना के चार अद्वितीय प्रयोग

कृष्ण को भक्ति के सम्बन्ध में, जीवन चरित्र के सम्बन्ध में, उनकी लीलाओं के सम्बन्ध में जिनमें यथ एवं रथयाएं लिखी गई हैं, आनी जिसों अध्ययन के सम्बन्ध में नहीं हैं, क्षमोक्ति कृष्ण तो लोक-लोक से जुड़े थे, जिसमें दूर साथक एक भाल्मीयता का, एक प्रेम सम्बन्ध का उन्नभव कर सकता है।

कृष्ण और माया

आप कहीं भी किसी मद्रासा के पास प्रवचन गुस्से न रखें तो यही सुनने को मिलेगा, कि जगत मात्रा स्वरूप, मिथ्या है, इस जगत को छोड़ कर संन्याय भाग्य कर लो, तभी पूर्ण शुद्धि, शान्ति प्राप्त हो सकेगी। जो ओइं हनको पूरा अच्छा करते हैं, उन्हें साक्षात् ब्रह्म कहते हैं, उन साक्षात् भगवान् कृष्ण ने तो कभी भी जीवन में कभी की इन नई सोचें—

वत्र योग्येश्वरः कृष्णो, वत्र पात्यो धन्वधरः।  
तत्र श्रीर्विजयो भूतिरु, श्रुपा नीतिमीतिर्भुम्॥

२०१८/१९

तात्पर्य यह है कि जहाँ अनुरूप है, वहाँ कृष्ण है। जहाँ कर्म स्वरूप अनुरूप है, वहाँ योगीलक्षण कृष्ण है, वहाँ विनय, श्रेष्ठता, श्री एवं नीति है।

कृष्ण केवल मस्ति भवरुप ही नहीं है, उनके तो जीवन, कर्म, उनके उपदेश, जो जीता में भगवान्हिन हैं, के साथ साथ नीति अनीति, आशा-आकंक्षा, मरणो आचरण, प्रलेक पञ्च के पूर्ण रूप से व्याख्या कर उपने धौतर जलासने का साधन है, कृष्ण की नीति, आउने पर्य मर्दादा का चरम रूप न होकर व्यावहारिकता से परिपूर्ण होकर ही दुष्टों के साथ कुस्ता का

व्यावहार तथा सम्जनों के साथ अंशता का व्यवहार, जिन और श्रुति की पहियान किस नीति से किस प्रकार निकला जाय, यह सब आज भी व्यावहारिक रूप में खड़े हैं।

समान्य रूप से कृष्ण जन्माष्टमी जो कि भगवान् कृष्ण का अवतारण दिवस है, उस दिन साधना सम्पन्न करनी चाहिए। लेकिन क्यादातर यह पाया गया है कि जन्माष्टमी के दिन पूरे परिवार के साथ कृष्ण का पूजन करना चाहिए। भगवान् कृष्ण के बाल रूप की शांको बनाकर आरती इन्द्रादि सम्पन्न करनी चाहिए।

कृष्ण जन्माष्टमी का पूजन कर उसके पश्चात् किसी भी कृष्ण पक्ष में अष्टमी के दिन यह साधना सम्पन्न की जा सकती है। इसके अलावा अमावस्या के दिन भी इन साधनाओं को सम्पन्न किया जा सकता है।

### १. इच्छा पूर्ति गोविन्द प्रयोग

इस साधना हेतु साधक रात्रि का प्रथम प्रहर जाने के पश्चात् साधना क्रम प्रारम्भ कर अद्वैत रात्रि के साथ पूर्ण कर सब जप सम्पन्न करें, इस साधना हेतु 'इच्छा पूर्ति गोविन्द यज्ञ', 'दो गोविन्द कुण्डल' तथा 'गाठ शक्ति विद्याद' आवश्यक हैं।

अपने सामने सर्वथाम एक बाजोट पर पूर्ण ही पूज्य विद्या है और उन पूर्णों के बीचों-बीच इच्छा पूर्ति मंत्र स्थापित करें, तथा इस यज्ञ का पूजन केवल चन्दन तथा केसर से ही सम्पन्न करें, अपने सामने कृष्ण का एक सून्दर चित्र क्रेम में मढ़कर स्थापित करें, चित्र के भी तिलक करें तथा प्रसाद स्वरूप पंचमूल हो, गिरावटी, दूध, तहीं, शब्दकर तथा शहद हो, इसके अतिरिक्त अन्य निवेद्य भी अपित कर सकते हैं, इच्छा पूर्ति यंत्र के दोनों ओर गोविन्द कुण्डल स्थापित करें, तथा कुण्डल पर केपर का टीका लगायें और दोनों हाथ जोड़ कर कृष्ण का ध्यान करें, उसके पश्चात् यज्ञ के दोनों ओर इनके शक्ति स्वरूप आठ शक्ति विशेष स्थापित करें, ये आठ शक्तियां लक्ष्मी, सरसवती, रति, प्रीति, कीर्ति, कान्ति, तुष्टि एवं पृष्ठि हैं, प्रत्येक शक्ति विग्रह को स्थापित करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें -

ॐ लक्ष्म्ये नमः पूर्वदत्ते

ॐ सरस्वत्ये नमः भाग्नलेय दत्ते

ॐ रत्ये नमः दक्षिण दत्ते

ॐ प्रीत्ये नमः नैत्रात्म दत्ते

ॐ कीर्त्ये नमः यश्चिम दत्ते

ॐ कान्त्ये नमः वात्यव्य दत्ते

ॐ तुष्ट्ये नमः उत्तर दत्ते

ॐ पृष्ठ्ये नमः ईशरात्र दत्ते

शक्ति पूजन के पश्चात् इच्छा पूर्ति मंत्र का नय प्रारम्भ करते समय पूरे समय 'ॐ सुचकाये स्वाठा' का मंत्र जप किया जाता है, इसकी भी विशेष विधि है, इसमें अपने दोनों करते रहें।

कृष्ण का अवतरण अंधकार अद्वैत रात्रि में हुआ जो हम सात का स्पष्ट करता है कि घने अंधकार में भी द्वितीय प्रकाश उत्पन्न होता है। कृष्ट और पीड़ा की भी एक सीला होती है। कृष्ण का यज्ञ आशा का संबंध ले कर उपस्थित होता है। जहाँ मनवान् राम को मतविद्या पुष्टिशील कहा गया है वहाँ कृष्ण की विग्रहन एवं गंगाद् गुरु कहा गया है। क्योंकि उन्हींने अपने जीवन की विमिळा लीलाओं द्वारा भोग और वीर का स्टोरी कर गीता का विद्या संबंध दिया और समार ने मनुष्य को घलने का क्रम दिखाया।

हाँ में एक पृथ्वी अथवा पृथ्वी ने, और इच्छा पूर्ति मंत्र का उच्चारण करते हुए उसे अपिन कर दे।

### इच्छा पूर्ति मंत्र

॥ ३५ ॥ श्री द्वारी कर्त्ता कृष्णाये गोविन्दादै स्वाहा ॥

उस प्रकार १०८ बार यह मंत्र उच्चारण इसी विधि से सम्पन्न करना है, यह स्पृष्टि प्रयोग पूर्ण हो जाने के पश्चात् पूजन से जला कर रखे हुए दोप, अगरबत्ती तथा थप से आरती सम्पन्न कर प्रसाद गणा करें।

यदि कोई साधक एक महीने तक प्रतिदिन एक माला मंत्र जप सम्पन्न करे तो उसका इच्छित कार्य अवश्य ही सम्पन्न हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 290/-

### २. श्रुत बाधा शान्ति कृष्ण प्रयोग

कृष्ण का पूरा जीवन श्रुतियों को कभी नुच्छ से, कभी नीति से परास्त कर, जानिन स्थापित कर, भर्म की स्थापना करना रहा है, जहाँ भर्म है, वहीं श्रीकृष्ण है।

तब श्रुत बाधा बहुत बढ़ जाय, तो इस साधना दिवस के दिन अद्वैत रात्रि के पश्चात् शब्दहन्ता प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए, उसमें श्रीकृष्ण सूदर्शन यज्ञ के अतिरिक्त मंत्र विद्या कृष्ण पाश तथा कृष्ण अंकुश की ल्याणना कर विधि-विद्रोहन भूषित पूजन करना चाहिए, अद्वैत रात्रि के पश्चात् साधक अपने द्वजा स्थान में एक बड़ा दीपक लगाये, दूसरी ओर थप, अगरबत्ती जलाये, विद्या दिशा की ओर मुह कर भवंप्रथम कृष्ण अपूर्णों का पूजन करें, प्रथम पूजन कृष्ण पाश तथा द्वितीय पूजन कृष्ण अंकुश का करें और पूजन करते समय पूरे समय 'ॐ सुचकाये स्वाठा' का मंत्र जप

जब पूजन के प्रथात सामने एक चावल की टेपी पर श्रीकृष्ण स्थापित करें तथा चारों ओर कृष्ण के अस्त्र शस्त्र और छठ सुपारी स्थापित करें, ये आठ सुपारी आठ हाथों में लिन लाभ, चक्र, गदा, पद्म, पाश, अंकुश, धनुष तथा शर के ज्ञान हैं, तथा प्रत्येक सुपारी पर कुरुम, केम्बर, चावल उत्तम दूर निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

ॐ शरवाय नमः ॐ वक्राय नमः

ॐ बडाय नमः ॐ यद्याय नमः

ॐ पाशाय नमः ॐ अंकुशाय नमः

ॐ धनुषे नमः ॐ शराय नमः

जब इन्हीं बाधा निवारण तथा शत्रु नाश की इच्छा व्यक्त करने द्वारा सुखनीयता का सारी पूजन सामग्री से पूजन गम्भीर कर निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें।

मंत्र  
॥ ॐ श्रीकृष्णार्द्दे असुराक्षरम्  
भारहारिज्ये नमः ॥

इस मंत्र की पांच माला वैजन्ती माला से उसी स्थान पर बिट कर जप करें तथा दूसरे दिन प्रातः राह भिला कर कृष्ण अपूर्णों तथा आठों सुपारी को एक लाल कपड़े में बांध कर शत्रु के घर की दिशा में जाएँ वे तो प्रबल भूत शत्रु भी शान्त हो जाता है।

साधना सामग्री पैकेट - 300/-

### ३. वशीकरण सिद्धि : केशव प्रयोग

कृष्ण तो वशीकरण के साक्षात् स्वरूप हैं, इनकी ही साधना वशीकरण याधना में सर्वोत्तम कही गयी है, किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टावीं के दिन सायंकाल यह पूजन गम्भीर किया जाता है, सर्वप्रथम अपने सामने एक कांस की थाली में 'कल्प वन्धु' स्थापित करें, साथक अश्वा साधिका सुन्दर वृक्ष धारण करें, सुगन्धित फूलों वा इन भावित का प्रयोग करें, बातावरण अत्यन्त प्रसन्नतामय एवं सुगन्धित होना चाहिए, पूर्व दिशा की ओर मुङ्ग कर यव को एक थाली में स्थापित कर केसर से पूजा कर एक पूज्य माला यह को बढ़ाएं तथा दूसरी पूज्य माला लवयं पहनें।

अब सर्वप्रथम आठ नहोषियों का पूजन आठ चावल की ढेरियों बना कर प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित कर सम्पन्न करें, कृष्ण की ये आठ महिलायां हैं -

कुक्षिष्णी, सत्यभामा, नग्नजित, कालिन्दी, मित्रिविद्या, लक्ष्मणा, जामवन्ती एवं सुशीला।

उब 'कली वंश' का पूजन भग्नन करें, कुछ शास्त्रों के अनुसार इस पूजन में सिन्दूर का प्रयोग विशेष रूप से होता है, इसके अतिरिक्त इस पूजन में पूज्य, मौली, सुपारी, वन्दन तथा कल्प आजन का भी प्रयोग है, इसे भी मंत्र जप के साथ-

सायं कली वंश को अपित करना चाहिए, यह पूजन शुर्ण होन के प्रस्थान साथक मंत्र जप सम्पन्न करें, अपित करने वाली लामग्री खत्म हो जाय तो चावल के बाने छाड़ा रहें।

मंत्र

॥ कली दूरीके शाव नमः ॥

इस मंत्र की स्थान माला पौली इक्षिक माला जप सम्पन्न करना है।

'गीतर्थीय तंत्र' में लिखा है कि पूजन में चहाँ गई भाग्यों का शूर्ण बना कर यह शौकी मात्रा में जिसे दे दिया जाय तो साथक पूजा में हो जाता है।

यही कहाँ रासलीला के मध्य में स्थित श्रीकृष्ण का ध्यान कर उक्त संबंध का कस हनार मंत्र जप करता है तो छँ मटीने के भीतर हृच्छन कल्पा प्राप्त होता है।

जो कल्पा कलम्ब वृक्ष पर स्थित कृष्ण का ध्यान कर, प्राप्तिदेव एवं हनार मंत्र कर तो उसे ४३ दिनों के भीतर-भीतर हृच्छन्मुक्त शैषु पति प्राप्त होता है।

साधना सामग्री पैकेट - 230/-

### ४-पुत्रदायक अंतान गोपाल प्रयोग

यह भाधना प्रयोग इसी जपि को पनि फली देनों साथ में बैठ कर पूर्ण पूजन के साथ गम्भीर करें, अपने सामने दीपक तथा अगरबत्ती जलाएँ, याली में मंत्र लिख प्राण प्रतिष्ठा युक्त संतान गोपाल वंश स्थापित कर उलझ पूर्ण विधि से पूजन सामग्री का प्रयोग करते हुए पूजन करें तथा यो अहव तथा शब्दकल्प, तिल में भिला कर चढाएँ, पति फली देनों पूर्ण श्रद्धा भक्ति से आपनो कामना पूर्ति की ग्राहना करें, अपने हाथ में जल ले कर स्वेच्छयम निम्न संकल्प ते -

अस्त्र श्री सल्लराज जोपाल मंत्रस्त्र लारव ऋषि-  
अनुष्टुपैष्ठ्यलः सुतप्रदः कृष्णो देवता ममाभीष्टसिद्धुर्ये  
जपे विनियोजः।

तत्प्रथान कृष्ण का ध्यान कर अपनी डल्ला पूति की ग्राहना कर 'गोपाल माला' ने निम्न गंत्र की पांच माला मंत्र जप सम्पन्न करें।

सन्तान गोपाल मंत्र

देवकी सुत जोविन्द वासुदेव जज्ञतपते।

वेहि म तत्वय कृष्णा त्वाम्ह शरणं जतः।

मंत्र जप पूर्ण हो जान के पश्चात् कृष्ण आरती सम्पन्न कर इस वंश की दूसरे दिन प्रातः सनान कर आपने शयन कक्ष में स्थापित कर दें, तो साथक वो निश्चय ही संपत्ति प्राप्त होती है।

साधना सामग्री पैकेट - 360/-

प्रथमकृष्ण की साधना देसी विशेष साधना है जो जीतन में रस मायूर, प्रेम फेल देती है, जिसने अपने गीवज में कृष्ण साधना वर्णी की उत्तर जीवन ही व्यर्थ है। हर स्थिति में कृष्ण वप्स ध्यान भवश्य ही करना चाहिए।

पूरे जीवन को अशानूत बना सकता है

# पितृ दोष

आवश्यक है तपीं साथिा द्वाया पितृ दोष समापन

श्राद्ध का अर्थ है अद्वैतिक कुण्ड देश या श्रद्धा व्यक्त करना, अपने मृत पूर्णों के लिए कृदज्ञता द्वाया करना ही श्राद्ध है, वयोऽक्त आदीय मानवता के अनुसार मृत जीवता विभिन्न तोकों में भ्रकती हुई दुःखदायी दोषियों में द्विष्ट होती है, तथा अनन्त दुःखों को भ्रोगती है... शास्त्रीय वह सब वृत्तान् प्राद्ध के माध्यम से मृतात्मा को थांत्रि प्राप्त होती है।

श्राद्ध के वल मूर्त व्यक्ति के लिये ही किया गया कर्म नहीं है अपितृ श्राद्धा पूर्ण यो भी विशेष धार्मिक कार्य किया जाता है उसे श्राद्ध कहते हैं। श्राद्ध पक्ष में पूर्णों की आत्मा की थांत्रि के लिये यो संस्कार कर्म किया जाता है वह पित्रेश्वर श्राद्ध कहलाता है।

मुण्डि का ज्ञाम जिस प्रकार एक निर्धारित समयानुसार सनातन धर्म में इस निर्धारित कार्य का संस्कार के नाम से सम्पन्न होता रहता है, उसी प्रकार मनुष्य के जीवन का निर्धारण भूमोधित किया गया है। सन्कारों के हस कर्म में बालक के विभिन्न लक्षण से गृहरता हुआ जन्म से मृत्यु और मृत्यु से जन्म में आभासन के समय पुनर्जन संस्कार सम्पन्न किया जाता है, तो जन्म लेने के उपरान्त नामकरण चूडामणि संस्कार की ओर गतिशील होता है।

विश्वनियन्ता के इस निर्धारित क्रम के अनुसार ही हमारे जीवियों-महर्षियों ने सम्पूर्ण जीवन को, अर्थात् गर्भ में आगमन से लेकर जन्म और फिर मृत्यु तक, पूर्ण काल चक्र को विभिन्न खण्डों में विभाजित कर दिया है। उन्होंने ऐसा इसलिए किया, जिससे मनुष्य एक अनुशासित और सुध्यवर्गित तरीके से अपने जीवन को व्यतीत करे, और साथ ही प्रत्येक कार्य इस प्रकार विभिन्न संस्कारों से गृहरता हुआ व्यति जब कृद्यत्वस्य के साथ वे कार्य, जो मानव जीवन को प्राप्त करने और सुरक्षित के प्राप्त कर जाने और रोपयम्भूत शरीर का त्याग कर किसी हतु परम पिता परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता जापित कर, उनकी द्वारा त्यागे गये शरीर जो हिंदू धर्मनुसार अग्नि को समर्पित कर प्रसन्नता और आशीर्वाद प्राप्त कर सके।

६७ 'अगस्त' २००३ संप्र-तन्त्र-यज्ञ विज्ञान ३२ \*६

यज्ञवल्क्य का पवायन द्वाये पर विद्याह संस्कार किया जाता है, और यज्ञवल्क्य के प्रत्येक कार्य इस प्रकार विभिन्न संस्कारों से गृहरता हुआ व्यति जब कृद्यत्वस्य के साथ वे कार्य, जो मानव जीवन को प्राप्त करने और सुरक्षित के प्राप्त कर जाने और रोपयम्भूत शरीर का त्याग कर किसी

क्षण किया, संस्कार सम्पन्न किया जाता है।

जन्मातिक व्यवस्थित है हमारी समाजन धर्म की सम्पुति और जन्मातिक उदाहरण सहज हो। मृत्यु के बाद भी हमारा जन्म उस मूलता से जुड़ा रहता है, समाप्त नहीं होता, और जल्दी प्रति कृतज्ञता जापित करने तथा उसकी मुक्ति के लिए ही कामया गया है श्राद्ध संस्कार।

श्राद्ध का महत्व सर्वोदयित है, इनके बारे में कोई आवश्यक नहीं है, कि विस्तृत विवेचन की जाय, किन्तु वह बहुत ही कम लोगों को जान होगा, कि श्राद्ध वारह प्रकार के होते हैं -

## १-जित्या श्राद्ध

जो श्राद्ध प्रतिदिन किया जाय, वह मिल्य श्राद्ध है। तिल, जाता है। जान्न, जल, दूध, फल, मूल, शाक आदि से पितरों की संतुष्टि के लिए प्रतिदिन श्राद्ध करना चाहिए।

## २-गैमिरिक श्राद्ध

एकोहिष्ट श्राद्ध के नाम से भी इसे जाना जाता है। इसे विधिपूर्व सम्पन्न कर विषम संख्या १, ३, ५ में ब्राह्मणों को जोड़न करना चाहिए।

## ३-काम्य श्राद्ध

जो श्राद्ध कामना दूर होता है, उसे काम्य श्राद्ध कहते हैं।

## ४-दृष्टि श्राद्ध

वह श्राद्ध धन-धर्म तथा वंश वृक्षि के लिए किया जाता है, इसे उपनयन संस्कार सम्पन्न व्यक्ति को ही करना चाहिए।

## ५-सपिण्डन श्राद्ध

इस श्राद्ध को सम्पन्न करने के लिए चार शुद्ध पाव लेकर उनमें गन्ध, जल और तिल मिलाकर रखा जाता है, फिर प्रेत पात्र का जल विरु पाव में छोड़ा जाता है। चारों पात्र प्रतीक होते हैं - प्रेतात्मा, पितात्मा, देवात्मा और उन अज्ञात आत्माओं के, जिनके बारे में हमें जान नहीं है।

## ६-पारणि श्राद्ध

अमावस्या अथवा किसी पर्व विशेष पर किया गया श्राद्ध पारणि श्राद्ध कहा जाता है।

## ७-गोष्ठ श्राद्ध

गोओं के लिए किया जाने वाला श्राद्ध कर्म गोष्ठ श्राद्ध कहलाता है।

## ८-शुद्धयर्थ श्राद्ध

विद्वानों की संतुष्टि, पितरों की तुलि, सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति के निमित्त ब्राह्मणों द्वारा कराया जाने वाला कर्म शुद्धयर्थ श्राद्ध है।

## ६-कमगि श्राद्ध

यह श्राद्ध कर्म गमधिन, सोमान्तोचयन तथा पुरस्वन संस्कार के समय सम्पन्न होता है।

## ७-दैविक श्राद्ध

देवताओं के निमित्त धी में किया गया दैवान्वे कार्य, जो यात्रादि के द्विंदी सम्पन्न किया जाता है, उसे दैविक श्राद्ध कहते हैं।

## ८-ओपचारिक श्राद्ध

यह श्राद्ध शरीर को वृद्धि और पुष्टि के लिए सम्पन्न किया जाता है।

## ९-सांवरसरिक श्राद्ध

यह श्राद्ध सभी आद्वानों में व्येष्ट है, और इसे मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर सम्पन्न किया जाता है। इसके महत्व का आभास भविष्य पुराण में वर्णित इस बात से हो जाता है, जब भगवान् सूर्य स्वयं कहते हैं -

जो व्यक्ति सांवरसरिक श्राद्ध नहीं करता है, उसकी पूजा न तो मैं स्वीकार करता हूँ, न ही विष्णु, सूर्य और अन्य देवण्य ही ग्रहण करते हैं। अतः व्यक्ति को प्रयत्न करके प्रति वर्ष मृत व्यक्ति की पुण्य तिथि पर इस श्राद्ध को सम्पन्न करता ही चाहिए।

जो व्यक्ति माता-पिता का वर्षिक श्राद्ध नहीं करता है उसे धोर नरक की प्राप्ति होती है, और अन्न में उसका जन्म शुकर योनि में होता है।

कुछ व्यक्तियों के सम्मुख यह प्रश्न होता है, कि उन्हें तो अपनी माता या पिता के मृत्यु की तिथि जात नहीं है, तो वे किस दिन श्राद्ध कर्म सम्पन्न करें?

ऐसे व्यक्ति को श्राद्ध पश्च की अमावस्या को श्राद्ध कर्म सम्पन्न करना चाहिए, नवमी के दिन अपने मृत मां, दादी, परदादी इत्यादि का श्राद्ध कर्म सम्पन्न करना चाहिए।

श्राद्ध कर्म केवल मृत माता-पिता के लिए ही सम्पन्न किया जाता है, ऐसी बात नहीं है। यह कर्म तो मृत पूर्वीनों के प्रति अद्वार का सूचक है, और उसके आशीर्वाद को प्राप्त करने का सुअवसर है, जब श्राद्ध कर्म प्रत्येक साधक और पाठ्क को सम्पन्न करना हो चाहिए।



जब तक व्यक्ति पितृ वृक्ष से उक्षण नहीं होता है, तब तक किसी कार्य में पूर्णता से उसका फल नहीं प्राप्त कर सकता।

जब ऐसा सुअवसर उपस्थित हो रहा है, कि व्यक्ति अपने



# कृष्णलिनी जागरण

## कोई रहस्य नहीं है

यह तो जीवन की साधना है

### यात्रा मूलाधार से सहस्रार तक



मानव दो प्रकार से संचालित होते हैं, एक तो उभका में सम्मिश्रण होता है तब उभने विषय प्रकाश उत्पन्न होकर अन्नमय कोष है जिसमें खाना, पीना, रड़ना, उठना, बैठना, आनन्दिक अनुभूतियाँ कहता है उसे ही कृष्णलिनी कहा जाया सोना, सन्तोष उत्पन्न करना और जीवन के किया कलाओं में है। वह निर्विवाद है कि अह एक अपूर्व विषय ज्योति है जिसकी व्याप्ति रहना है और दूसरा प्राणमय कोष है जिसके माध्यम से सहायता में देह के आनन्दिक रहस्य और विषय के बाहर अशूल अव्याप्ति जी परम ज्योति में अपने आपके लिन कर आनन्दशन रहस्यों को प्रत्याह रूप से देखा जा सकता है। और उसके माध्यम से ब्रह्म साक्षात्कार की किया सम्पत्ति कई बार ऐसा भी होता है कि ध्यानस्थ दशा में साथकों को होती है।

शरीर में स्थित मरमस्थलों को चक्र भी कहा जाता है, गति या प्राणों की मरमस्थानट भी ही अनुभव होता है, इसका प्रत्येक चक्र का 'मूल' तथा 'शक्ति केन्द्र' उस मुषुम्ना में है कारण यह है कि जब मानव के कर्मगत दोष इन चक्रों पर छा जो कि मानव को विषय नेत्र देने में नहायत है, ये चक्र जान जाते हैं तो इनका प्रकाश कुछ मन्त्र सा हो जाता है, बाद में याहक तथा गहि बाहक चूंकों से बनो नाडियों से है और इसी पुनः अध्यात्म या गुरुकृपा से यह धूम डट जाता है, और पुनः के माध्यम से व्यक्ति अन्नमय कोष से प्राणमय कोष में प्रवेश उसे इन चक्रों पर प्रकाश दिलाई देने लग जाता है।

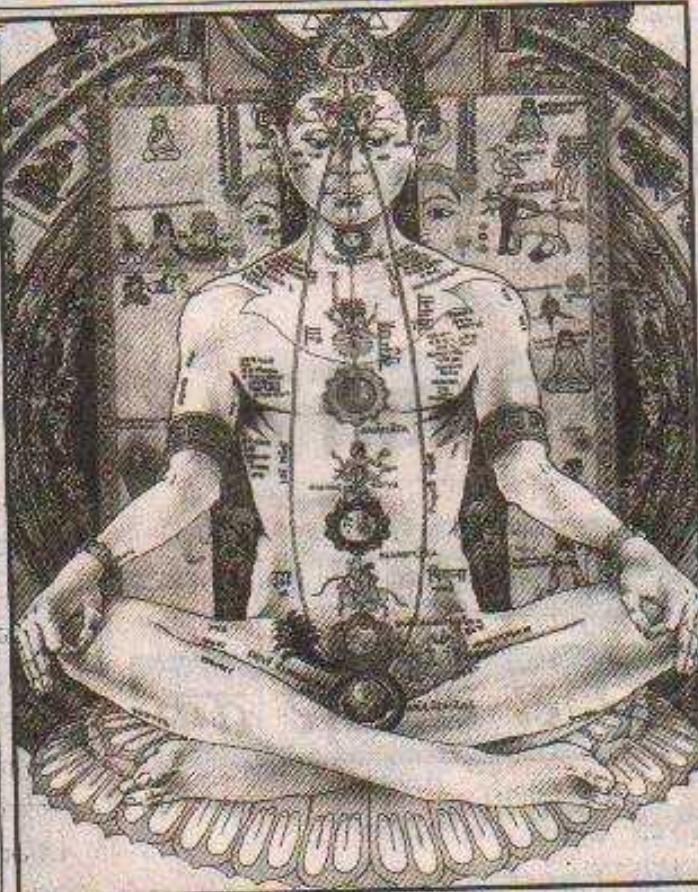
### कृष्णलिनी

#### जागरण के रूप

कृष्णलिनी जागरण के प्रारम्भ में आनन्दिक प्रकाश प्रकट

इडा नाड़ी में व्याप 'धन विद्युत' का पिंगला नाड़ी में व्याप नहीं होता किन्तु प्राण भपना कावे इन चक्रों में प्रारम्भ कर 'ऋण विद्युत' के साथ मानसिक शक्ति के द्वारा मुषुम्ना नाड़ी देता है, अर्थात् मूलाधार में स्थित अपान प्राण ध्यान की

देवता  
सुधार  
करना  
२-  
व  
सम्म  
शुक्र-  
अथवा  
विश्वा  
शानि  
करने  
चक्र  
पर त  
३-  
ह  
के स  
हजार  
निकल  
नाड़ि  
चक्र  
या  
सूर्य  
रस  
स्पष्ट  
शरीर  
मा  
संयुक्त  
कु  
दो च  
भाग  
और



का अनुभव होने लगता है।

शशीर ज्येष्ठ कई चक्रों का मूलाधार सुधारना है जो अस्यन्त सूक्ष्म, ज्ञानवाहक एवं गतिवाहक-नाड़ी धुगल के रूप में मेनुदण्ड के भीतर छिपी हुई रहती है, आगे चल कर वह नाड़ी धुगल-गुच्छक के रूप में बन जाती है, ये ही नाड़ी गुच्छक 'चक्र' कहलाते हैं।

### १- मूलाधार चक्र

यदि व्यक्ति ध्यान लगाने का अभ्यास करता है तो उसे यह चक्र जासुनी रोग का दिखाई देता है जिसमें लातिमा विशेष रूप से झलकती है, यह पृथ्वी तत्त्व प्रधान चक्र है जो हाथी के सूँड की तरह बना हुआ है, इसी को मूलाधार चक्र कहा जाता है, साधक की सर्वप्रथम यहाँ से अभ्यास प्रारम्भ करना चाहिए और अपने मन को ध्यानस्थ करके इस चक्र के दर्शन करने का प्रयत्न करना चाहिए।

प्रारम्भ में प्रयत्न करने पर साधक को दोष शिखा के समान रोशनी, धुंधला सा प्रकाश या कभी कभी ज्वाला रो भी दिखाई देने लगते हैं, कुछ साधकों को यह चक्र सर्प के आकार का भी ठोकर खाकर वहाँ की नाड़ियों को मरित करके मूलाधार से जाती है, कुछ साधकों को यह चक्र सर्प के आकार का भी ठोकर खाकर वहाँ की नाड़ियों के ऊपर जैरी गति या कम्पन दिखाई दिया है, और कुछ को शालियाम के काले पिण्ड जैसा करता है या कभी-कभी गर्भ जल के ब्रह्मे जैसी छिपा उत्तर चक्र पी अनुभव हुआ है प्रारम्भिक अवस्था में यहाँ पर कभी ही जाती है, कभी यह स्पर्श अस्यन्त शीतल होता है जिससे प्रकाश दिखाई देता है और कभी वह प्रकाश लुप्त हो जाता है।

सारा देव रोमाचित हो जाता है तो कभी प्राण की इस वेगबती है। अवस्था में साधकों के हाथ पैर वेग के साथ उठते बैठते हैं, इनके लगते हैं और कोई कोई साधक तो अपने आसन ये उत्तर कर दर जा दियता है, कई साधकों को ऐसी रिक्ति में घण्टे की आवाज या चिह्नियों की चीं दीं, ढोल, बोणा या मेघ गत्ता आदि के शब्द सुनाई देते हैं, ये सारी लिंगतियाँ इस बात की चोतक होती हैं कि साधक की कुण्डलियों जगत्ता की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है।

जब यह प्रकाश का वेग मूलाधार से ऊपर की ओर बढ़ता है तो धीर-धीर चित का सम्बन्ध देह से छूट कर अन्तर्जगत से गुड़ जाता है, तब उसके मन में एक उपर्युक्त शानि और ज्ञान-व

### प्रारम्भिक स्थिति

जब साधक प्राणायाम के द्वारा मूलाधार को स्पर्श करता है तो कई विचित्र अनुभव स्वभावतः होने लगते हैं, जैसे पर्याना आ जाना, भय से शरीर कंपित होना, अर्द्ध मुँह सी आ जाना, नसे रिंचना, पिण्डाब हो जाना अथवा प्राण निकलते हुए अनुभव होना आदि रिक्तियों प्रारम्भ में हो जाती है, इससे साधक को घबराना नहीं चाहिए, यदि ऐसी स्थिति हो जाय तो साधक को दो-बार रेचक प्राणायाम कर जैसे चाहिए जिससे कि यह सब कुछ शान्त हो जाता है, कभी कभी साधक को सुन्दर प्राकृतिक दृश्य देवताओं या सिद्धों के दर्शन और अच्छे दृश्य भी दिखाई

दे जाते हैं।

गुहा के ऊपर अन्दर गणेश चक्र तक बड़ी आत्मों का और सुमुम्ना के तुतुओं का संगठित रूप है “मूलाधार चक्र” कहलाता है, प्रायमध्य में प्रयत्न करने पर व्यक्ति इसके दर्शन में सहायक होता है वहाँ पर जब साधक अपने ध्येय कर सकता है।

## २- श्याधिष्ठात्र चक्र

यह चक्र मूलाधार से लगभग चार अंगुन ऊपर मेस्टदण्ड के सम्मुखी भाग में, मूकाशय, गर्भाशय, मलाशय के मध्य में जो शुक्र-कोष नामक शृंगी है, वहाँ पर देखा जा सकता है, सातिकि पिण्ड के भीतर एक छोटे से रिक्त में यह चक्र विशेषण है अवस्था में यह नीलम के कट्टरे से घरा गंगागल के समान यह रिक्त स्थान हाथ की सबसे छोटी उंगली के पंक्त के विश्वार्द्ध होता है, इसमें से समस्त देह नथा प्राणों की तृष्णा और शान्ति देने वाली धारा उठती रहती है, इस चक्र पर संयम करने से ब्रह्माचर्य साधन में विशेष सहायता मिलती है, इस पर वैराग्य युक्त भावना का प्रकाश ढाल कर साधक काम पर विनय प्राप्त कर सकता है।

## ३- मणिपुर चक्र

इसे “नाभि चक्र” भी कहते हैं, यह नाभि प्रदेश में मेस्टदण्ड के सामने स्थित है, भूमध्य का देह केन्द्र नाभि है, वहाँ पर हजारों नाड़ियों आकर मिली है और यहाँ से ये नाड़ियों पुनः निकल कर ऊपर-सीचे सभी अंग-प्रत्यंगों में जाती है, जिससे नाड़ियों का एक चक्र सा बन जाता है इसी चक्र को ‘‘मणिपुर चक्र’’ कहते हैं।

यह चक्र अज्ञि तत्त्व प्रधान है और इसका आकार उगते हुए सूर्य के सामान विश्वार्द्ध होता है, गर्भ में स्थित धूण को पालक रस इसी केन्द्र से मिलता है जिससे गर्भ बढ़ता है अतः यह स्पष्ट है कि इस केन्द्र के मार्ग से देह में प्रविष्ट होने पर सम्पूर्ण शरीर का विसान प्राप्त किया जा सकता है।

मणिपुर चक्र के दर्शन साधक ओं होने पर वह पूर्ण रूप से संयमित और योगी बन जाता है।

कुछ साधकों ने मणिपुर चक्र के पास सूर्य और चन्द्र नामक दो चक्र और माने हैं, सूर्य चक्र नाभि से कुछ ऊपर दक्षिण मार्ग की तरफ निशर में स्थित है, यह अज्ञि तत्त्व प्रधान है और यहाँ जब साधक ध्यानस्थ होता है तो हजारों सूर्य एक

साथ उगे हीं, ऐसा दिव्य प्रकाश दिखाई देता है।

“चन्द्र चक्र” नामि से कुछ ऊपर निल्ली या प्लौट्टा में स्थित है, वहाँ से रस निकलता है वह हमारे भोजन को पचाने कहलाता है, प्रायमध्य में प्रयत्न करने पर व्यक्ति इसके दर्शन में सहायक होता है वहाँ पर जब साधक अपने ध्येय को केन्द्रित करता है उसे अत्यन्त शीतल मन्द प्रकाश अनुभव होता है।

## ४- अनाहुत चक्र

सोने के दोनों फेफड़ों के मध्य रक्षाशय नामक गांस शुक्र-कोष नामक शृंगी है, वहाँ पर देखा जा सकता है, सातिकि पिण्ड के भीतर एक छोटे से रिक्त में यह चक्र विशेषण है अवस्था में यह रिक्त स्थान हाथ की सबसे छोटी उंगली के पंक्त के विश्वार्द्ध होता है, इसमें से समस्त देह नथा प्राणों की तृष्णा और शान्ति देने वाली धारा उठती रहती है, इस चक्र पर संयम करने से ब्रह्माचर्य साधन में विशेष सहायता मिलती है, इस पर वड़नी है तो उसे खिले हुए कमल की कलिका के समान यह चक्र दिखाई देता है, इसमें से शुक्र तार के समान प्रकाश निकलता हुआ अनुभव होता है और इसका रंग गुलाबी बायु प्रधान होता है, वहाँ पर ध्यान केन्द्रित करने पर साधक को आत्मा-परमात्मा का दर्शन होने लगता है और दिव्य नेत्र प्राप्त होता है, ऐसा दर्शन होने पर सात्त्वा की अनुभूति अहंकार रहित हो जाती है, सही रूप से देखा जाय तो जीवात्मा का निवास इसी स्थान में है, प्रमिल योगी श्री ऋरविन्द्र ने जीवात्मा की स्थिति यहाँ मानी है।

कुछ योगियों ने अनाहुत चक्र के दार्दी और विशुद्ध चक्र के नीचे दक्षिण स्तन के अन्दर एक मनश्चक्र की स्थिति मानी है जिसे “लोक्र माइन्ड” कहा जाता है, यहाँ पर प्रभाव देकर अन्तमन को जाग्रत किया जा सकता है।

## ५- पिथूद्ध चक्र

यह चक्र दृढ़व के ऊपर कण्ठ प्रदेश में हल्ली नामक हड्डी के अन्दर शाईराईड शृंगि के पास रक्षर बंत या टेटुए में है, यह चक्र अन्दर से सफेद और बाहर से आसमानी रंग का होता है, इसके सोलह छल्ले होते हैं, इसीलिए विशुद्ध चक्र को सोलह दलीय कमल कहा गया है, यहाँ से गान विद्या के आधारभूत स्वर प्रकट होते हैं, अतः यह मान्यता है कि यहाँ पर संयम करने से साधक दिव्य शुत बन जाता है, क्योंकि यहाँ स्वान शब्द ब्रह्म मध्यमा अवस्था या वैषुवी रूप कहा गया है, यहाँ पर ध्यानस्थ होने से व्यक्ति भूख-प्यास को होनेशा के लिए

समझ कर सकता है।

६ आज्ञा चढ़े

यह चक्र भूमध्य में स्थित ललट कोटर में है जहाँ लिंगाया का साधक बृहन मंजुराम लाला रहा। यह चक्र भूमध्य में स्थित ललट कोटर में है जहाँ लिंगाया का साधक बृहन मंजुराम लाला रहा। यह चक्र भूमध्य में स्थित ललट कोटर में है जहाँ लिंगाया का साधक बृहन मंजुराम लाला रहा।

के दृश्य को उखने में समर्थ हो पाता है यहीं ध्यान को केन्द्रित करने पर यिला के दर्शन होते हैं, यहां पर जब साथक ध्यानस्थ भी जाता है तो उसका ध्यूल देह का व्यवधान मिट जाता है और चिकित्सा ध्यान स्थित रिलॉक के दर्शन कर सकता है।

नव प्रायोगिक भव्यम् कर आज्ञा चक्र परे प्रकाश देखने में समर्थ हो जाता है नव वह प्रत्येक प्रकार का चंकल्प पूर्ण कर किसी भी प्रकार की अस्ति भास कर सकता है, इसी को शिव का 'तृतीय नेत्र' कहा गया है जिसके माध्यम से उन्होंने महान् दार किया था।

ग्रंथ के अन्दर हड़ा, चिंगला और सुपुत्रा नाडियों पर स्पर्श मिलता है और इसीलिए इसको त्रिवेणी-गंगम ज्ञान नेत्र वा ग्रामरी गहा भठ्ठा जाता है।

७—सहखार

इसे दशम लाप' ग 'ब्रह्माशन्ध' भी कहते हैं, यह स्थान  
जनपदियों वे दो-दो दुर्च उमड़र अक्षरी से लगभग तीन इय  
उमड़र, बड़े मर्मितक स्थित महाविवर नामक भवाणिद्र में एक  
ज्योति पूर्ण के रूप में स्थित रहता है यह ऊपर सूर्य के समान  
प्रकाशमान और अन्दर से मर्करी लाइट के समान दिखाई देता  
है, सही रूप में जीवात्मा का भाष द्वारा यहाँ है, और उसले  
योगी सहवार पर अधिकार प्राप्त कर सकते हैं, योग शास्त्र में  
कहा गया है कि जो योगी सहवार में स्थिति प्राप्त कर लेते हैं  
वे पूर्ण रूप से स्वच्छउन्द्र, शोक और बेधन से मुक्त होकर  
मनोवाणित योग्य प्राप्त कर सकते हैं, मृत्यु इनके नियन्त्रण में  
होती है और जब चाहे तभी मृत्यु इनके पास आने की हिम्मत  
कर सकता है, ऐसे धोगियों को अणिमादि अष्ट मिदियाँ  
नवनिधियों और समरत प्रकार की विभूतियों प्राप्त हो जाती हैं  
ऐसा भावक परम विज्ञानी त्रिकालदर्शी बन जाता है।

वन्ननु: ऐसा जीवन ही वास्तविक श्रेष्ठ और दिव्य जीवन

कहा जा सकता है कि स्व प्रश्नों से या गुरु-कृपा से अद्यता शक्तिवान् के माध्यम से कृष्णतिनी जागरण कर मानव जीवन का सार्थक करने में लग्नीत होता है।

भाषणकों को कृपटननी जागरण के सम्बन्ध में कई प्रश्न भने में उत्तर है। सदसुग्रेव ने अपने एक प्रवचन में इन प्रश्नों को उपर्युक्त किया था।

**प्रश्न :** कृष्णलिंगी का जागरण हुआ या नहीं, इसे किस प्रकार से जाना चाहिए?

**उत्तर :** कृष्णलिनी जागरण शरीर के अन्दर स्थित चक्रों का उत्पादन और चेतना युक्त होता है। कृष्णलिनी जागरत होते ही व्यक्ति की बुद्धि बढ़ जाती है, और गुहरस्य के प्रति सोह में न्यूनता होने लगती है, उसमें ईर्ष्या और क्रोध की मात्रा कम होती जाती है।

इससे भी ज्यादा सही पाठ्यान यह है, कि यब साथक की कुण्डली मूलधार चक्र से आगे की ओर बढ़ने लगती है, तो व्यक्ति 'उभयो भवस्य' में हो जाता है, अर्थात् उसका भार ध्यन सारा चिन्तन, गुरु की ओर स्वतः लगने लग जाता है, सोने बैठते, लाते, पीते एक ही लगन होने लगती है, इसरे बढ़ने में उसका चेतना ध्यान से ऊपर उठ जाती है।

जब कृष्णनीं जागरण होने लगता है, तो उसकी अवस्था और दिननम प्राणमय हो जाते हैं, उसके अन्दर विशेष प्रकाश पूट पड़ता है, और समर्थ्य के अनेक स्रोत बढ़ने लगते हैं, कोई कथि बन जाना है, तो किसी को संगीत की धून लग जानी है, कोई खोया खोया सा बैठा रहता है, तो कोई साधन में द्रव जाता है, एक के बाद एक कई प्रतिमाओं का उदय होने लगता है, एक प्रकार से उसकी अवस्था बिना किसी बाढ़ नशे जैसी रहती है। जब कृष्णनीं मूलाधार से आगे बढ़कर स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत और आज्ञा यक्ष की ओर धीरे-धीरे ऊपर उठती है, तो उसके इदय में बैची, तड़फ, बदलां, जाती है उसकी इच्छा गुरु या इष्ट के चरणों में बिन-रात है बढ़ने की, उनसे बहुत बातें करने की, उनके साथ धुमगिल

जाने की होती है, ऐसी स्थिति में साधक अपने दृष्टि में बढ़ता होता है।

के पहुंचते ही उनकी "काम शक्ति" का उदय होने लगता है, और स्वायिष्ठान में कुण्डलिनी के पहुंचते ही उनकी काम शक्ति का उद्दीपन तीव्रता के साथ हो जाता है, मणिपूर तक पहुंचने पर साधक में भोजन और भोग की प्रवृत्ति बढ़ जाती है, अनाहत चक्र में कुण्डलिनी के प्रवेश पर साधक में प्रेम, करुणा, वया, स्नोह आदि भवद्वृत्तियों का विकास तीव्रता के साथ होने लगता है, कुण्डलिनी जब विशुद्ध चक्र में प्रवेश करती है, तो उसमें जनरता, बुद्धिपा और मृत्यु के लक्षणों का अभाव होने लगता है, बुद्धिपा दूर होने लगता है, सूरियों मिटने लगती है, शरीर निरोग होने लगता है, ऐसा लगता है, मानो उसका शरीर योग-आग्नि में जल कर निर्मल हो रहा है। इसके बाद जब कुण्डलिनी जाग्ना चक्र में आती है, तब साधक को देव दर्शन और दिव्य प्रकाश दिखाई देता है, उसे ८४ सिद्धों तथा ६४



योगिनियों के दर्शन होते हैं, उसके सामने सिद्धाश्रम साकार परन्तु उसके कर्तव्यों में कोई अन्तर नहीं आता, मेरे कड़े पैरों होने लगता है, और बढ़ बैठा बैठा सिद्धाश्रम के प्रत्येक स्थल विष्य है, जो गृहस्थ में है, और गृहस्थ के पूरे कर्तव्यों का को और उसमें नियन्त्र प्रकाश को देख पाना है, इसके अलावा पालन करने हुए उन्होंने कुण्डलिनी जाग्रत कर भहन्नार तक चलकर कुण्डलिनी सहस्रार की ओर बढ़ जाती है, फलमनस्य पहुंचाई है, पिछले ही दिनों में एक अधिन ने गृहस्थ के सभी वह इच्छागमन सिद्ध हो जाता है, इस प्रकार साधनाकाल में उत्तरदायित्वों का सिद्धाह करते हुए सहस्रार तक कुण्डलिनी विभिन्न अनुभूतियों के माध्यम से हमें जात होता है, कि हमारी पहुंचाकर सिद्ध अवस्था प्राप्त की है, पहले भी वह गृहस्थ श्री, कुण्डलिनी जाग्रत ही रही है या नहीं, और फिर वह किस स्तर पर पहुंची है।

**प्रश्न :** क्या गृहस्थाश्रम में रहते हुए कुण्डलिनी जागरण अभ्यास किया जा सकता है?

**उत्तर :** तुम्हारी नजर में यदि गुरु कोई शरीर है, हाथ मांस का नहीं है, कुण्डलिनी जागरण के लिए कोई भी आश्रम साधक पुनर्जना है, तो तुम्हारा चिन्तन अधूरा है गुरु जो ज्ञान को कहने नहीं है, आवश्यकता इस बात की है, कि इस आनन्दरिक दृष्टि है, उस ज्ञान पर मांस, त्वचा आदि का आवश्यक होकर वह से इस कार्य के लिए तैयार हो, यह अवश्य है जब कुण्डलिनी भनुष्य स्तर में दिखाई देता है, परं बिना सही ज्ञान प्राप्त किये मूलाधार से आगे बढ़ना है, तो परिवार के प्रति उसका भोग कुण्डलिनी जागरण किये प्रकार से संभव है, तब जग से कम कुछ कम हो जाता है, बढ़ एकान्त में रहना चाहता है, वह समय में उन्मनी अवश्य प्राप्त करें, कुण्डलिनी जागरण उसी चाहता है कि उसे कोई घेंडे नहीं, व्यर्थ में परेशान नहीं करे, प्रकार से होता रहे, इसका बोध कीन करायेगा? कुण्डलिनी

जागरण होने पर स्वतः ही साधक के हृदय में गुरु के प्रति चल सकता, सेवा के द्वारा सामने वाले के हृदय को स्पन्दित स्नेह तथा आदर उमड़ पड़ता है, उसकी प्रत्येक क्षण की यही कर उसके द्वारा वह शक्तिपात निःशुत कर ग्रहण कर लेता है, इच्छा रहती है, कि वह जन्मी से जन्मी गुरु चरणों में पहुँच और इस प्रकार वह बिना योगाभ्यास और साधना के द्वारा इच्छा रहती है, कि वह जन्मी से जन्मी गुरु चरणों में कुण्डलिनी जाग्रत कर उसे सहस्रार तक पहुँचा सकता है।

आपने शरीर में समाहित कर ले। नगरण ऐसी ही विचारधारा प्रश्न : जब सामृद्धिक शक्तिपात होता है, तो इसने देखा है कि उसके मानस में उमड़ने लगती है, और वह जैसे ही समय कुछ ध्यान मन्न हो जाते हैं, कुछ जोरों से चोखने लग जाते हैं, मिलता है, दौड़कर गुरु के चरणों में पहुँच जाता है, वहाँ जाने कुछ को विद्य दर्शन और सिद्धाश्रम दर्शन हो जाता है, पर पर उसे पूर्ण सन्तोष मिला है, उसे असीम शीतलता का कुछ व्यक्तियों को कुछ भी अनुभूति नहीं होती, जब कि शक्तिपात उनुभव होता है, यह सब गुरु होने पर ही सम्भव है, बिना गुरु तो सब पर समान रूप से होता है, ऐसा क्यों है?

के सहस्रार तक कुण्डलिनी पहुँचने की कल्पना शी नहीं की जा उत्तर : इसका कारण यह है कि व्यक्ति अपने संस्कारों से ब्रह्म हुआ है उसमें सद्वृत्तियों और असद्वृत्तियों का संघर्ष बराबर बलता रहता है जिन लोगों के हृदय पर असद्वृत्तियों का प्रभाव ज्यादा होता है, वे बृद्धि से पन्थर की तरह सख्त होते हैं, आद्वानात्मक गांधा उनमें कम होती है, जबकि कुण्डलिनी जागरण में सद्वृत्तियों का विकास प्रारम्भिक बिन्दु है।

कभी पूर्व जन्म के संस्कारों के कल्पस्वरूप भी मूलाधार में कुण्डलिनी चैतन्य दी जाती है, और वह आगे की ओर बढ़ने लगती है, ऐसी स्थिति में वह स्वयं या उसके घर वाले नहीं समझ पाते कि उसमें यह परिवर्तन क्यों आ रहा है? वह बिना नशा किये ही नगरण नशे जैसी हालत में रहने लग जाता है, तब अज्ञानी लोग भूत-प्रेत या बीमारी आदि की कल्पना कर लेते हैं, ऐसी स्थिति में भी गुरु के गांगदर्शन की आवश्यकता है।

प्रश्न : क्या शक्तिपात में कुण्डलिनी जागरण सम्भव है?

उत्तर : शक्तिपात अपने आप में पूर्ण प्रक्रिया है, मूलाधार से लगा कर सहस्रार तक पहुँचने की जो क्रिया है, थिं उसका यह अवश्य है कि उनके चिता पर शी सामृद्धिक शक्तिपात का सत्त्व निकाला जाये तो वह शक्तिपात ही है, शक्तिपात शब्द तो प्रभाव अवश्य पहुँचता है, यह अलग बात है कि वे इस शक्तिपात सुहावना है, परन्तु कितने लोगों को इसका ज्ञान है।

शक्तिपात तो नीबू और आगूलचूल परिवर्तन की प्रक्रिया है, जो एक ही शाटके से साधक को कुण्डलिनी को मूलाधार से उठा कर सहस्रार तक पहुँचा देती है, और उस साधक को सिद्धों और योगियों के दर्शन होने लगते हैं, सिद्धाश्रम की विद्य प्राण वायु को वह अपने अन्दर समाहित करने लगता है प्रश्न : क्या महिलाएं भी कुण्डलिनी जागरण कर सकती हैं?

सेवा का नात्य है, अपने आपको समर्पित कर देना, अपने की वजह से उनके आध्यात्म में न्यूनता रह जाय अपवा रजोकाल अस्तित्व को पूरी तरह से निटा देना, अपने आपको सम्मने में वे नियमितता न बरत सके, परन्तु ये उनके जीवन की वाले में निगमन कर देना, एकाकार कर देना यह स्थिति भी बाधाएं नहीं हैं, प्रबल और अभ्यास द्वारा पुरुषों की अपेक्षा वे प्रबल से ही सम्भव है सेवा में कृतिमता और दिखाव नहीं जन्मी सफलता प्राप्त कर सकती है।

# शिष्य धर्म

- गुरु कोई शरीर नहीं, वह तो आड्यात्मिक ज्ञान का भट्ठार है परंतु उस ज्ञान को संसार ने विस्तारित करने के लिए गुरु को शरीर धारण करना ही पड़ता है। अतः यह शिष्य का पद्धन धर्म है कि वह मुहूर्के लिए इस प्रकार से सहायक बने जिससे वे अपना ज्ञान विस्तार कर्ये भली भाँति से संपाद कर सकें।
- शुरु के वरण घबे या जय गुरुदेव के धोम जाप से शिष्य का सर्वर्ण शिद्ध नहीं होता शिष्य का वास्तविक कर्तव्य है कि वह गुरु के कार्यों में सहायक बन कर उनके कार्यों के लोकों को हल्का करे।
- यह सच है कि गुरु शिष्य से सेवा करवाता है कुछ विशेष कार्य सौंप कर। परंतु शिष्य को ये कार्य करते समय हमेशा यहीं भाव रखला चाहिए कि मैं कार्य नहीं कर रहा हूँ, यह तो मेरे माध्यम से स्वयं गुरुदेव कार्य कर रहे हैं। ऐसे भाव से व नेत्र उसका अहं गलेना अपितु वह कार्य को भी बेहतर प्रतिपादित कर पाएगा।
- सभी साधनाओं में उच्चतम साधना गुरु सेवा है अतः शिष्य साधना न भी कर पाए, संत्र जप भी ना कर पाए तब भी उसे गुरु सेवा में संलग्न होना ही चाहिए। यहीं उसका वास्तविक धर्म है।
- गुरु के मैट दबाना, या गुरु को हाथ पहनाना या गिरावृ भैंट करना गुरु छोका नहीं। ये शिष्य का गुरु के प्रति धैर्य का प्रमाण मात्र है। वास्तविक गुरु भेगा है गुरु की आज्ञा पालन करना तथा उस कार्य को पूर्ण करना जो गुरु ने उसको दीप्ति दी है पह कार्य कोहँ भी कर्यों न हो।
- शिष्य का धर्म है कि वह व्यर्थ के बाद विवाद या चिंतन में व पड़कर पूर्ण तत्त्वीय होकर गुरु सेवा करे। अन पर पूर्ण नियंत्रण प्राप्त करने का गुरु जीवा से अच्छा कोई माध्यम नहीं है।
- गुरु की आलीपठा या गिंदा करना या शुगजा सद्ये शिष्य के लक्षण नहीं। गुरु एक उच्च धरातल पर हीं हैं इसलिए उनके व्यवहार की समझ पाजा राखें जहीं। शिष्य का तो धर्म है कि वह इस और ध्याल न दे कि गुरु बचा कर रहे हैं अपितु इस बात पर जीर दे कि गुरु ले उसे बचा करते को कहा है।
- गुरु तो स्वयं शिव है, यहीं भाव लेकर अगर शिष्य चलता है तो एक दिन स्वयं शिवतत्व उसमें समाहित हो जाता है। गुरु का यहीं उद्देश्य है कि शिष्य को शिवतत्व प्रदान करें। इसलिए इसी चिंतन के साथ शिष्य को गुरु का स्मरण करना चाहिए।

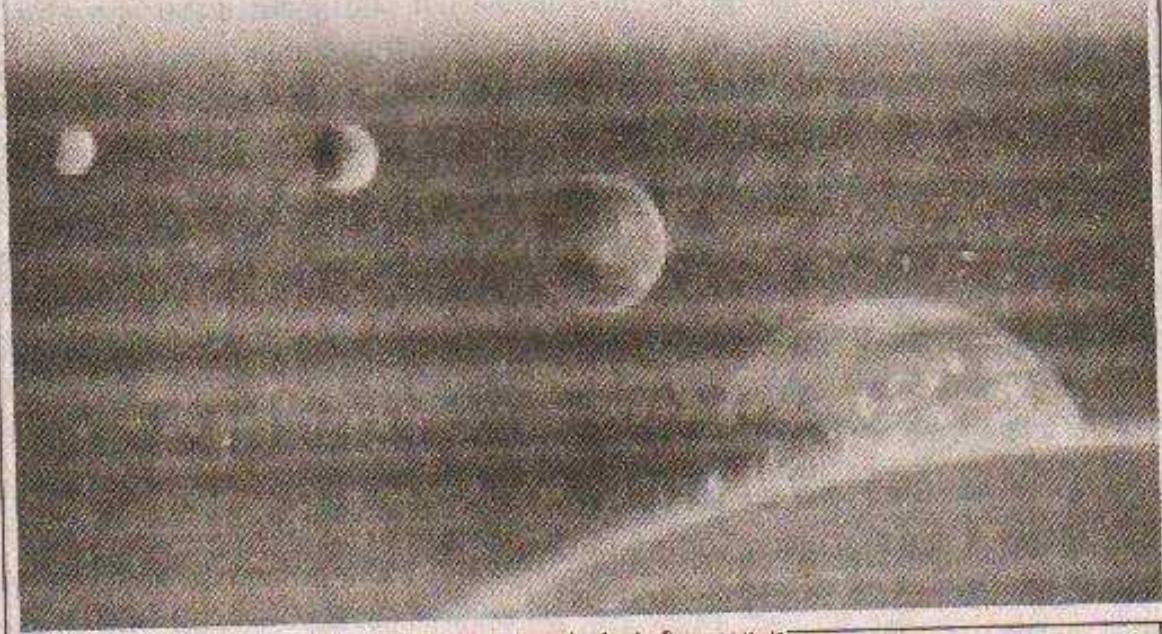
# गुरुवारी

◆ गुरु और तुम में अंतर यही है कि तुम हर हालत में दुखी होते हो जबकि गुरु को सुख-दुख दोनों ही व्याप नहीं होते, वह दोनों से परे है, और तुम्हें भी उस उच्चतम स्थिति पर ले जाकर खड़ा कर सकता है जहां दुख, पीड़ा तुमको प्रभावित कर ही नहीं सके।

◆ आप अपने को धन या दैनिक पाकठ लूटवी मानते नहों हैं क्योंकि आपने अभी वाटत्विक दुख को देखा ही नहीं। इन दुर्योगों के पीछे भालकठ आप अंततः दुख ही पाते हैं। जोब तो दुख ही पैदा हो सकता है जबकि जुल तुम्हें उस दुख से दृष्टिविन बाहता है जो अंतिम है, जो उथायी है।

◆ तुम सोचते हो कि शादी करके सुखी होंगे या धना प्राप्त करके सुखी होंगे। सुख तो उसी क्षण संभव है, वह धन पर निर्भर नहीं। वह वास्तविक आनंद तुमने नहीं देखा, नहीं देखा इसीलिए तुम धन को ही सुख मान बैठे हो जबकि उससे केवल तुम्हें दुख ही प्राप्त होता है।

◆ वास्तविक सुख तुम्हें तब ही प्राप्त हो सकता है जब तुम अपने आप को पूर्ण रूप से गुरु में समाहित कर दोगे और वह हो गया तो फिर तुम्हारे जीवन में कोई अशाव रह ही नहीं सकता, धन तो एक छोटी सी चीज है। पूर्णता तक तुम्हें कोई पहुंचा सकता है तो वह केवल और केवल गुरु है।



◦ गुरु के समने सभी देवी-देवता हथ बांधे रहे  
रहने हैं यह चाहे तो शण मात्र में तुम्हारे सभी कष्टों को  
दूर कर दें। तो करना क्यों नहीं? गुरु तो हर शण तैयार  
है, तुम्हीं मैं समर्पण की अवृत्ति है, जिस शण गुरु के तुमने  
अपने हृदय में स्थापित कर लिया उस शण से दुख तुम्हारे  
जीवन में प्रवेश कर ही नहीं सकता।

◦ तुमने एक शरीर को गुरु मान लिया है, गुरु  
तो वह तत्व है जिससे जुड़कर तुम उन आयामों को  
स्पर्श कर सकते हो जिनको भास्त्रों ने पूर्णमादः  
पूर्णमिदं कहा है। उसके लिए गुरु के शरीर को नाहों  
में लेने की ज़रूरत नहीं। मावश्यकता है कि तुम  
अपना मन उनके वरण कमलों में समर्पित करो और  
वह हो पाएगा के बल और के बल मात्र गुरु सेवा से  
और गुरु भंत्र जप से।

◦ गुरुक भंत्र ती ब्रह्माण्ड का काढ़करी तेजबकी उर्वं  
प्रचण्ड भंत्र है, एक दैवी शक्ति है जिसके अमङ्क  
कमी शक्तियाँ न अप्य हैं। पूर्वे ब्रह्माण्ड की तेजबिवता  
उनमें लभार्ह फुर्ह है और उनके जप के द्वारा तुम  
अपले अंकव के ब्रह्माण्ड की लुक तत्व ने जीड़ कब  
पूर्ण आनंद को प्राप्त कर लकते हो।

श्रद्धा जागरूकता

एवं

धर्मकरण सिद्ध प्रदान

## प्रत्येक विशेषज्ञ साधना

\* \* \* \* \*

भगवती दुर्गा के विभिन्न रूपों में प्रत्येक विशेषज्ञ के अपने जीवन में सम्पन्न है, कि प्रत्येक साधना सम्पन्न कर लेता है उसे जीवन में कभी भी शत्रु बाधा साधक को अपने जीवन में इस विशेषज्ञ साधना को अवश्य का सामना नहीं करना पड़ता। शत्रुओं की शक्ति उसके सामने सम्पन्न करना चाहिए, जिससे उसके जीवन में शत्रु बाधा, निरन्तर कम होती रहती है तथा राजकीय बाधाओं का भी राजकीय बाधा, भय समाप्त हो सके और दृश्यों को वशीभूत करने की शक्ति प्राप्त हो सके।

इस साधना की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह "वशीकरण सिद्धि प्रदायक साधना है" महा गन्धों में इस साधना के सम्बन्ध में बहुत कम विवरण आया है, इस साधना के संबंध में साधक उच्छने में अपने शत्रुओं के निवाश संबंधी जो इच्छा धारण करता है साधना समाप्ति के कुछ समय बाद ही उसका कार्य सफल हो जाता है।

वर्तमान युग में प्रत्येक व्यक्ति अपने शत्रुओं से किसी न किसी रूप से परेशान अवश्य रहता है और जीवन में राजकीय बाधाओं का भी सामना करना पड़ता है, जिससे उसके कार्यों में निरन्तर स्कावट आती रहती है और उसकी उत्तरी उस गति से नहीं हो पाती जिस गति से वह कार्य करता है, प्रत्येक कार्य में किसी न किसी प्रकार की बाधा का सामना करना पड़ता है।

तांत्रिक ग्रन्थों में यह स्वीकार विद्या गया है कि कलियुग में प्रत्येक विशेषज्ञ साधना तुरन्त प्रभाव युक्त है, कई बार तो साधक को साधना पूर्णता से पहले ही उसके मत के अनुकूल समावर प्राप्त होने लगते हैं।

"शक्ति मीमांसा" धन्य में कहा गया है कि जो साधक प्रत्येक विशेषज्ञ कर लेता है उसे जीवन में कभी भी शत्रु बाधा साधक को अपने जीवन में इस विशेषज्ञ साधना को अवश्य का सामना नहीं करना पड़ता, शत्रुओं की शक्ति उसके सामने सम्पन्न करना चाहिए, जिससे उसके जीवन में शत्रु बाधा, निरन्तर कम होती रहती है तथा राजकीय बाधाओं का भी राजकीय बाधा, भय समाप्त हो सके और दृश्यों को वशीभूत करने की शक्ति प्राप्त हो सके।

शक्ति करने की सोच लेता है, उसका वह कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होता रहता है और व्यक्तिगत में भी एक विशेषज्ञ चमक आ जाती है, गन्धों में यह विवेचन है कि इस साधना को पूर्ण एकाग्रता से निष्ठापूर्वक सम्पन्न करना चाहिए और साधना प्राप्ति करने के पश्चात उसे नियमित रूप से मंत्र जप अवश्य करना चाहिए।

मेरे अनुभव में यह आया है कि यदि साधक को किसी प्रकार की बाधा परेशानी जयन्ता अड़चन हो, सरकारी कार्य लके हों, या कार्य सिद्धि नहीं हो रही हो, प्रथलन करने पर भी हम जिस प्रकार से कार्य सम्पन्न करना चाहते हैं, उस प्रकार से सफल नहीं हो रहा हो तो वह साधना अपने आपमें अद्भुत, सिद्धिदायक और जरक्षण सफलतादायक है, वास्तव में ही जब-जब मेरे जीवन में अत्यन्त बाधाकारक समय आया हो मैंने प्रत्येक विशेषज्ञ साधना का ही साधारा लिया और मुझे अत्यन्त अनुकूल परिणाम प्राप्त हुए, राज्य नंकट, राज्य बाधा, शत्रुओं पर विजय और गणोव्रातित कार्योंसिद्धि के लिए यह साधना सर्वाधिक उपयुक्त है।

三三行

वे जो भगवती दूर्गा के इस विशिष्ट संहारक रूप प्रत्यंगिरा  
मालन को कभी भी सम्पन्न किया जा सकता है, अष्टमी या  
वल्लभ्या की रात्रि में यह साधना सम्पन्न की जाय तो सर्वाधिक  
उत्तम रहता है, पुष्ट नक्षत्र के दिन इस साधना का समापन  
करना चाहिए।

—२८८—

जास्ती के अनुसार साधना स्थल शुद्ध और पवित्र करने के लिए गंगा नदी से धो लेना चाहिए या शुद्ध पानी में पवित्र कर देना चाहिए, फिर साधना स्थल पर ही लकड़ी का बाजोट लड़ना चाहिए और उस पर लाल वस्त्र बिछा कर उसके मध्य वे लाल चावलों की ढेरी पर एक दीपक लगाना चाहिए, यह दीपक इस प्रकार आ हो जिसमें आठ बलियां हों जो कि अष्टदर्शी का प्रतीक है, पूरा मंत्र जप इस दीपक पर ध्यान बँटाने करना है।

उस बाजोट पर बोच में दीपक स्थापित हो और बाजोट के बारे कोनों पर चार चावल की ढेरियां बना कर प्रत्येक ढेरी एक-एक सुपारी रखें, ये सभी मढ़वीर हैं जो कि कार्यसिद्ध में पूर्ण सहायक हैं, दीपक के दाढ़ियों और गणेश और बाई भेल क्षेत्रपाल को स्थापित करना चाहिए और इनकी स्थापना जी चावलों की ढेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर गणेश नदा क्षेत्रपाल की भावना रखते हुए स्थापना करनी चाहिए।

इसके बाद दीपक और साधक के बीच लकड़ी के ब्रागोट पर ही एक पात्र में 'प्रत्यंगिरा यंत्र' को स्थापना करे, इसके अलावा जल पात्र, केसर, कुंकुम, चावल, नारियल, पृथ्य, फल, प्रसाद, चरसों तथा काले तिल पहले से ही ला कर रख देने चाहिए, दीपक में सरसों के तेल का प्रयोग करना चाहिए।

साधक स्त्री

कर बैठ जाय और फिर सर्वप्रथम कुकुम तथा केमर को मिलाकर दीपक की पूजा करें।

ॐ नमो भजदते प्रत्यगिरा दीप ज्योति त्रिकोण  
संस्थे अखण्ड ज्योति, अखण्ड त्रिशतकोटि देवता  
मालिनी-निर्मल, अर्ध-रात्रि, निगमस्तुते, ज्वला  
मालिनि दीप ज्योति, सर्व कार्य सिद्धि कुरु कुरु  
नमः ।

उसके पश्चात् करन्यास, तथा अंगन्यास करें -

ॐ एं श्री हरे अंजुष्टाम्या नमः

ॐ एं श्रीं हो तर्जनीमयां नमः

ॐ ऐं श्री हौ मध्यमाभ्यां जसः

महाराजा श्री ही भवामिकाद्यां लक्षणः

ॐ ऐं श्री हौं कलिलिकाम्भां नमः

ਅੰਮ ਸੇ ਥੀ ਹੀ ਕਰਵਾਂ ਕਉ ਪਲਾਵਾਂ ਤਾਂ

ਗੁਰੂ ਕੁਰਾਨ ਵਿਖੇ

३८ श्री ही शिवले लक्षण

ॐ ए श्री ही शिस्थावै स्त्राहा

ॐ ऐं श्री होै नेत्रतथाय वस्तु

अँ एं श्री हौं अस्त्राद्य कट

इसके पश्चात् 'प्रत्यंगिरा यंत्र राज' को कुकुम से भिगोकर अपनी पृष्ठीया निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए समर्पित किया जाता है। इससे कि यह आपके लिए पर्याप्त प्रामाण्यशाली हो सके।

२८८

उमे जस्तो प्रत्यंजिरा सर्वकामना सिद्धि  
हाँ हाँ जस्तो।

इसके पश्चात् साधक अपने गुरु के वित्र को स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन करें और गुरु चरणों का ध्यान कर यह इच्छा प्रकट करें कि उसे प्रत्यंगिरा साधना में सिद्धि प्राप्त हो।

इसके बाद सामने जो धीपक रखा हुआ है, उस धीपक के सामने वाली झ्योति पर प्रत्यंगिरा देवी का ध्यान निष्ठालिखित विशिष्ट मंत्र से करें, उस समय शरीर की सारी धक्कियाँ केन्द्रित कर पूर्ण ध्यान से यह मंत्र जप करना चाहिए, मंत्र जप के समय अपना ध्यान विचलित न करें।

211

ॐ हौं हूं हः ही प्रत्यंगिरा नमः कृष्ण वाससे क्षेत्रे  
 सहस्रलक्ष कोटि सिंहवासने पिं सहस्रवदने महाबसे  
 अष्टादशभुजे हः अपदाजिते हैं परस्तेवय  
 कर्मविधासिनी हंसः पर-मंत्रोच्छेदनी  
 सर्वशत्रुचाटिनी प्ये सर्वभूतदमनी ठः ठः सर्वदेवाल्  
 वध वध हुं फट सर्व विष्मानि छिन्थि छिन्थि  
 सर्वमिर्यान् निकृतीय सर्वदुष्टान् भक्ष भक्ष  
 प्रें ज्वाता जिहवे हौं करातवदवत्रे हंसः परब्रह्माणि  
 स्फेदय सर्वशुच्चाता क्रोटय क्रोटय असुरसुदां द्रायव  
 द्रायव उं रौद्रमूर्ति ही प्रत्यंगिरे महावि सम मंत्रार्थ  
 कुरु कुरु नमोस्तुते हः हुं ही ॐ नमः ॥

कई बार सामन्य साधकों को हस्त विशेष ध्यान के उच्चारण के समय मेरुदण्ड में एक अजीब सी हलचल और सिरहन प्रारम्भ हो जाती है, और मस्तिष्क में रक्त का प्रवाह तीव्र

डोता हुआ अनुभव डोता है, वह स्थिति आने पर साधक को किसी भी प्रकार धबराना नहीं चाहिए और ज्यारह बार, २१ बार अयत्रा ५१ बार इस विशेष स्थान का जप करना चाहिए, जप की पूर्णता होते-होते ऐसा आभास होता है कि विशेष शक्ति प्रवाहित हो गई है, यह अनुष्ठान और मंत्र मिल हो जाने पर पूरे जीवन भर इसका प्रयोग स्वयं पर, अपने परिवार के सम्बन्धों तथा निसी के लिये भी किया जा सकता है।

इस विशिष्ट साधना को सिद्ध करने के पश्चात् यदि शत्रु बाधा अल्पन्त गंभीर हो तो थोड़ी सी अग्नि किसी पात्र में स्थापित कर पीली सरसों को आहुति इस विशिष्ट कवच का जप करते हुए देनी चाहिए, अग्नि में सरसों की आहुति देने समय साधक को 'शत्रु क्षय' उच्चारण कूपरी ओर मुह करके करना चाहिए, ऐसा करने से शत्रु का प्रभाव समाप्त हो जाता है, यदि किसी को भूत-प्रेत उपद्रव डो तो तांबे के पात्र में थोड़ा ला जल ले कर इस कवच का एक बार उच्चारण कर वह जल उस पर छिड़क दें, तो तुरन्त भूत-प्रेत उपद्रव से शान्ति मिल जाती है, यदि किसी को अपने अनुकूल बनाना हो तो उस व्यक्ति का ध्यान कर हाथ में जल लें, तथा इस मंत्र का ज्यारह बार जप करें, प्रत्येक मंत्र के जप के समय उस व्यक्ति का नाम ले कर प्रत्यंगिरा मंत्र जप करें, वर्शीकरण प्रयोग हेतु काले तिल की आहुति दें।

"ऐं वर्तीं हंसो प्रत्यंगिरा मम वश्यं कुरु कुरु हों  
संशोष्ट रुद्रहा"

यदि एक बार के प्रयोग में सफलता न मिले तो कूपरी, तीतरी या चौथी बार भी यह प्रयोग सम्पन्न किया जा सकता है।

इस साधना की मिलिए पूर्ण रूप से प्राप्त करने हेतु नियमित रूप से इसके मूल मंत्र का जप छोटे मनकों वाली खण्डक माला से या काले मनकों वाली हड्डीकी माला से करना आवश्यक है, इस साधना हेतु जो माला प्रयोग में ली जाय वह माला किसी दूसरी भाधना के संबंध में प्रयोग में नहीं ली जा सकती है, मूल मंत्र निम्न प्रकार से है -

॥ उठे हो श्री हंसके हंसः प्रत्यंगिरा नमः ॥

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में इस विशिष्ट कवच के सम्बन्ध में अत्यन्त प्रशंसा की गयी है, प्रतिदिन प्रातः प्रत्यंगिरा स्नोन का जप नियमित रूप से करने से मानसिक ब्रेष्टता प्राप्त होती है, व्यस्तित्व में विशिष्टना प्राप्त होने के साथ ही शत्रु हनि का मध्य नहीं रहता है, और निरन्तर एक विशिष्ट शक्ति शरीर में प्रवाहित होती रहती है।

प्राचीन ग्रन्थों से तथा अपने गुरु से प्राप्त इस प्रत्यंगिरा स्नोन को अपने मूल रूप में साधकों के सम्मान दें रहा है।

### त्रैलोक्य विजय प्रत्यंगिरा कवच (मूल)

जयघ्रस्मभीमाकारा वाहस्ववदनाभिता ।  
जत्परिजल स्तोताक्षी ज्वाता जिहा च नित्यशः ॥  
निष्ठुरात् वृथयेददेवी तत्क्षणं ज्ञानपाशके ।  
भक्टो भीषणात् वत्स्यात् वत्से पाद् प्रहारतः ॥  
वामेशी मर्दनो वंडो उक्षिणो वद्र भीषणो ।  
प्रेत शिर करोरुद्ग इयानोदामर मारके ॥  
अन्तं तक्षको देव्या कंकणं च विराजते ।  
वासुकि कंठहारश्च कक्षिटि कटिमेखता ॥  
शिलष्टो यश महापश्चो पाषां कृत नुपुरौ ।  
रुडंमास करो भूषा जौणशो कर्णमडले ॥  
गृहा भेत्रयटेघृत्वा जातात् दान्तव श्रातिनी ।  
स्वयं लैन्याभयदादेवी परस्तेन्द्र भवंकारी ॥  
ज्ञे वक्षी रस्तिलन्नराक्षसज्जणे लो शाकिनी शंकरे ।  
त्वे या चेटक चेटकेन्द्रं महाभूते प्रभूतैरपि ॥  
त्वापि व्यंतर मुद्गरे पलशज्येन्नो मंत्रवत्रे यरे ।  
देवीत्यं वरणार्चतां परिभ्रवः प्रत्यंगिरं शक्षयते ॥

यदि इस कवच का पात्र करना हुआ जो साधक एक पुरुष चरण सम्पन्न कर लेता है (अम कवच का एक हजार बार पाठ करने से एक पुरुषचरण सम्पन्न होना है), तो प्रत्यंगिरा उसके वर्णीयमूल होकर मनोवाङ्गित फल प्रदान करती है, पुरुषचरण सम्पन्न उस कवच को धोज पत्र पर लिख कर और उसे तांबीन में भर कर अपने गले या बाहिनी चुगा पर बांधने से मनोनुकूल फल प्राप्त होता है।

**आप अपने दो मिलीं को पांचका  
सदस्य बनाएं तथा कार्ड ऊं ६ पर अपने  
दोनों मिलों का पता लिखकर ऐजे कार्ड मिलने  
पर 470/- की दी. वी. पी. द्वारा आपको इस  
ज्ञानना की मंत्र मिल ग्राण प्रतिष्ठायुक्त  
सामग्री मिल देगी तथा दोनों मिलों की एक  
बर्ब तक नियमित रूप से पत्रिका ऐजी  
जाएगी।**

# रहजीशुभर्गी दीक्षा प्रथाग्रन्थ

शेष जीवन का तात्पर्य ही जीवन में विश्वतर रस और आबन्ध की प्राप्ति होना है। भगवान् शिव को रसेश्वर कहा गया है। और गुरु का स्वरूप ही शिव स्वरूप है। जो व्यक्ति गुरु और शिव की साधना विश्वतर सम्पन्न करता है। उसके जीवन में रससिद्धि प्राप्त हो जाती है। यह दीक्षा जीवन की महत्पूर्ण दीक्षा है।

‘पालेश्वरी सिद्धि’ ग्रन्थ में बताया गया है, कि साधक अपने गुरु के पास जाकर उससे गाच्छना करे, कि वह मंत्र दीक्षा प्राप्त करना चाहता है तब गुरु उसे रसेश्वरी दीक्षा देते।

सबसे पहले गुरु, साधक को अपने सामने बिठावे और ब्रेज मुहूर्त देख कर उसका गंगाजल में मार्जन करे, और फिर उसके ललाट पर रस सिन्दूर का लिलक करे, फिर भगवान् शिव के १०८ बीज मंत्रों से साधक का अन्तर्यास करे।

फिर साधक हाथ में जल लेकर विनियोग करे,

## विनियोग

ॐ अस्य श्री रसेश्वरी मंत्रस्य महादेव श्रद्धिः  
पंक्तिश्छन्दः श्री रसेश्वरी पार्वती देवता रसकर्म  
सिद्ध्ये जये विनियोगः।

इसके बाद साधक अपने नामने स्थापित भगवान् पारदेश्वर शिवलिङ्ग का ध्यान करे।

## ध्यान

अष्टादशभुजं शंभुं यच्चवत्रं ब्रितोवत्तम्  
प्रेतारुद्धं नीत्यकरं द्यायेद्वामे च पार्वतीम्  
चतुर्भजामे कवकं मक्षमातांकुशं तथा  
वासे पाशांश्च चैव दधतीं तामहं सजे  
पीतवस्त्रां महादेवीं लाजाभूषणभूषिताम्  
रसेश्वरीं शंभुयुतां रससिद्धि प्रदां भजे  
याणीरसरः पुनर्वर्णी लज्जावाणीरितामतः  
यच्चाक्षरो रसेश्वर्यः सर्वसिद्धि विनयरकः  
रसकर्मणि लर्वत्र शोषने साथने मृतों  
अष्टोत्तरसहस्रं वै जपनकर्म समारभेत् ॥

अधारं अठारह शूजाओं वाले, श्वेत वर्ण, पांच मुख, तीन नेत्र, प्रेतों की सवारी करने वाले, नीलकंठ महादेव मुद्दे पूर्णता प्रदान करे, भगवान् शिव के बाईं ओर रसेश्वरी देवीं स्थापित है। जिनका स्वरूप चार भुजा और एक मुख को धारण करने वाली जिसके बाहिने हाथ में रुद्राक्ष माला और अंकुश तथा बाये हाथ में पाश और अभय है, जो गौरवर्ण और स्वर्ण के समान देवीयमान देह युक्त है, जो पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए है, जो अनेक आभूषणों से सजी डुई है, ऐसा रसेश्वरी को मैं भक्ति भाव से प्रणाम करता हूं।

ऐसा ध्यान करने के बाद गुरु साधक के शरीर में चौसठ महादेव को स्थापित करे, जिससे साधक का शरीर वज्र की तरह मजबूत और स्वर्ण के समान दिव्य बन जाय।

फिर गूरु अपने शिष्य का “रसांकुश विद्या” से प्रणव करे, “कामबीज” से योग्यन शक्ति प्रदान करे, “शक्ति बीज” से पौरुष प्रदान करे, “रक्षा बीज” से पूर्ण सुरक्षा दे, “अग्नि बीज” से उसके सारे शरीर को स्वर्ण के समान बनावे, “रस बीज” से उसे सिद्धि प्रदान करे और “रसेश्वरी बीज” से उसे अतूलनीय ऐश्वर्यमान बनावे।

इसके बाद साधक रुद्राक्ष माला से निम्न अधोर मंत्र की पांच माला मंत्र जप वहीं पर बैठे-बैठे करे।

## अधोर मंत्र

ॐ हां ही हं अष्टोत्तर परापुष्ट २ प्रकट प्रकट  
कुरु कुरु शमय शमय जात जात दह दह यात्य  
यात्य उं ही हैं हैं हैं अशोराय फट ॥

इसके बाद गुरु ऐसे साधक को विशेष पूजन क्रम सम्पन्न करावे और उसके शरीर में कामदेव को निम्न विशेष बीज से स्थापित करे।

### कामबीज मंत्र

ॐ हां हौं हुं अयोरेभ्योऽथ द्वौरेभ्यो योर  
योरतरेभ्यः सर्वतः सर्वस्वेभ्यो नमस्ते रुद्र स्वयेभ्यः॥

इससे कमजोर साधक पी पूर्ण पौरुषवान्  
योवनवान् और क्षमतावान् पुस्त्र बन जाता है और उसके सारे  
शरीर की कमजोरी दूर हो जाती है, इसके साथ ही साथ गुरु  
को चाहिए कि सहस्रधारा प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे उसका  
शरीर पूर्ण सम्पूर्ण और आकर्षक बन जाय।

### दीक्षा का दूसरा क्रम

जैसा कि मैंने ऊपर बताया था कि इस रसेश्वरी दीक्षा के  
तीन क्रम में पहला क्रम समाप्त होने के बाद गुरु उसका दूसरा  
क्रम प्रारम्भ करे।

साधक अपने सामने पारदेश्वर शिवलिंग को चांदी के पात्र  
में स्थापित करे और गुरु 'सौन्दर्य क्रम' से शिष्य का अभिषेक  
करे, 'योवन क्रम' से रेचन करे, 'कामबीज' से सम्पूर्णित  
करे, 'पारद बीज' से पूर्णता दे और 'शिव बीज' से उसे  
पूर्ण जीवन प्रदान करे।

इस प्रकार यह रसेश्वरी साधना का दूसरा क्रम अन्यन्त  
महात्मपूर्ण है और इससे साधक तेजी से साधना क्रम में सफलता  
की ओर अग्रसर होता है, और आगे चल कर वह पारद के  
क्षेत्र में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकता है।

### दीक्षा का तीसरा क्रम

दीक्षा के तीसरे क्रम में साधक को शुद्ध आप्सन पर पूर्व की  
ओर मुङ्ह कर बिठावे, और उसके शरीर में भगवान् सूर्य का  
आह्वान करे, फिर उसके शरीर में लक्ष्मी के १०८ रूपों को  
स्थापित करे, जिससे कि उसके जीवन में आर्थिक दृष्टि से  
किसी प्रकार का कोई अभाव न रहे।

फिर सामने पारद से निर्मित भगवती लक्ष्मी को अन्जि कोण  
में स्थापित करे, और साधक का गौ तुङ्घ ने मार्जन करे, और  
सामने अन्जि स्थापित कर निम्न मंत्र से १०८ धी की आहुतिया  
दे।

### मंत्र

ॐ हां हौं नमः॥

आहुतियां देने के बाव साधक अपने गुरु की पूजा करे, और  
अपने गुरु में ही भगवान् शिव को स्थापित समझ कर उनकी  
पूर्ण पूजा करते हुए दक्षिणा समर्पित करे और हाथ जोड़ कर  
प्रार्थना करे -

शिवाय शांतरुपाय अन्नाथाय नमरोनमः।  
अमूर्ताय नमस्तेऽस्तु व्योमरुपाय ते तमः॥  
तेजसे च नमस्तेऽस्तु अन्नाथाय नमरोन्तुते।  
तेजोरूप नमस्तेऽस्तु सर्वगाय नमरोनमः॥  
ॐ अमूर्ताय स्वाहा ॐ अन्नाथाय स्वाहा।

ॐ शिवाय स्वाहा ॐ व्योमव्यापिन्ने स्वाहा॥

ॐ रुद्रतेरजसे स्वाहा ॐ जीवात्मने स्वाहा।

ॐ भू स्वाहा ॐ भुवः स्याहा ॐ स्वः स्वाहा॥

इस प्रकार गुरु की पूर्ण पूजा करके उन्हें पाप समर्पित करे,  
धूप दीप नैवेच और वक्षिणा समर्पित करे और प्रार्थना करे, जि  
साधक अपने जीवन में पूर्ण सफल हो।

तब गुरु अपने शिष्य को 'पारद सिद्धि' का आशीर्वाद दे  
और उसे इन्द्रियों को जीतने वाला बना कर पूर्णता प्रदान करे।

रसेश्वरी महत् दीक्षा पूर्ण भाज्यं व्यदिर्भवेत्।

स चिद्ग देवतुल्यो वा जस्तौ जग्नं विचर्णवेत्॥

अर्थात् निम्न व्यक्ति को अपने जीवन में उत्तम कोटि के गुरु  
मिल जाते हैं, जिन्हें रसेश्वरी नाधना देने का जान होता है, जो  
स्वयं समर्थ और पिलू दोगी होते हैं, ऐसे गुरु से यदि जीवन  
में भेट हो जाय, तो उनके पांच कस्त कर पकड़ लेने चाहिए  
और प्रयत्न करके उनसे रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त कर लेनी चाहिए।

क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक सामान्य  
व्यक्ति नहीं रह जाता, अपिनु वह 'देहसिद्धि योगी' बन जाता  
है और देवता भी उससे ईश्वरों करते हैं, वह जल पर सामान्य  
गति से चलने में समर्थ होता है, और आकाश में भी हवा की  
तरह चिरचरण करने और एक स्थान से दूसरे स्थान पर कुछ ही  
क्षणों में जाने में समर्थ सिद्ध दोगी बन जाता है।

गुरु स्वेच्छा दिना कर्म वः कूर्यान्मुद्देवतजः।

स याति निष्क्रितत्वं हि स्वप्नतत्वं व्यथा धनं॥

अर्थात् जो मूर्ख मनुष्य किना गुरु की येवा किये पारद कर्म  
को करता है, या पारद शिवलिंग की पूजा करता है, उसका  
सारा धन व्यथा और साधना निष्क्रित हो जाती है।

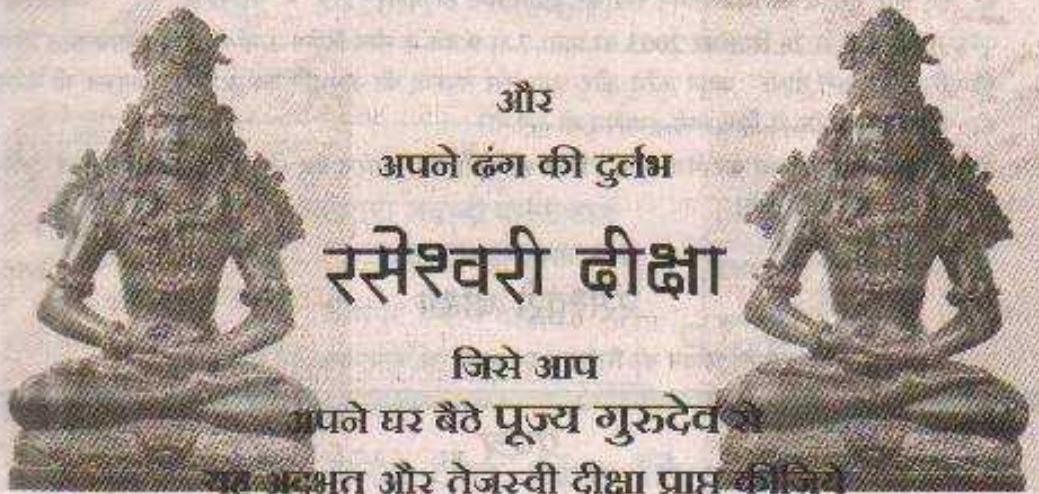
गुरो तुष्टे शिवस्तुष्टः शिवे तुष्टे रसस्तथा।

रसे तुष्टे किदा रस्वः सिद्ध्यन्ति नामि संशयः॥

अर्थात् गुरु के प्रसन्न होने पर भगवान् शिव महादेव भी पूर्ण  
प्रसन्न होते हैं, और भगवान् शिव के प्रसन्न होने से पारद  
सिद्धि प्राप्त होती है, जिससे वह स्वर्ण निर्माण करने में सक्षम  
हो पाता है।

इस प्रकार यह रसेश्वरी दीक्षा संसार की श्रेष्ठ और अद्वितीय  
दीक्षा है, अत्यन्त सीभाग्यशाली व्यक्ति ही इस प्रकार की  
दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु  
वत्मान संसार में बहुत कम रह गये हैं, और ऐसे शिष्य भी  
गिने चुने ही हैं, जो रसेश्वरी दीक्षा देने की भावना रखते हैं,  
जब उनके जीवन का सीधार्य उदय होता है, तभी उन्हें अपने  
जीवन में रसेश्वरी दीक्षा देने वाले गुरु प्राप्त होने हैं तभी ऐसा  
संयोग उपस्थित होता है, और तभी ऐसे गुरु अपने शिष्य को  
रसेश्वरी दीक्षा देकर उसे धन्य करते हैं।

# विश्व की सर्वश्रेष्ठ अद्वितीय



और  
अपने ढंग की दुर्लभ

## रसेश्वरी दीक्षा

जिसे आप  
अपने घर बैठे पूज्य गुरुदेव  
द्वारा अद्भुत और तेजस्वी दीक्षा प्राप्त किया

26 सितम्बर 2003

विश्व की अद्भुत तेजस्वी और दुर्लभ दीक्षा।  
इसके लिए जोधपुर आने या गुरुदेव के सामने उपस्थित  
होने की जरूरत नहीं।

आप पीछे दिये हुए प्रपत्र को पढ़िये, उसे भर कर हमें भेजिये, हम आपको  
**“रसेश्वरी दीक्षा”** देने का वायदा करते हैं।

जीवन की दुर्लभ तेजस्वी

और

अद्वितीय

रसेश्वरी दीक्षा

दिनांक : 26 सितम्बर 2003

## नियम

- ❖ आप इस प्रपत्र को भर कर आज लिफाके में रख कर भेज दीजिए, हम आपको ₹४०/- रुपये की बी.पी. से “सिद्ध रसेश्वरी यंत्र” भेज रहे हैं।
- ❖ बी.पी. छूटने पर आपने जो मित्र का पता दिया है, उसे एक वर्ष का पत्रिका सदस्य बना कर पूरे वर्ष भर पत्रिका नियमित रूप से भेजते रहेंगे।
- ❖ और आपको “सिद्ध रसेश्वरी यंत्र” एवं रसीद वो सी.चालीस रुपयों की बी.पी. से भेज रहे हैं, जिसे आप पोस्ट मैस को देकर बी.पी. छुड़वा ले, और “सिद्ध रसेश्वरी यंत्र” पहले से ही मंगवा कर अपने पास सुरक्षित रख ले।
- ❖ 26 अक्टूबर 2003 को प्रातः सात बजे रुकाव कर पीली धोती धारण कर पूर्व बी.पी. और मुँह कर पौले आसन पर बैठ जाएं और गुरुदेव का चित्र सम्मी रख कर ध्यान मन्त्र हो जाए।
- ❖ पूज्य गुरुदेव यहोंने 26 अक्टूबर 2003 को प्रातः 7 से 9 बजे के बीच विशेष ऊर्जा से प्रत्येक साधनारत शिष्य को “सिद्ध रसेश्वरी दीक्षा” प्रदान करेंगे और आप उस तपस्या की अनुभूति एवं ऊर्जा को अनुशव भी करेंगे, और आपके पूरे शरीर में सिद्धेश्वरी स्थापित हो सकेंगी।
- ❖ जो बजे गुरु अष्टती सम्पन्न कर मैं भुजा “सिद्ध रसेश्वरी यंत्र” धारण कर ले, और इसके लिए पूज्य गुरुदेव को धन्यवाद का पत्र भेज दें।

आपके जीवन का सीधार्य

## रसेश्वरी दीक्षा

जो आपके सम्पूर्ण जीवन को सिद्धि प्रदान करने एवं जगमगाहट देने में समर्थ है।

### प्रथम

आप “रसेश्वरी सिद्धि महायंत्र” 240/- रु की बी.पी. से निम्न पते पर भेजें। बी.पी. आने पर मैं छुड़ा लूंगा।

मेरी पत्रिका सदस्या संख्या .....

मेरा पूरा नाम .....

मेरा पूरा पता .....

बी.पी. छूटने पर आप मेरे निम्न मित्र को पत्रिका सदस्य बना दें और रसीद मुझे भेज दें।

मेरे मित्र का नाम .....

मेरे मित्र का पता .....

श्री विश्वामित्र  
वैजयन्ती माला

# स्फुटिक माला

माला को चतुर्वर्ग प्रदाननी अर्थात् धर्म, अर्थ काम, मोक्ष प्रदान करने वाली माना जाया है। सारे देवी देवताओं के स्वरूप में माला को विशेष प्रशान्ति है। भगवान् गिर जहाँ छाक्ष माला धारण किये हुए हैं तो भगवान् लिप्यु वैजयन्ती माला, तो ब्रह्म चन्दन माला धारण किये हुए हैं।

माला के बिना पुरुष का स्वरूप तथा स्त्री का रूप अवूरा सा लगता है। इस सब के पीछे एक विशेष शास्त्रीय विवेचन है। माला भंत्र-तंत्र और संत्र का संयुक्त रूप होकर साधना में अभीष्ट फल प्रदान करने वाली होती है। जीवन के सारे विधानों में माला का विशेष वर्णन आता है। यह सब एक विशेष किया का स्वरूप है, आप भी अपने जीवन में अपनाउंगे नंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त स्फुटिक माला और देखिये कितना विशेष परिवर्तन होता है जीवन में ...

☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆ ☆

मंत्र साधना में माला का विधान वैदिक काल से चला आ। मनकि होते हैं लेकिन हिन्दू तथा बुद्ध धर्म के योगियों द्वारा २७ रहा है। योग अभ्यास तथा मन को केन्द्रित करने का सबसे तथा ५४ मनकों की माला का भी विधान आता है। माला के साथकर्ता माध्यम माला ही है। माला का विधान हिन्दू धर्म के सम्बन्ध में यह सत्य है कि इसको धारण करने तथा हाथ में साथ-साथ बौद्ध, जैन, रिक्ख के अतिरिक्त ईराह धर्म और जैन से ही एक शक्ति का चक्र बनता है। प्राचीन काल से ही मुस्लिम धर्म में भी पूर्णतः जाता है। माला द्वारा योगाभ्यास माला का प्रयोग योगाभ्यास के लिये तनाव को दूर करने के पश्चिम से ही पूरे विश्व में फैला है। और धीरे-धीरे अन्य धर्मों लिये तथा मानविक शांति एवम् चित्ताओं की मुक्त करने के ने इसे अपना लिया। हिन्दू धर्म में विभिन्न प्रकार की मालाओं लिये किया जाता रहा है। माला एक पेत्रा ठोस साधन है का विधान प्राप्त होता है। इसमें मूल्यतया रुद्राक्ष माला, जिसके माध्यम से निरन्तर प्रार्थना और मंत्र जप करने से स्फुटिक माला, रुद्राक्ष तथा रक्टिक की मिश्रित माला, श्वेत ध्यान में एकाग्रता आती है। माला का प्रभाव इतना अधिक चन्दन माला, रुद्र चन्दन माला तथा हृकीक माला और तुलसी तांब्र होता है कि जैसे ही साधक माला लेकर जपने हाथ से माला का विधान प्राप्त होता है। सामान्यतः माला में १०८ उसे लिया जारस्त करता है तो उसी समय मन में एक शांति

प्रारम्भ हो जाती है। श्वास की गति नियन्त्रित हो जाती है और जो लीड के तार द्वारा ही आपस में जुड़ी होती है। लेकिन साधक का ध्यान एक मनके से दूसरे मनके के चलने पर सबसे मुख्य माला एक कहे के रूप में होती है जिसमें २७ केन्द्रित हो जाता है और जब यही सामान्य क्रिया किसी मंत्र मनके होने हैं और यह मनके 'लौहिना सिमरना' कहे जाते के साथ की जाती है तो माला के साथ वह मंत्र जपने से उत्पन्न है।

आध्यात्मिक प्रभाव, भौतिक प्रभाव अस्थन्त तीव्र हो जाता है। इसीलिये सारे धर्मों में माला का विधान आया है।

बुद्ध धर्म के अनुसार मनुष्य के जीवन में १०८ प्रकार के विचारों का प्रशाप निरन्तर चलता रहता है जो इसे संसार चक्र में दुखों के सामने भार-भार टेलते रहते हैं और १०८ मनकों की मात्रा द्वारा दुखों से पाल पाया जा सकता है। यह १०८ की सख्ता बुद्ध धर्म में विशेष लक्षण रखती है एवं आख्यान के अनुसार बुद्ध के जन्म होने पर १०८ ब्राह्मणों को उनका गविष्य कथन करने के लिये आमंत्रित किया गया था। वर्तमान में भगवान् बुद्ध के १०८ पद चिन्ह हैं।

बुद्ध के उपदेशों के ३०८ स्वरूप हैं और प्रत्येक स्वरूप जीवन की स्थिति का विवेचन करता है। चीन के अवैत पगोड़ा में जो बहाँ की राजधानी बीजिङ में स्थित है उसके चारों ओर १०८ स्तम्भ बने हुए हैं। बुद्ध धर्म में दुष्कर्म करने वाले व्यक्तियों के लिये १०८ प्रहरों का विधान है उसी आधार पर मन के १०८ अशुद्ध विचार निकाल कर पूर्ण निर्मल चिन ढोने के लिये १०८ किंवाऽनों का विधान आता है।

चीन में बुद्ध धर्म के फैलने के साथ ही माला द्वारा जप और उसे धारण करने की क्रिया प्रारम्भ दुई एक पूर्ण चीनी माला में १०८ मनके होते हैं जिसे तीन भागों में अलग-अलग रंग तथा रूप में बाट दिया जाता है। इसी प्रकार वहाँ एक ३८ मनकों की छोटी माला का भी प्रचार है। वह ३८ मनके बुद्ध के १८ प्रमुख शिष्य जिन्हें लोहानस् कहा जाता है उनका प्रतिनिधित्व करते हैं। इस माला को “सूचु” कहा जाता है। इसे धारण करने का वह तात्पर्य है कि मैं भगवान् बुद्ध के साथ उनके द्वारा मनोनीन १८ गुरुओं को प्रार्थना प्रणाम करते हुए हृदय में स्थापित करता हूँ।

सिख धर्म में भी माला का पूर्ण विधान है और यह माला मनकों की ना होकर ३०८ गांठों की बनी हुई होती है। इसी प्रकार सिख धर्म में लौह मनकों की बनी माला का विधान है।

शाकत राधिक अथवा शस्ति की उपासना करने वाले साधक किसी मृत अवस्था के दोतं की माला बना कर भी धारण करते हैं। इसी प्रकार सर्प अस्थियों की बनी माला का प्रयोग नव साधना, रोग निवारण तथा सर्पदंश दोष दूर करने के लिये की जाती है। यह भी माना जाता है कि सर्प अस्थियों की माला इष्ट में लगाने से रोगी शीघ्र और हो जाता है। इसी प्रकार शाकत सम्प्रवाय के साधक उण्ठाकार मनकों की बड़ी एक माला धारण करते हैं, तथा कई विशेष साधनाओं में हकीक मला का विशेष विधान आता है। मूँगा माला हनुमान साधक, पैरव साधक विशेष रूप से धारण करते हैं।

## माला के भेद -

मुख्य रूप से माला ५ प्रकार की होती है। इन सब मालाओं का विधान शास्त्रों में आया है।

१. कुद्राक्ष माला

सदाश भाला में सामान्यतः १०८ सदाश फल होते हैं। तथा इसमें सर्वश्रेष्ठ रुद्राश कल को मेरु कहा जाता है। रुद्राश भाला का प्रयोग व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के लिये, स्वास्थ्य एवं आर्थिक उन्नति प्राप्त करने के लिये, मन की स्थिरता एवं ध्यान एकाग्र करने हेतु तथा शत्रुओं और प्रतिक्रियों पर विनाश प्राप्त करने के लिये होता है।

## २. स्फटिक माला

इस माला में भी १०८ मनके तथा एक मनका मेरु मनका होता है। स्फटिक माला का उपयोग मुख्यतया मानसिक शांति आध्यात्मिक उत्तमि के लिये किया जाता है। साथ ही इसका उपयोग व्यक्तित्व विकास, आकर्षण क्षमता में वृद्धि, तेजस्विता, प्रखरता और बुद्धि एवं भ्रग्न के विकास के लिये होता है।

रुद्राक्ष-स्फटिक मिश्रित माला

इस माला में एक मेरु मनका तथा १०८ अन्य मनके होते हैं जिसमें ५४ मनके रुद्राक्ष के तथा ५४ मनके स्थानिक के

होते हैं। इस  
स्थान का त  
है। इस मा  
लदाक्ष माल  
प्रभाव के उ

४. रुद्र  
यह म  
जाती ह  
मन्त्र जप  
प्रभाव  
प्रकार  
धिक्षा  
वाले ल  
व्यक्ति

५. त्रिलोक

होते हैं। इस माला में क्रमानुसार एक मनका नद्राम का तथा एक मनका सफटिक का होता है। इस माला का प्रभाव ऊपर लिखे गये सद्वास माला तथा सफटिक माला के संयुक्त प्रभाव के अनुसार होता है।

### ३. श्वेत चण्डन माला

इस माला में सफेद चन्दन की लकड़ी को काट कर उसके छोटे छोटे टुकड़े बनाकर उन्हें गोलाकार रूप दे दिया जाता है। और इसमें १०८ मनके तथा एक मेरु मनका होता है। इस माला को अत्यन्त पवित्र माना जाता है तथा नित्य प्रति की साधना में इसका प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त आकर्षण और वशीकरण प्रभाव उत्पन्न करने के लिये भी यह माला श्रेष्ठ मानी जाती है।

### ४. रुक्म चण्डन माला

यह माला लाल रंग के चन्दन वृक्ष से बनाई जाती है। तथा इसका प्रयोग भी नित्य प्रति के मंत्र जप में किया जाता है। इसके साथ ही अपने व्यक्तिगत का बोह मात्रा, सासारिक इच्छाओं से मनुष्य ऊपर उठ कर ध्यान प्रभाव दूसरी पर उत्पन्न करने के लिये किया जाता है। एक एवम् समाधि के मार्ग पर प्रशस्त होता है। प्रकार से श्वेत चण्डन माला और रुक्म चण्डन माला में कोई विशेष अंतर नहीं है। लेकिन शास्त्रों के अनुसार उद्य स्वभाव वाले व्यक्ति को श्वेत चण्डन की माला तथा शास्त्र रक्षाव वाले व्यक्ति को रुक्म चण्डन माला धारण करनी चाहिए।

### ५. तुलसी माला

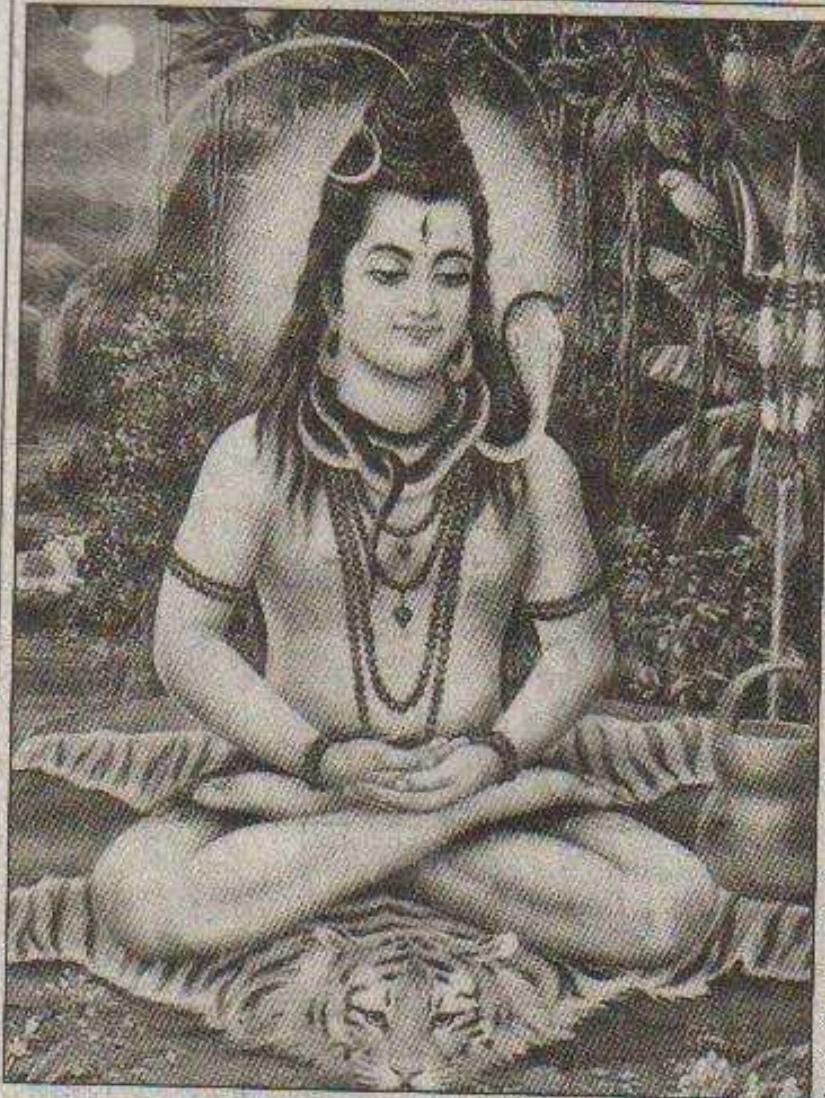
इस माला में ही १०८ मनके ही होते हैं। तथा यह पवित्रतम तुलसी वृक्ष की लकड़ी से बनाई जाती है। इस माला का प्रयोग नित्य मंत्र जप के साथ-साथ अपने आस्थात्मिक स्तर को उच्च बनाने के लिये किया जाता है। इस माला को धारण करने मात्र से एक विशेष प्रकार की भाग्यसिक शांति तथा मोक्ष की ओर मरण गिलता है। तुलसी माला धारण करने से व्यक्ति धौरे-धौरे भीतिक इच्छाओं से ऊपर उठता है और संसार के द्रुओं से निवृति का मार्ग प्राप्त होता है। इसके साथ ही यह माला व्यक्ति के अनासकि के भाव का विकास करती है। और



### सफटिक माला क्या है ?

सुख, तुलसी, चन्दन माला वनस्पतियों से प्राप्त होती है। वहीं सफटिक प्रकृति में कैले हुए हजारों खनिज इन्धादि की तरह एक विशेष प्रकार का पत्थर होता है। यह पत्थर अत्यन्त चमकिला, आभावान तथा प्रकाश को ग्रहण कर उसे पुनः फेलाने की क्षमता रखने वाला होता है। सफटिक अन्य खनिज अथवा हीरा, नीलम, माणिक्य, पुरुषरुज, गोमेद की तरह ही पृथ्वी पर पाया जाने वाला पत्थर होता है। लेकिन यह पत्थर समुद्र के तल पर स्थित होता है तथा समुद्र के भीतर चलने वाले चक्र से यह स्वच्छ होता हुआ चमकिला बन जाता है। इस प्रकार यह पृथ्वी का ही एक अंज होने के कारण इसमें

एक साथ  
मनके के  
धारण का  
मनका में  
कहा जाता  
गुरु द्वारा  
अपने आ  
ओप थे।  
यदि न  
गुरु भवति  
गुरु से  
द्वाय में  
विधान  
लेकर,  
धारण  
उच्चारा  
ही स  
बहुव  
जा  
स्वर  
मोक्ष  
कर्म  
वि  
साध  
अव  
प  
कर्म  
अप  
स्व  
नह  
जा



इस प्रकार से प्रबोहित करता है व्यक्ति उस ऊर्जा को ग्रहण कर सके और देह की ऊर्जा में गुणात्मक परिवर्तन कर सके। यहाँ तक की उच्च कोटि के शिवलिंग स्फटिक शिवलिंग होते हैं जिनके सामने ब्रह्म मात्र से एक ऊर्जा भाव सचारित होता है और जब इसी स्फटिक के मनकों को मनुष्य धारण करता है तो उसे एक दिव्य शक्ति प्राप्त होती है। उसके भीतर की सौई हुई शक्तियाँ जागत हो जाती हैं। भीतर की शक्तियाँ और देवता की ब्रह्माण्डीय शक्ति के मिलन बिंदु स्फटिक ही है।

भासन वर्ष में सर्वश्रेष्ठ स्फटिक गुजरात में खेमान की खाड़ी में पाया जाता है। यह स्फटिक एकदम साक, पारदर्शी तथा चमकीला होता है जिसको निरंतर एक टक वेरहना भी मुश्किल हो जाता है और उसकी सब दिशाओं से किसी निकलती हुई पत्ती होती है। यामन्यतः स्फटिक कांच जैसा ही दिखाई देता

पृथ्वी तत्व मुख्य रूप से है। अन्य रूप जो कि एक प्रकार से है। लेकिन कांच कृतिम रूप से बना हुआ होता है जबकि पत्थर ही होते हैं विशेष ग्रहों के प्रभाव से युक्त रहते हैं कबल स्फटिक पृथ्वी में स्वनिर्भृत एक पत्थर है जिसको द्वाय में तेजे विशेष प्रकार की रसियाँ ही घड़ग करते हैं। लेकिन स्फटिक ही एक ऊर्जा का आभास होता है। भगवान् श्री विष्णु और पत्थर सब प्रकार को रसियों को घड़ग कर उन्हें संशोधन कर कृष्ण के गले में धारण माला स्फटिक माला ही है जिसे पुनः उस ऊर्जा को संकरित करता है।

वैनयनी माला कहा जाता है।

### माला का विर्माण

मनुष्य मूलतः पृथ्वी का ही भाग है और इसी तत्व से उसमें मानसिक तथा शरीरिक स्थृयित्व जाता है। इस प्रकार स्पर्शिण

पृथ्वी तथा अन्य तावों से, ग्रहों से ऊर्जा ग्रहण कर मनुष्य में अष्ट कोणीय अथवा अन्य प्रकार का रूप वे दिया जाता है। पुनः संचारित करने का शक्ति रखता है। एक प्रकार से यह वर कोणों वाले स्फटिक की माला धारण नहीं की जाती है “पांचर हात्स हैं” जो ऊर्जा को घड़ग कर नियन्त्रित कर, उसे क्योंकि उससे ऊर्जा केन्द्रिय भूत नहीं होती। सारे मनकों को

एक साथ पिरोया जा सकता है तथा एक मनके और दूसरे मनके के बीच में गाठ भी लगाइ जा सकती है। सामान्यतः मनके जप करने वाली माना में १०८ मनके होते हैं तथा एक मनका मेरु झोटा है जिसे गुरु भी कहा जाता है, सुमन भी कहा जाता है। माला कहीं से भी प्राप्त की जा सकती है लेकिन गुरु द्वारा प्रदत्त माला में विशेष शक्ति होती है क्योंकि गुरु अपने आशीर्वाद से अपनी शक्ति से माला को चैतन्य करते हैं और चैतन्य माला का उपयोग साधना में करना चाहिए।

यदि स्वयं माला बनाएं तो मनकों को धारे में पिरोते समव गुरु मंत्र या शाखारी मंत्र का जप अवश्य ही करना चाहिए। जब गुरु से माला प्राप्त हो तो यह आवश्यक है कि माना को दोनों हाथ में लेकर अपनी प्राण ऊर्जा से एक मारनी चाहिए। शास्त्रीय विधान के अनुसार माला प्राप्त होने ही माला को दोनों हाथ में लेकर हाथ बद कर मस्तिष्क पर स्पर्श करता जाता है। माला धारण करने से पहले माला को हाथ में लेकर निम्न मन का उच्चारण अवश्य करना चाहिए।

हो माले मारे भद्रा माले सर्व - तत्त्व - स्वरूपिणि!  
चतुर्वर्गस्त्वयि द्व्यरत्तस्तस्मात् से रितिराधा भव॥

जर्थात् हे माला महामाला आप जगत की सब वस्तुओं का स्वरूप हैं और मुझे अपने जीवन में चतुर्वर्ग धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष प्राप्त हो और इस प्रकार मैं जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करूँ।

जिस साधना के लिये माला का प्रयोग किया जाता है उस साधना के बीज मंत्र का उच्चारण प्रदेश मनके पर ११ बार करने वाली माला और दूसरी जप माला।

सामान्य रूप से माला दो प्रकार की होती है। एक धारण करने वाली माला और दूसरी जप माला।

धारण करने वाली माला को भी शयन से पहले उतार कर समन्वय कर सके।

अपने ताकिये के नीचे रख देना चाहिए। जप माला को पूजा स्थान में अथवा किसी अन्य शुद्ध स्थान में रखना चाहिए।

मंत्र जप के समय गुरु मनके अर्थात् सुमेरु की शणना नहीं की जाती है और सुमेरु मनके पर मंत्र जप नहीं किया जाता।

माला से मंत्र जप करने का एक विधान है ओर इसी विधान जप में माला को बढ़ाने हाथ ने रख कर मंत्र जप करना।

जप में माला को बढ़ाने हाथ ने रख कर मंत्र जप करना चाहिए तथा अंगृहि और मध्यमा अथवा ऊनाभिका अंगूठी से कहा जाता है। माला कहीं से भी प्राप्त की जा सकती है लेकिन गुरु द्वारा प्रदत्त माला में अंगृहि तथा प्रथम अंगूठी से गुरु द्वारा प्रदत्त माला में विशेष शक्ति होती है क्योंकि गुरु मंत्र जप उचित नहीं है। मंत्र जप के समव भाला हृदय के अपने आशीर्वाद से अपनी शक्ति से माला को चैतन्य करते हैं लाभने होना चाहिये तथा जब गंत्र अप प्राप्तम करे तो गुरु मनके सुमेरु से प्राप्तम कर पुनः सुमेरु तक मंत्र जप करना चाहिये तथा कभी भी एक माला मंत्र जप के पश्चात दूसरी माला मंत्र जप करते समय सुमेरु को नहीं लाभना चाहिए। पुनः हाथ को धूमाकर जिस मनके पर १०८ वाले मंत्र जप किया या उसी मनके से पुनः प्राप्तम करना चाहिए। धर्मी माला १०८ मनकों का होती है लेकिन शणना में १०० की संख्या ही मानी जाती है। अर्थात् १० माला मंत्र जप सहज अर्थात् २००० मंत्र जप संख्या ही मानी जाती है।

गुरु मंत्र का जप स्फटिक माला से संपन्न करना चाहिए इसलिये स्फटिक माला को गुरु रहन्य सिद्ध माला भी कहा जाता है।

### विशेष -

विभिन्न प्रकार के लग धारण करने डेन मनष्ट = आनिष्टों की संलग्न लेना और कह बार कुछ लग उसे उचित प्रभाव देते हैं अनुचित प्रभाव भी दे सकते हैं लेकिन ऐष्ट स्फटिक माला में किसी भी प्रकार का अनुचित प्रभाव प्राप्त नहीं होता है। स्वैत्र श्रव्य प्रभाव ही प्राप्त होता है। मनुष्य जीवन में सबसे बड़ी इच्छा यही रहती है कि उसे मानसिक शांति प्राप्त हो। मन में शक्तिता आये। वह सही निषेध ले सके, अपने काव्यों को उचित रूप से संपन्न कर सके। दैर्घ्य शक्तियों ऊर्जा रूप में उसे प्राप्त हो। बद्धाण्ड की शक्ति को अपनी शालि के साथ धारण करने से पहले हतना अवश्य ध्यान रखें कि यह मंत्र इन सब के लिये स्फटिक माला ही शर्वश्रव्य माला मानी जाती है। यह माला ही अपने आप में रितिराधी माला है। बस एक चमकदार वस्तु बन कर रह जाती है।

# वासना की वापी

मेष -

जैवन में सुख कुछ आते ही रहते हैं। यह माह आपके लिए कुतौती भग्न होगा। प्रारंभ द्वयरात्रि नहीं। अगर आप धैर्य से काम लेंगे तो विशेषता परिवर्तनियों में भी आपके सफलता मिलेगी। माह के अंत में आकर्षिक धन नाम ही सकता है या इसका इसी धन भी प्राप्त हो सकता है। इस माह आपने स्वस्थ्य का विशेष ध्यान दें तथा कार्य की अधिकता के कारण स्वस्थ्य की उपेक्षा न करें। बेशकार व्यक्ति कोई आपना कष्ट आरंभ करने का प्रयास करेंगे तो सफलता मिल सकती है। विशेष लाभ हेतु इस माह गाढ़ा मध्यविधा साधना (अगस्त २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ४, ९, ११, १३, १८, २१, २५ हैं।

वृष -

इस माह आपको विशेष सम्मरोहों और उत्सवों में शाम लेने का अवसर मिलेगा जिससे मन प्रभल होगा। आप दुग्ने उत्साह के साथ अपने कार्य क्षेत्र में अवसर होंगे तथा लोग आपके कार्य की गराहना भी करेंगे। व्यापारी वर्ष के लिए भी रम्य अनुकूल है तथा किसी बड़े लाभ की आशा की जा सकती है। घर पर किसी अतिथि के आने से बालाकरण प्रबलता पूर्ण होगा। चमान जागदाद ये अवधित लंबे समय से चला आ रहा कोई विवाद इस माह सुलझ सकता है। और बढ़ा संभव है कि निर्माण आपके ही पक्ष में हो। अधिक अनुकूलता हेतु महानौरी कुण्डा साधना (दिसंबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - २, ३, १०, ११, १३, २०, २३, २५ हैं।

भित्तुन -

इस माह कुछ संचर्ष के बावजूद आपको सफलता प्राप्त होगी। नीकरी में कुछ बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं तथा आपके प्रतिदृढ़ी आपको नीचा दिखाने का प्रयास कर सकते हैं। बरंतु आप उनकी ओर ध्यान न दें और अपने कार्य में लगे रहें। आप धैर्य से काम लेंगे तो उनके प्रवास संघर्ष ही विफल हो जाएंगे। व्यापारियों के लिए आवश्यक है कि किसी कागज पर हस्ताक्षर करने से पहले उसे भली-भांति पढ़ ले या आपने वकील की सलाह ले ले। विधार्यी इस समय में नवियोगिताओं में विशेष सफलता अर्जित कर सकेंगे। इस माह आप धनदा निविधा साधना (नवंबर २००२) अवध्य संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ४, ७, १४, १६, १९, २६, २८, ३० हैं।

कक्ष -

पहले की अपेक्षा अब आप जपनी गोम्बनाओं को अधिक विद्यानित होगा। प्रारंभ द्वयरात्रि नहीं। अगर आप धैर्य से काम लेंगे तो विपरीत किसी नए कार्य को आरंभ करने की सोच रहे हैं तो उनके लिए यहाँ समय सर्वोच्च उपयुक्त रहेगा। यत्रा का योग भी प्रबल है तथा यात्रा से आपको आशानीत लाभ होगा। मित्र पद सचिवी आपकी पूरी तरह ने सहायता करेगा। आध्यात्मिक और प्रार्थिक आयोजनों में आप बढ़ जाहकर जाग लेंगे। किसी पुराने गिरा वा परिवर्तित से मिलकर प्रसवना होंगी। इस माह आप प्रवात लक्ष्मी साधना (दिसंबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ८, १२, १७, २२, २६, २७, २९ हैं।

सिंह -

इस माह प्रगतीशन या रक्षानन्तरण ही सकता है उनके लिए जो कि नीकरी पेशा है। दोनों ही स्थितियों आपके अनुकूल भिज जाएंगी। आप में धूक्रि भी हो सकती है। बेशकारों के लिए नीकरी पाने का अच्छा अवसर है उगर वे उचित प्रयास करें तो। व्यापारियों के लिए राज्य की ओर से बाधा उत्पन्न हो सकती है परंतु माह के अंत तक स्थिति में सुधार होगा। घर पर परिवार के किसी सदस्य के काला तनाव उत्पन्न हो सकता है। विवाद की स्थिति में संवग से काम लें। वर्षों की पढ़ाई की ओर विशेष ध्यान दें। इस माह आप नारायणी साधना (अगस्त २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ ४, ८, १०, ११, १३, १७, २०, २५, ३० हैं।

कन्त्या -

कोई भी काम उठाने से पहले गती धानि उनके परिणाम के विषय में सोच लियार कर ले। इस माह किसी व्यक्ति पर बहुत अधिक विश्वास न करें अन्यथा वह आपको धोखा दें सकता है। कला जगत में मुड़े व्यक्तियों के लिए यह समय विशेष शुभ रहेगा। उनकी कला प्रतिष्ठा की संरक्षण होनी तथा उन्हें कोई पूर्वकाल भी गिर सकना है। जर्मीन नायवाव या बाहन के कृषि-विक्रय में धोखा हो सकता है अतः सावधान रहें। इस माह परिस्थितियों को अनुकूल बनाने के लिए आप काल ऐरव शामु निवारण साधना (नवंबर २००२) करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ६, १२, १५, १९, २३, २७ हैं।

### नवर्षीय, अमृत, रंग पश्च, दिपुष्कर, सिंह योग

सवार्थ शिवि योग ७, २६ अगस्त ८, ३५, २३ सितम्बर  
सिंह योग १६ अगस्त १६, २० सितम्बर  
वृषभ योग ३ अगस्त दिपुष्कर योग २४ अगस्त ७ सितम्बर

### तुला -

आप हर कार्य समय अनुसार और व्यवस्थित होंगे ऐसे करना पसंद करते हैं। परंतु प्रतिकूल परिस्थितिया इस माह आपकी दिन चर्चा की पार्श्वता: अस्त्र अपनत कर सकती है। परंतु किसी भी परिस्थिति में ईर्ष्य एवं संघर्ष न ज्ञाने। संतान के व्यवहार के कारण आपको दुख हो सकता है। परंतु यदि रखें कि उठाने डपटने की अपेक्षा समझाने से ही अनुकूलता प्राप्त हो जाएगी। बाहन का प्रयोग करते समय भी सावधान रहने की आवश्यकता है। भाव के अंत में कोई शुभ समाचार प्राप्त होगा जिससे आप अपने सारे दुख भूल होंगे। इस माह सौनाश्रय प्रदायक यंत्र साधना (अप्रैल २००३) करें। शुभ तिथियाँ - २, ४, ९, १०, १५, १६, २०, २३ हैं।

### वृषभक -

यह माह पूर्णतः अनुकूल ठिक होगा। व्यापार में उत्तम जाग होगा तथा उत्तम व्यापार बढ़ाने या नया व्यापार आरंभ करने के लिये में प्रयाप करें। इसमें भी आपको सफलता अद्भुत प्रियता। परंतु साङ्घर्षिता का कान न करें तो अच्छा है। परिवार में कोई मांगलिक संकेतों वाहन के जय-विक्रम में लाभ होगा। इस माह आप आपको जन्मान द्वारा सप्तमी का वातावरण बना रहेंगे; अपर आप शेष वर्ष बाजार या जमीन जायबाद के क्षय विक्रम में भवित्व है तो यह समय आपके लिये अनुकूल है। लाभ होगा। जीवन साथी से संबंध मधुर होंगे। इस माह आप कालंवीयजुन चंत्र साधना (अप्रैल २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ५, १२, १३, २२, २४, २८ हैं।

### द्वितीय -

हो सकता है इस माह आपका चित्त अधिशर रहे और आप निर्णय न ले पाएं कि जिस कार्य अथवा नीकरी में नज़र हुए हैं वही करते रहें या किसी नए कार्य या नीकरी को जरूर ले। आप स्वयं निर्णय न ले पाएं तो किसी शुभ वित्तक की सलाह ले लें। किसी बात को लेकर जीवन साथी या परिवार के अन्य सदस्य से बतायें हो सकता है। कोई की अपेक्षा संतान से काम न हो। आध्यात्मिक विषयों में लंबे होने से आप इस माह तीव्र व्याप्ति पर जा सकते हैं। इससे आपको सन की अपूर्व शाति मिलेगी। इस माह आप रुप अनुम साधना (अक्टूबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ३, ८, ११, १४, १८, २३, २७, २९ हैं।

### मकर -

राजनीति से जुड़े व्यक्तियों को इस माह योड़ा सावधान रहने की आवश्यकता है। मानवानि का भय हो सकता है। नीकरी यथा व्यक्तियों को चाहिए कि अपने उच्च अधिकारियों द्वारा बताये गये संबंध बनाए रखें। व्यापारी वर्ग के लिये समय उत्तम रहेगा। परिवारिक उत्तरदायित्वों का पूर्ण नियोग करें तथा कार्य में व्यवस्था के कारण परिवार के सदस्यों की उपेक्षा न करें। विद्यार्थियों के लिये यह समय चूनीती पूर्ण सिद्ध होगा तथा अगर वे परिश्रम करेंगे

### यह मास ज्योतिष के द्वितीय में

कठिनदेव सर्वात्मक में गतिशीलता वृक्ष वर्षित्वानि होंगी। साथ ही वे राज्यों में भवा परिवर्तन के दौरा विद्युत होंगे। समाजीलितक आरोप, प्रत्याजीप लिंगों क्षय से रहने वाला प्राज्ञ वातावरण ज्वलों में शोषण व्यापकी व्यक्तिगत होगा जो भी लुट्ठ होनी। परिवेश संवर्धन में शामिल का व्यापार व्यवर्जन करेगा। मानवसुर शेष छोड़ द्योगे जो २००१ मार्केट से बाहर रहेंगी आपकी।

तो उन्हें अवश्य सफलता प्राप्त होंगी। राज्य को बहन प्रयोग करते समय सावधान रहें। इस माह अष्टमुना काली साधना (दिसेंबर २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, २, ४, ८, १०, १६, १७, १९, २५, २८ हैं।

### दुःख -

इस माह शिव और संवद्या आपसे भव्योग की अवेक्षा रखेंगे तथा आपकी सहायता से उनके महत्वपूर्ण कार्य संपन्न होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को प्रतियोगिता तथा साक्षात्कार में सफलता प्राप्त होगी तथा नीकरी प्राप्ति के अच्छे अवसर भी सामने आएंगे। साधनात्मक दृष्टि से यह माह आपके लिए अनुकूल है तथा आप पूर्ण शक्ति के साधना करते हैं तो अवश्य आपको सफलता प्राप्त होगी। आपका स्वास्थ्य भी ठीक रहेगा और पूरे माह आप जोश के साथ अग्रसर होंगे। इस माह आपको कामना पूर्ति जीवनी साधना (जुलाई २००२) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - ४, ६, ७, १२, १३, २२, २४, २८ हैं।

### मौन

आप तीक्ष्णता से अपने नक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहे हैं। आप कई तरह से प्रयाप करते रहे तो शीघ्र ही सफलता आपके काम खोनी तथा आपका काम से अपनी ओर योजना भी को साकार रूप दे पाएंगे। परंतु अपने प्रयापों में शिविलना न आने वें और प्रतिकूल से प्रतिकूल विश्वास का दृष्ट कर युक्तावला करें। पिछले कुछ समय से चली आ रही धन की नींवि में सुधार होगा तथा आपको आकर्षित क्लास होगा। श्रमिक वर्ग के लिए समय उत्तम है। भाव के अंत में किसी मित्र से बिछड़ जाने पर दुख होगा। इस माह आप रक्त कण कण गुरु साधना (अप्रैल २००३) संपन्न करें। शुभ तिथियाँ - १, ३, ८, १०, १६, २१, २५, २६ हैं।

### इस मास के द्वात, पर्व एवं त्योहार

१५ अगस्त भाद्रपद कुल्ल पक्ष ३	शुक्रवार	कवली तीन
२० अगस्त भाद्रपद कुल्ल पक्ष ४	शुक्रवार	श्री कृष्ण उन्मादपूर्ण
२३ अगस्त भाद्रपद कुल्ल पक्ष ४	शनिवार	अजा एकादशी द्वितीय
२७ अगस्त भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	शुधिवार	कुण्डली अप्सरास
३१ अगस्त भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	शनिवार	विनायक चतुर्दशी
१ सितम्बर भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	सोमवार	कृष्ण पूर्णिमा
३ सितम्बर भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	बुधवार	शारदीयी
६ सितम्बर भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	शनिवार	गदमा रकादी
९ शिवमन भाद्रपद कुल्ल पक्ष ५	मंगलवार	उन्मत्त चतुर्दशी

# सामान्य

साधक, बहुतक तथा सर्वजन सामान्य के लिए रामय का वह रूप यहाँ प्रस्तुत हैं जो छिसी भी व्यक्ति के लौखम में उच्चति का कारण होता है तथा जिन्हें जान कर आप रख्ये ग्रापने लिए उच्चति का मर्द प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारणी में समय की श्रेणी रूप में प्रस्तुत किया गया है जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कर्ता के लिये, वह वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सावन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस व्यक्ति का समय का उपयोग कर सकते हैं और गफलता के प्रतिशत १९ ८% आपके भाग्य में जांकत हो जायेगा।

**ब्रह्म मुद्रूर्त का ऋग्य प्रातः ४.२४ ले ८.०० बजे तक ही रहता है।**

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	
रविवार (अगस्त १७, २४, ३१) (सितम्बर ७)	दिन ०६.०० से १०.०० रात्रि ६.४८ से ७.३० तक ०८.२४ से १०.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक	
शोमवार (अगस्त १८, २५) (सितम्बर ४, ८)	दिन ०६.०० से ०७.३० तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक	
मंगलवार (अगस्त १९, २६) (सितम्बर २, ९)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.०० से १२.२४ तक ०४.३० से ०५.१२ तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० १२.२४ से ०२.००, ०३.३६ से ०६.०० तक	
बुधवार (अगस्त २०, २७) (सितम्बर ३, १०)	दिन ०७.३६ से ०९.१२ तक ११.३६ से १२.०० तक ०३.३६ से ०६.०० तक रात्रि ०६.४८ से १०.४८ तक ०२.०० से ०६.०० तक	
गुरुवार (अगस्त २१, २८) (सितम्बर ४)	दिन ०६.०० से ०८.२४ तक १०.४८ से ०१.१२ तक ०४.२४ से ०६.०० तक रात्रि ०७.३६ से १०.०० तक ०१.१२ से ०२.४८ तक	
शुक्रवार (अगस्त २५, २९) (सितम्बर ५)	दिन ०६.४८ से १०.३० तक ०४.२४ से ०६.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०१.१२ से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक	
शनिवार (अगस्त २६, ३०) (सितम्बर ६)	दिन १०.३० से १२.२४ तक ०३.३६ से ०५.१२ तक ०८.२४ से १०.४८ तक ०२.०० से ०३.३६ तक ०४.२४ से ०६.०० तक	



# ਧਰਮਨੋ ਕਥੀ ਕਥਾ ਮਿਹਿਰੂ ਕੇ ਕਥਾ ਹੈ

किसी भी कार्य के वास्तव काल से पूरी प्राचीन व्यक्ति के मन में रामय-अस्त्रम की मानवा रहती है कि वह क्यों सहज होता था नहीं सफलता प्राप्त होती थी। बाधा तो उपर्युक्त नहीं हो जाती। कहा नहीं, दिन या वार्षा यैसे प्रकर से होता है जिन के अन्वेषण पर वह सहज हो जाएगा। यह वास्तविक कर याहाँ या नहीं। प्राचीन व्यक्ति युद्ध ऐसे लड़ाया आने जीतने में जानाना भवता है, जिसमें उसका बोल्के दिन वहाँ अनुकूल एवं अनन्द युद्ध बन जाता। युद्ध ऐसे ही लड़ाया आने के रास्ते उत्तरुन हैं, जो वारहीन्द्र ने विविध प्रकारों अवसराओं और उपचाराओं से सकृदित है, जिनमें यहाँ बोल्के दिव्यर के अनुकूल युद्ध किया जाया है तथा जेठे लम्बव लड़ने पर अपकाल पूर्व दिन यहाँ सफलताप्राप्ति कर सकते।

सितं खर

१. "सह गुटिका" (न्यौछावर ३०/-) का प्राप्त: काल पूजन करके शिव मंदिर में चढ़ा आएं। बाधाएं एवं रोग भगवान डॉगे।

२. ५ बार हनुमान चारीसा का पाठ करके ढी घर से निकलें। सफलता प्राप्त होंगी।

३. श्री गणेशाय नमः मंत्र का जप करते हुए भगवान गणेशिति को ११ बार दूरी अपित करें।

४. प्राप्त: काल गुरु आरती अवश्य संपन्न करें।

५. प्राप्त: कुछ भी खाने से पहले गाय को रोटी दें।

६. "विश्वानामका" (न्यौछावर ६०/-) का पूजन कुकुम, अशत ये कर घर से दूर दक्षिण दिशा में फेंक दें। रोग शोक समाप्त होंगे।

७. आज बेसन से बना कोई व्यंजन अवश्य गृहण करें।

८. प्राप्त: कालीन गुणजित वेद मंत्र के सेट (न्यौछावर ४०/-) से शिव ताङ्क स्तोत्र का अवण करें।

९. आज अनंत चतुर्दशी के दिन '५ बार "ॐ ह्री श्री लक्ष्मीवासुवेद्य नमः" का जप करें।

१०. ५१ बार "वक्तुंदाय हुं" मंत्र का जप करें। कलंश समाप्त होंगे।

११. पांच बार निम्न मंत्र का जप करते हुए गुरु मूजन संपन्न करें। नमस्मि लद्यगुरु शरतं प्रत्यक्षं शिवस्त्रियम्। जिरसा भूतपीठस्थं तस्मै श्री गुरवं नमः॥

१२. किसी देवी मंदिर में जाकर नान पृष्ठ अपित करें।

१३. घर से बाहर निकलने समय पांच कानी मिर्च खिर पर से घुमा कर दक्षिण दिशा में फेंक दें।

१४. दिन का प्रारंभ सूर्य नमस्कार से करें।

१५. पांच बार निम्न मंत्र का उच्चारण कर भगवान शिव का पूजन करें -

रुद्रं चतुर्भजं देवं त्रिनेत्रं वरदामयम्।  
दधात्मसूर्यं हस्ताम्भ्यां शूरं इमरु मेष च।  
अंकं लक्ष्यामूर्त्यां यदमे दधानं च उद्ये।  
आधे कर द्रुवं कुंभं मरात्मुखं विमुत्तम्।

१६. "यिदिं प्रवा" (न्यौछावर ६०/-) का पूजन पृष्ठ, दीपक, कुकुम अशत से कर, यिदिंप्रवा वो जेब में रख कर घर से निकलें। कार्य सिद्ध होग अगले दिन नवी नालाब में विश्वर्जित कर दें।

१७. "शुक गीता" का पाठ अवश्य संपन्न करें। आध्यात्मिक बल प्राप्त होंगा।

१८. कोई कार्य आरंभ करने से पहले पांच बार "ऐ ह्री कर्त्ता चामुण्डाय विद्ये" का उचारण करें।

१९. शनिवार के दिन काले वस्त्र किसी निर्धन को वान में दें। भोजन भा दान करें।

२०. गुरु जन्म दिवस के स्वप्न में "निखिलेश्वरगनंद स्तवन" का पाठ करें। दिन भर गुरु नम्रण करने तथा गुरु भवा संबन्ध लें।

२१. भगवन शिव पर छुप मिथिल जल चढ़ाते हुए पांच मिनट तक नमः शिवाय मंत्र का जप करें। जल को प्रसाद रूप में गृहण करें।

२२. "सुरंशना चक्र" (न्यौछावर ५०/-) को जल में डालकर भगवान कृष्ण का स्वरूप करें। फिर उस जल में कुछ पीले और लाली रोम स्नान करें। रोग समाप्त होंगे। चक्र को कृष्ण मंदिर में बढ़ा आएं।

२३. प्रातः काल: भगवती लक्ष्मी को "ॐ ह्री ह्री श्री लक्ष्मीरामच्छ आगच्छ गम गृह तिष्ठ तिष्ठ स्वादा" का जप करते हुए तीन बजान तापीत करें। धन हानि होने से टलेंगी।

२४. आज तः माना अंतरिक्ष गुरु मंत्र का जप करें।

२५. "निष्ठा" (न्यौछावर ५०/-) का पूरे शरीर से स्पर्श कर किसी नदी या नालाब में डाल दो।

२६. काली सरलों के दान नमान पर रुद्रकर अपना दाहिया पर उन पर रक्षत दूःख ये निकलें।

२७. प्राप्त: काल तीन नुलसी के पत्ते नाबे के लोटे में डालकर वह जल उग्ने गृह्य को अपित करें।

२८. "मधुस्त्रेण स्वादा" (न्यौछावर ६०/-) का पूजन कर घर से निकलें।

२९. हनुमान जी के लिए हके नाम्ने पात्र बनियों का वर्ष्यों के तेल



# जीवन साइटा

यो तो किसी भी रोग के बेनक छेत्र वाल चिकित्सा विज्ञान के पाल अद्वक इनाज हैं, परंतु मंत्रों के माध्यम से चिकित्सा के पीछे धारणा यह है कि गमी रोगों का उद्द मध्य मनुष्य के मन से ही होता है। मन पर पड़े दुष्प्रभागों को यहि मंत्र द्वारा नियंत्रित कर लिया जाए, तो रोग स्थायी रूप से द्वान्त हो जाते हैं।

1. आप किसी सम्बानित स्थान में नौकरी 2. क्या आप अनावश्यक लोटापे से पीड़ित प्राप्त करना चाहते हैं?

आप जहाँ नौकरी कर रहे हैं वहाँ आपको रन्तुष्टि नहीं मिल रही है या आप बेरोजगार हैं और नौकरी पाने के लिए प्रयत्नशील हैं, स्वयं के प्रयाप्त से आप अपनी इच्छा को पूर्ण करने में असफल हो रहे हैं, तो एक बार इसको अपनाकर

'सामृथा' को किसी पात्र में कुकुर्ग से स्वस्त्रिक बनाकर स्थापित करें। सामृथा का कुकुर्म इक्षत से पूजन करें उस पर एक लाल पुष्प व एक पीला पुष्प क्रमशः यढ़ने हुए २१ बार मंत्र का उच्चारण करें -

मंत्र

॥ उ॒ै ह॑ ह॑ उ॒ै ॥

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् सामृथा को किसी नये वस्त्र में लपेट कर नदी में विसर्जित कर दें।

नाथना सामृथी - १०/-

आपकी देह स्थूल हो जाते हैं, शारीरिक बायं न करने के कारण आणका मोटापा इस कदर बढ़ गया है, कि आप किसी कार्ड को करने में स्वयं को असमर्थ पा रहे हैं। इसके

प्रत्येक क्रम को करते हुए निम्न मंत्र का नये नीन बार करें। पहले हफ्ते पूर्ण क्रम एक बार करें। फिर दूसरे हफ्ते सूर्य नगस्त्वार आगमन के क्रम को दो बार करें। इसी प्रकार क्रम बढ़ाते हुए पाच बार नक ले आयें। आपका मोटापा कुछ चिनों के नियन्त्रित प्रयोग से समाप्त हो जायेगा।

मंत्र

॥ उ॒ै ह॑ ह॑ ह॑ सः सूर्यचित्तमः ॥

प्रत्येक आगमन के साथ उपरोक्त मंत्र का ६ बार उच्चारण करें, आप स्वयं में शीघ्रता से परिवर्तन मनुष्य करेंगे।

### 3. अपने अविद्या के लोग को इस प्रकार से सुनास करिये।

जब कहा भापने, आप को नींद नहीं आती और इसके लिए आपको रोने रात को नींद की जोली लेनी आवश्यक हो जाती है और फिर यही आप चाहते हुए देन की नींद नहीं ले पाते। आपको स्वाभाविक नींद लिए हुए कई माह बीत चुके हैं। कहीं इन रोण के कारण आपका स्वास्थ्य तो प्रभावित नहीं हो रहा है। आपका सौन्दर्य कहीं छलने तो नहीं जाता। यह रोने भापके लिए हानिकारक, तो नहीं साधित हो रहा है। यदि ऐसा हो तो आप शीघ्र ही इससे छुटकारा प्राप्त कर लीजिये।

आप किसी भी रुचि को स्नान कर सकते वस्त्र में कुकुम से छिड़ते कमल बनाये, अपना नाम कुकुम से लिखकर उस पर 'रोज मुक्ति गुटिका' को स्थापित करें। नींद दिन तक गुटिका के समक्ष निम्न मंत्र का स्वारह बार जप एकाग्र चित्त हो कर करें -

**मंत्र**

// उ॒ अविद्या नाशय अं उ॑ छद् //

जप समाप्ति के बाद शान्त मन से लेट जाये और नींद दिन के पश्चात गुटिका को नदी में प्रवाहित करें।

साधना सामग्री - एकट - ७५/-

### 4. आपके सम्मोहन में लोग स्वयं को भी भूल जायेंगे।

ब्लूटि हाँनता का अनुभव करने लगता है जब वह अपने आसपास के वातावरण में अन्य लोगों को अपने से ज्यादा ब्रह्म तथा उच्च स्थिति का समझता है। उसमें योग्यता होते हुए भी अन्य लोग उसकी ओर ध्यान नहीं देने हैं। ऐसे में यदि आप चाहते हैं, कि आप ही प्रत्येक व्यक्ति के केन्द्र बिन्दु छने रहे और लोग आपको ही प्राथमिकता दें, तो यह अद्वितीय सम्मोहन प्रयोग आप मंत्र करें। इनके पश्चात् आपका व्यक्तित्व इतना सम्मोहक हो जायेगा, कि प्रत्येक व्यक्ति आपकी ओर स्वतः ही रिंगा चला आयेगा।

इसके लिए श्वेत वस्त्र धारण कर एक तासपात्र में कुकुम से एक जोल घेरा बनाकर उसमें अपना नाम लिखें तथा उस पर 'सम्मोहन गुटिका' स्थापित करें।

गुटिका का पूजन कुकुम, अक्षत तथा मुध से करें। उसके पश्चात् पांच दिन तक नित्य गुटिका के समक्ष १३ बार निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

**मंत्र**

// उ॒ एं हौं श्री सम्मोहन उ॑ छद् //

प्रयोग समाप्त होने के बाद गुटिका को किसी भी वृक्ष की जड़ में डाल दें।

साधना सामग्री - १२०/-

### 5. अपने महिनाक की शमता को पूर्ण विकसित करिये

आज का भौतिक युग प्रतिवेगिताओं का युग है, जीवन के लिए हानिकारक, तो नहीं साधित हो रहा है। यदि ऐसा हो तो आप शीघ्र ही इससे छुटकारा प्राप्त कर लीजिये।

आप किसी भी रुचि को स्नान कर सकते वस्त्र में कुकुम से छिड़ते कमल बनाये, अपना नाम कुकुम से लिखकर उस पर 'रोज मुक्ति गुटिका' को स्थापित करें। नींद दिन तक गुटिका के समक्ष निम्न मंत्र का स्वारह बार जप एकाग्र चित्त हो कर

करें -

**मंत्र**

// उ॒ श्री चैतन्यं चैतन्यं शदीर्धं उ॑ छद् //

यह को ४० दिनों तक धारण किये रहें। ४० दिन के पश्चात् उस नदी में प्रवाहित कर दें।

साधना सामग्री - १३०/-

### 6. क्या आपको स्वयं के क्रोध पर संचय है?

क्रोध आना एक स्वाभाविक स्थिति है, लेकिन यदि क्रोध अन्यथा बढ़ने लगे, प्रत्येक उचित-अनुचित बात पर क्रोध चरम सीमा पर पहुंच जाय, तो यह पूर्णतया गलत है।

क्रोध की अति आपको भावक सुमखसाये से बचान कर देती है।

यदि आप चाहते हुए भी क्रोध को संयमित नहीं कर पाते और खुद का ही अनिष्ट कर देते हैं, तो शीघ्र ही इस प्रयोग के माध्यम से उसे नियंत्रित करिये।

'चामुण्ड' को एक पात्र में स्थापित करें, उस पर कुकुम मिला जल छाड़ने हुए निम्न मंत्र का २१ बार उच्चारण करें -

**मंत्र**

// उ॒ कस्ती कस्ती कस्ती उ॑ छद् //

मंत्र जप समाप्ति के पश्चात् उस जल को पौधों में डाल दें। नाल दिन पश्चात् चामुण्ड को विस्तीर्ण में चढ़ा दें या नदी में विसर्जित कर दें।

साधना सामग्री ६०/-

यह कहाया देवता भी का मुखिया के सभी व्यक्तियों बीमारी, या असुर तांत्रि

दम जिसे इन प्रयोग कोटका म उच्च ब्राह्मण के पसे स्वर पर ल्या जा सक कि मव सभी जिसमें स्थानों सकता

## जीवन की बीमारियों बाधाओं अड़वनों और

### कठिनाइयों को हटाने और जीवन की पूर्ण सुरक्षा के लिये



इस बार अन्यन्त विश्वसन और महत्वपूर्ण ज्योतिर्चक से 'ज्योतिर्क्र' पाइना है, जिसमें जीवन की पूर्ण सुरक्षा हो आपको परिचित करवा रहे हैं, जो कि इस मास का विशेष संक्रमित बीमारी, वज्र या पाता न आवे, और समस्त प्रकार की विपरीती से ज्योतिर्चक बाताएँ रहें।

इस मास में ही गुरु पूर्णिमा पर्व जम्पव हुआ तथा वह गुरु पूर्णिमा पर्व विशेष योगों से युक्त था। मिथन राशि में स्थित मर्य के साथ शुक्र, शनि का योग भी बना था। अष्टम रस्तान में मंगल या इस कारण गुरुदेव जी ने पत्रिका कार्यालय में विशेष व्यवस्था कर मंत्र अनुष्ठान इत्यादि सम्पन्न करवा कर ये ज्योतिर्चक का निर्माण कराया।

और इसीलिए गुरु पूर्णिमा पर गुरु डारा भिल हस्य 'ज्योतिर्चक' का उच्च कोटि के व्यक्ति अपनी सुरक्षा तथा अपने पूरे परिवार के सुरक्षा के लिए धारण करते हैं, जिसमें कि किसी प्रकार की बीमारी, परेशानी, रान्य बाधा, या कठिनाई न आवे, किसी प्रकार की अकाल मृत्यु या बीमारी व्याप्ति न हो।

इसीलिए शाल्वों में कहा गया है कि 26 अप्रैल अंतर्मध्य और 4 अक्टूबर के बीच शाश्वतीय नवरात्रि में ज्योतिर्चक धारण करें तो धारण करें ही, परिवार के अन्य सदस्यों को भी वह

#### ज्योतिर्चक्र

यह तीन धारुओं से निर्मित अपने अंत में दलभ, महत्वपूर्ण और अद्वितीय कड़े के रूप में है जिसे आसानी से अपनी कलाई में पहिला जा सकता है। जब इसका स्पर्श शरीर से होता है तो पूरा शरीर एवं विशेष सुरक्षा से रक्षित हो जाता है और किसी प्रकार की बाधा या अदचन दोगारी या तकलीफ यथा सम्मव परेशान नहीं करती।

यह ज्योतिर्चक विशेष मंत्र यिन्द्र यैतन्य और प्राण ग्रनिष्ठा द्वारा है। शुक्रकर्त्ता प्रणीत ग्राण अंगोंवाली किया को इस पर पूर्णता के साथ सम्पन्न किया गया है जिससे पहिनने वाले व्यक्ति की सभी दृष्टियों से पूर्ण गुरदा ही सके।

दिखने में वह कहा या ज्योतिर्चक अन्यतर सुन्दर और आकर्षक है, तात्से छाता बालक और बड़ा व्यक्ति इसे पारन कर सकता है। योगियों और उच्चकोटि के भन्नासियों के बीच

यह कथावत प्रसिद्ध है, कि नियंत्रणम् ज्योतिर्बक्त है, उसका देवता भी क्या विशद् सकते हैं? प्राचीन समय में तो परिवार का मुखिया स्वयं तो यह ज्योतिर्चक धारण करता ही था, घर के सभी बालकों चित्रों और माता पिता के साथ-साथ सभी व्यक्तियों का ज्योतिर्चक पहिना देता था, जिससे कि अकालग्रन्थों में भी आवश्यकता नहीं होती, और न किसी प्रकार का पूजन आदि की आवश्यकता नहीं होती है, इसका प्रभाव पूरे वर्ष भर रहता है।

## तांत्रिक दोष निवारण सिद्ध

इस ज्योतिर्चक को विशेष स्वों से सिद्ध किया हुआ है, जिसे इसके धारण करने पर उस पर यदि कोई दृश्य तांत्रिक प्रयोग करता है, तो वह निष्पत्त होता है, उस पर कोई टोना टोटका मृठ या नानांकिक दोष ज्याम नहीं होता।

उच्चकोटि के ज्यापारी अपनी दुलान की चौखट पर इसे बोध देते हैं, जिससे दुकान पर टोना टोटका न हो, जहाँ सप्तवेष्म से रखते हैं, वहाँ ज्योतिर्चक रखा जा सकता है, नहाँ जहाँ पर ज्यापारिक स्थल है, वहाँ वहाँ पर उसको बाधा या लटकाया जा सकता है, खुद के भवान में गाड़ा जा सकता है, जिससे कि मकान पर कोई तांत्रिक दोष स्फल न हो सके। यह के सभी सदस्यों को यह ज्योतिर्चक पहिनाया जा सकता है, जिससे कि कोई तकलीफ न आवे, इसके अनाव उन सभी स्थानों पर इस ज्योतिर्चक को गाढ़ा जा सकता है या रखा जा सकता है, जहाँ पर सुरक्षा की विशेष जरूरत हो।

## कब और कैसे धारण करें

इसे नवरात्रि में 26 भितम्बर से 4 अक्टूबर के बीच धारण करें, यों शास्त्रों में कहा गया है, प्रत्येक संकाति पर अर्थात् प्रत्येक महीने की 14 या 15 नारीखु को चढ़ाने हुए सूर्य अर्थात् खूबीदय से 12 बजे तक धारण किया जा सकता है, इसके लिए किसी साधना, या मंत्र जप्त आदि की आवश्यकता नहीं होती, और न किसी प्रकार का पूजन आदि की आवश्यकता नहीं होती है, इसका प्रभाव पूरे वर्ष भर रहता है।

## कैसे प्राप्त करें

इस ज्योतिर्चक को प्राप्त करने के लिये आवश्यक है कि आप पतिका कार्यालय में पत्र लिख कर साथ में अपना चित्र भेजें। इसके अलावा अपने परिवार के जिस सदस्य को भी ज्योतिर्बक्त धारण करवाना है उसका भी चित्र अवश्य भेजें। इस हेतु न्यौलावर गशि जो कि एक सी पचास सप्तवेष्म मात्र (150/-) है उसका मर्ना आदर्श जायदा ड्राफ्ट 'मंत्र-तंत्र-यत्र-विज्ञान, जोधपुर' के नाम से ही भेजें। आपका पत्र आने पर शीघ्र से शीघ्र इस विशेष ज्योतिर्चक को भेजने की व्यवस्था की जाएगी।

यह गुरु पूर्णिमा का विशेष उपहार है जो गुरुदेव द्वारा अपने शिष्यों को प्रदान किया जा रहा है।



वावत्सवस्थ मिदं कलेवरस्तु हृ वावच्च दूरे जरा,  
वावच्चेन्द्रिय शक्तिया प्रतिहता वावदक्षयो नायुषः।  
अन्तमधेयेनि तावदेव विदुषा कार्यं प्रव्यन्तरो महान्,  
प्रोटीम् भवने च कृपस्तज्जनं प्रत्युद्यमः कोदेशः॥

जब तक शरीर रक्तस्थ रोग रहित है, जब तक तुदापा दूर है, जब तक सभी इन्द्रियों की शक्ति पूर्ण है, जब तक प्राण शक्ति धीरण नहीं हुई है, तभी तक तुदिमान को चाहिए कि वह आत्म वाददाण के लिए निरञ्जन प्रयत्न करता रहे, अन्यथा दूर में जाग लग जाने पर कुआं खोदने से बदा लाभ?

प्रारम्भते त खत्तु विद्व भवेत् नोचैः  
प्रारम्भ विद्वविहता विरमन्ति प्रद्वाः।  
विहत्ते यत् युत्तरपि प्रति हत्यमात्रा।।  
प्रारम्भ चोन्मत्तरा त एरित्यवस्ति॥

जो विद्व के भय से जीविति सेवन दा कार्य शुरू ही नहीं करते, वे अधम श्रेणी के अनुच्छ माने जाते हैं, मध्यम श्रेणी के दो लोग हीते हैं, जो कार्य तो शुरू कर देते हैं, पर धीड़ी नी भी बाधा या विष्णु उपस्थित हो जाने पर कार्य छोड़ देते हैं, पर जो मनुष्य एक बार सौचा हुआ कार्य प्रारम्भ करने के बाद विष्णु या बाधाओं से बदराते नहीं, जो साइम और योर्ट के साथ बाधाओं और संकटों का सम्बन्ध बार के कार्य को पूरा करते ही है, ऐसे ही लोग उच्चम श्रेणी के माने जाते हैं।

# ଅସାମୀ ଲେଖକୀ-ପ୍ରକାଶ

## क्रेस्टरल - विरल प्रयोग

## जिन्हें सम्पन्न करना।

प्रत्येक साधक का कर्तव्य है

जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप दृष्टिगता, धन की कमी, व्यय की अधिकता, भ्रष्ट माला गया है और जब ये स्थितियां मुख्य के जीवन में प्रवेश कर जाती हैं तो उसके जीवन में धूल लग जाता है और उसे जीवन में किसी प्रकार का सुख पाना नहीं होता है। हमारिये आवश्यक है कि वे साधनाएँ की जाएं, वे यांत्र स्थापित किये जाएं, उन ऐसे शक्तियों का आङ्गन किया जाए जो धन की अधिष्ठात्री बर्वी हैं। ये ६ साधनाएँ सुक-एक करके सम्पद की जाएं तो उस धर में अभाव रह ही नहीं सकता। दृष्टिगता को, झण की सह से जाना पड़ता है। हन साधनाओं की सम्पद करें और अपने अबूझव इन्हें तिस भैंजे -

हिन्दू धर्म और जीवन का आधार देवी देवताओं की आराधना। पूर्ण निष्ठा एवं आत्मविश्वास के साथ करनी चाहिए, लक्ष्मी रहा है, इसमें भी सम्पूर्ण जगत् को वश में रखने वाली, उसमें मंत्र का जप किसी भी समय सम्बल किया जा सकता है, गति वेने वाली लक्ष्मी की आराधना की अत्यन्त महत्वपूर्ण लक्ष्मी साधना में जाधक को धूप ग्रे पवित्र वस्त्र पहिनने माना गया है, दिरिहता जीवन का अभिशाप है, इसे दूर कर चाहिए, स्त्री को सुन्दर वस्त्र पूर्ण साज शृंगार के साथ पहिन अन् भान्य से समृद्ध होना जीवन का सौभाग्य है। कर लक्ष्मी प्रजन करना चाहिए।

लक्ष्मी के कई स्वरूप हैं, कई साधनाएँ हैं, प्रत्येक अपनी-अपनी अद्या से लक्ष्मी की आराधना करता है, लेकिन सफलता-प्रत्येक को नहीं मिल पाता है, शुद्ध प्रबृत्ति अवश्यकीय साधना से, विधि-विधान लड़ित लक्ष्मी की आराधना अवश्य सफलतादायक होती है।

मेरे द्वारा स्वयं प्रयोग किए गए कुछ ऐसे विशेष अनुभूति प्रयोग आगे स्पष्ट किये जा रहे हैं, जिन्हें लक्षणी की आलादाना करने वाले प्रत्येक साधक के लिए उपयक्त हैं।

लक्षणी से संबंधित साधनाओं के कुछ विशेष नियम हैं, जो कि साधक को पार्स मिलि प्रदान करते हैं। लक्षणी की साधना

लक्ष्मी पूजन के भवित्व वालावरण अत्यन्त सुगम्यित होता चाहिए, वस्तो वर इत्र सुगम्यित द्वय आदि का प्रयोग करना चाहिए।

प्रवन में गलाब के पथ्यों की प्रयोग करना चाहिए।

साधक को पीले आम्बन का प्रयोग करना चाहिए, तथा सन्दर्भ के अनुरूप धूपान का लकड़ी साधन सम्बन्ध करें।

साधक के बाई और तेल का दीपक तथा दाहिनी ओर शुक्र धी का दीपक प्रज्ञालित करना चाहिए, दोनों दीपकों के बीच समर्थित अगरूद्धी लगाना चाहिए।

साधक का मुँह तूर्क या उत्तर की ओर होना चाहिए, उसके साथसे साधना लै सामर्जित अंत्र, चित्र, मूर्ति, सामग्री स्थापित करनी चाहिए।

लक्ष्मी साधना, साधक अपनी धर्म पत्नी के साथ भी बैठ कर बर सकता है, ऐसी स्थिति में लक्ष्मी को चाहिए कि वह अपने दलिती ओर पत्नी को बिदाये।

लक्ष्मी से सन्दर्भित निरस्तर साधना करने वाले साधक के लिए यह पूर्ण अवौष्ट कलदायक रहता है, कि उसके पूजा स्थान में लक्ष्मी से सम्बन्धित तीन महायज्ञ - श्रीयज्ञ, कुबेर यज्ञ, कनकधार यज्ञ में कम से कम एक वो ऋषश्व हो स्थापित होना चाहिए, यह पूर्णतया शुद्ध तथा प्राग प्रसिद्ध दृढ़ हो।

लक्ष्मी साधना में पूर्ण विशेषणि पूजन तथा गुरु गुरुन शास्त्रों में आवश्यक माना जाता है।

॥ ५ ॥

## १. कुबेर लक्ष्मीप्रयोग

यह सरल प्रयोग एक दिन का है, और चाद में नित्य प्रति एक माला इस विशेष गोड़ का जगता आवश्यक है, इस प्रयोग में पूजा स्थान में लक्ष्मी चित्र के साथ-साथ कुबेर यज्ञ स्थापित करना आवश्यक है, इस प्रयोग में जगते लागते वीज दीपक तथा अग्रसर्वी उद्घाटन जाता।

यह साधना बुधवार वो प्रारम्भ करनी चाहिए, पूजन कक्ष में कुबेर यज्ञ पर शर्वेर-गुलाल, चावल, फल इत्यादि सम्पर्कित करने के पश्चात मंत्र जप के साथ-साथ दूब, कमल और अबृज्य अर्जित करने चाहिए, यह समर्पण वरिद्रता नाशक प्रयोग है, इस मंत्र का निरस्तर स्फटिक माला से जप करने से दरिद्रता दूर होती है, और लक्ष्मी साधक के घर में स्थिर होती है।

कुबेर त्वं शक्ताद्योश गृहे ते कमला स्थिताऽ  
तां देवौ प्रेषयाशु त्वं मद्युहे ते लमो नमः ॥

साधना सामग्री 450/-

॥ ६ ॥

## २. अष्ट लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रदेश शनिवार या मंगलवार को छोड़ कर किसी भी दिन प्रारम्भ किया जा सकता है, यदि नित्य प्रति व्यारह मालाओं का जप किया जाता, तो विशेष ही साधक को धन, धान्य, लुटुब-भुज्ज, जमीन-सुख, व्यापार वृद्धि, कीर्ति, सम्मान

एवं भाष्योदय सम्भव होता है, इस साधना में साधक को अपने पूजा स्थान में "ताष्ठ पञ्च पर अंकित मंत्र स्थित अष्ट लक्ष्मी यज्ञ" स्थापित करना चाहिए, तथा वंत पव चित्र का पूजन कुम्भ, केसर, अबीर, गुलाल, मीली, चावल, पंचामूत, ग्रामजल, सुपारी, इव, दूध के प्रसाद में सम्पन्न करना चाहिए।

ॐ हौं श्री रूपे प्रसीद! ॐ श्री दिव्यानुभावे प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री उज्ज्वले प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं श्री उज्ज्वल रूपे प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं श्री ज्योतिर्मति प्रसीद! ॐ हौं श्री ज्योतिर्मति प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं श्री अमृत कुम्भे प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं अमृतकुम्भ रूपे प्रसीद प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं श्री अमृत प्रसीद वांछित देहि देहि! ॐ अद्विदे प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री लोकमात्र प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री लोक जननि प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री शोभा वद्विनि प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री अमृत संजीवकी प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री शान्त तहरि प्रसीद प्रसीद! श्री प्रशान्तत्त्वहरि प्रसीद प्रसीद! ॐ श्री शंतशांतत्त्वहरि प्रसीद प्रसीद! ॐ हौं जलों श्री नमः! ॐ हौं सर्वशङ्कु दमनि सर्व शब्दन् तिवारय निवारय, विद्वन् विनिधि विनिधि, प्रसीद! शरणेन्द्रपद्मावति सम सुखं कुरुकुरु प्रसीद प्रसीद!

इस मंत्र का जप कमल गड़ की माला से सम्पन्न करना चाहिए।

साधना सामग्री 350/-

॥ ७ ॥

## ३. स्थिर लक्ष्मी प्रयोग

यह लक्ष्मी प्राप्ति का तंत्र प्रयोग है, इस प्रयोग में साधक की मृग का आमन या ऊनी आमन चिढ़ा कर मंत्र जप करना चाहिए, इस साधना में साधक अपने सामने पूजा स्थान में लकड़ी के बाजार पर नाल वस्त्र चिढ़ा कर चौकोर लप में "२१ लक्ष्मी प्राकाम्य" स्थापित करें, और बीच में गणपति लक्ष्मी यज्ञ लित्र तथा गुरु यज्ञ या चित्र स्थापित करें, भीन लप से प्रति दिन एक माला मंत्र जप कर एक लक्ष्मी प्राकाम्य किसी सरोवर, जलाशय अथवा कुण्ड में अवित कर दें।

२१ दिन की इस विशेष साधना कल में ही साधक को विशेष मनुष्य प्राप्त होते हैं, रक्ष हरे कार्य द्वारा होने प्रारम्भ हो जाने वे, इन साधना में स्फटिक माला का प्रयोग करना चाहिए।

३८

॥ अ॒ हां हीं हों श्री कीं क्रीं क्रों  
स्थिरां स्थिरां अ॑ ॥

साधना सामग्री 345/-

† † † † † †

## ४-लाठा निवारण शिव लक्ष्मी प्रयोग

जिस साधक अथवा साधिका को अपने कार्यों की पूर्णता में बार-बार साधुओं का सम्मान करना चाहता हो, उन्हें तो के उचित साधन प्राप्त नहीं होने हैं, शाशुओं का वस्त्र अधिक हो, उसे यह विवर प्रयोग अवश्य सम्पन्न करना चाहिए।

किसी भी सोमवार को प्राचरण किये जाने वाले इस साधना प्रयोग हेतु मंत्र सिद्ध प्राण प्रनिष्ठा गुरु स्फटिक शिवलिंग आद्या नर्मदेश्वर शिवलिंग अत्यन्त उत्तम रहता है, मंत्र जप शंख माला से सम्पूर्ण करना चाहिए, साधना के शमय सर्वप्रथम गुरु पूजन एवं गणपति पूजन करने के पश्यात शंख माला से 'ॐ नमः शिवाय' की एक माला जप करें साथ ही साथ निरन्तर दृध मिश्रित जल शिवलिंग पर अर्पित करते रहें, इनके पश्यात नोंदे लिखे मंत्र जप के साथ ही साथ बिन्दु पर शिवलिंग पर अर्पित कर एक माला मंत्र जप करें।

यह साधना प्रयोग सात दिन तक सम्पन्न करने से साधक को सर्व कार्यों में सिद्धि प्राप्त होती है, और उसकी विवरितियाँ दूर होती हैं, शब्दभाक का तंज क्षण होता है।

四

ॐ ही श्री ठं ठं ठं नमो भगवते मम सर्वकार्याणि  
साधय साधय मां रक्ष रक्ष शीघ्रं मां धनिनं कुरु कुरु  
हुं फट छिथं डेहि प्रङ्गं देहि ममापति निवारय निवारय  
स्वहा।

साप्तना समयी 270/-

† † † † †

## ५-अण मोहन लक्ष्मी प्रयोग

इस साधना में साधक की अपने पूजा स्थान में लदाई थवं  
चित्र स्थापित करने के पश्चात वहुन सारा चन्दन घिसकर  
एक बालो में लगाकर उस बालो में तीन मत्र सिद्ध प्राण

प्रतिष्ठा युक्त मोर्ती शंख पर साथ स्थापित करने चाहिए, इन तीनों मोर्ती शंख पर 'श्री' बीज मंत्र का जप करने हुए सिन्दूर अधिन करें, एक मात्रा बीज मंत्र के पश्चात गुणनिधि अगस्त्यतियां जलायें और ऋण मोर्चन लक्ष्मी मंत्र का जप 'कमल जट्टे की माला' से सम्पन्न करें, इस साधना में दीपक तेल का होना चाहिए। प्रतिदिन एक मात्रा मंत्र जप सम्पन्न करने से साधक के ऋणों का नाश होता है, तथा मानसिक शान्ति प्राप्त होती है।

सात दिन की इस स्थानना में सफलता पूर्ण रूप से प्राप्त हो तो ३४ दिन तक यह मंत्र जप करें, स्थानना की पूर्णता के पश्चात तीनों मोती शंख अपने पूजा स्थान में ही लाल वस्त्र में बोधकर रख दें।

三

ॐ ह्रीं क्रीं श्री खिये नमः सम लक्ष्मी मामूणीत्तीर्ण  
कल कल सप्तपूर्व वर्धव वर्धव नमः ॥

सामग्रा नाम्बरी 440/-

† † † † †

### ४- नित्य लक्ष्मी प्रयोग

यह प्रयोग प्रत्येक साधक को नियमित रूप से संपन्न करना चाहिए, इस साधना में अपने पूना स्थान में कनकधारा यंत्र न्यायित कर नित्य प्रति दिन पृथ्वी आठि से पूजा करनी चाहिए, तत्पश्चात नित्य प्रति का पूजन संपन्न किया जाता है, फिर गणपति यंत्र गुरु पूजन के पश्चात एक माला इस मंत्र का जप शुरू करना चाहिए।

इस मंत्र के निवारित जप से नित्य प्रति की चिन्ताएँ कम होती है, तथा खुर्च के अनुपात में आमदनी में वृद्धि होती है, मन में हर समय प्रसवता चर्नी रहती है, इस मंत्र का जप किसी भी समय किया जा सकता है।

三

ॐ नमो ही श्री क्रीं श्री वत्तीं वत्तीं श्री लक्ष्मी  
समग्रहे थव्वं चिन्ता इदं करोति स्वाहा॥

ANSWER: 240/-

雨露自由自由

26-27 सितम्बर 2003

## निश्चक्ति नवरात्रि साधना शिविर मां भगवती नवरात्रि साधना

शिविर स्थल : पंगल मूर्ति रामायण, खाट रोड,  
भण्डारा (महाराष्ट्र)

आयोजक : भण्डारा : दिनेश निकम - मो. - 9822721348,  
07184-433761 ○ प्रशांत परमेश्वर - 252225 ○ कमलकर  
भावेण ओदिलीप दुवानी - 254453 ○ अनन्त मालगांव - मो.  
957123108603 ○ देवन्द्र काठेखाडे - 274410 ○ जागेश्वर  
समर्थ ○ विनय कटोरिया ○ मधुश्री पाठक ○ मुर्धी पद्मोले  
○ साधव डाकर ○ अजय निश्चार ○ विरेन्द्र नांगले - मो.  
9822693210 ○ अशोक काळे ○ मंगेश वडे ○ मनोज वलोकर  
○ विश्वार नामपैर ○ रवि धावेकर ○ लिलेश्वर अकुडे ○ शम्भी  
बद्दा ○ गंतेश चौधरी ○ प्रसाद चाहरे ○ विलीप ठाकरे  
○ जगपत मुले ○ विलन्द्र मलोक ○ मोरेश्वर बावण ○ बबलु  
पण्यार ○ प्रशान्त लोणगे ○ झाटे ○ खवराबे ○ यानू पतेवार  
○ सुरेन्द्र शिवानकर ○ विनय मुसारी ○ प्रकाश बारापांडे  
○ देवकर ○

नागारु : शाकुर किशोर सिंह - 3100285 ○ श्रीमति हमलनानी  
पण्डित - 0712-2741940 ○ शिंह ○ डॉ. प्र. सातपूरे ○ अश्वाल  
○ छवपाल सिंह गोपर ○

कन्हान : चेतन सिंह नोडान ○ अम्बादास चकोले ○ देवकर  
जी योगकर ○

भिलगांव : साहेश्वर निभकाटे ○ लण्ठा बंगडकर ○  
ब्रह्मपुरी : सुधीर सेत्नेकर - 07177-272328 ○

गढचिंगेनी : केशव मने - 07132-233443 ○

चन्दपूर : सुरापांडिह गोपर - 250230 ○ संजयसंह न्यालपांडी  
- मो. 9422118029 ○

तुमसर : गर्ज जी ○

गोवरवाडी : बेलारी ठाकरे - 07183-220300 ○ बंदु खोडागडे  
○ भानुगांव : सूरश रावने ○

गोविंदा : भगत ○ पहिरे ○ गोंगाडे ○

तिरेडा : बबन बेप्प ○

मोदा : नरेन्द्र वेशमुख ○

अमरावती : डॉ. शशीलक्ष्मी राजे बाटे - 0721-2570429  
○ महावेवरान सुने ○

यवतमाल : नारायण गडते ○

साकोली : कापगंते ○ बालकुण्ठ बुधे ○

मोहाडी : बालकुण्ठ सरादे ○

मारोडी : सुनील ख्यारे ○

जलगांव : विलीप मोती गंगाणी ○

अकोला : मानोकराव चिन्तामणे ○ जानेश्वर टापे - 0724-  
2458163 ○ गवि कन्होले - 0724-2422733 ○

ओरंगाबाद : विनायक वाय - 02402-5622139 ○

जालना : संजेत तिक्के - 02482-2415390 ○

नावड : चन्द्रकान देवुरामोकर - 02462-254139 ○

नासिक : गरव देवरे - 0253-2317006 ○

03-04 अक्टूबर 2003

## मां भगवती नवरात्रि साधना शिविर

शिविर स्थल : जयराम जनता हाई स्कूल, रामनगर,  
तहसील आलापुर, जिला अम्बेडकर नगर,  
मुख्यमंत्रीलय-अकबरपुर जंवशन (उ.प्र.)  
(फैजाबाद - वाराणसी रेलवे खण्ड पर)

आयोजक :

रामनगर : इन्द्रजीत सिंह - 05274-274152 ○ अशोक कुमार  
शुक्ला - 05274-275007 ○ केलाश सिंह - 05274-275190 ○  
अच्छलाल यादव ○ सुरेश कुमार गुप्ता - 05274-275028 ○  
योगेन्द्र कुमार सिंह ○ अल्लन निवारी ○ दग्गलाम आजाद ○  
संजय कुमार मिश्र ○ छोटे सिंह ○ पेन्टर बाबू ○ राम अंगोर  
○ बलसिंगार यादव ○

बमस्यारी : ओम प्रकाश पाण्डेय ○ तालुकदार सिंह - 05274-  
276753 ○ राम प्रसाद - 05274-278522 ○

दाढ़ा : डॉ. सत्य नारायण श्रीवाल्लभ ○ त्रेम कुमार उपाध्याय ○

फैजाबाद : मदनलाल गुप्ता ○ राम इकबाल ○

आजमगढ़ : शाशिकान्त अव्यवाल ○ राजवेद राय ○ डॉ.  
जगदीश सिंह ○ विनय यादव ○ सुरेन्द्र राय ○

गोरखपुर : भवनाथ यादव ○ राम नारायण पटवा ○

पटना : संनद सिंह ○

गहनहापुर : सुनील कुमार टण्डन ○ याता प्रसाद श्रीवाल्लभ ○  
सीतापुर : गवेश कुमार ○ गवेश कुमार लिखिन ○ सुशील  
कुमार ○ राम सिंह गोडो - 05862-243229 ○

लखीमपुर : डेमशेकर वायप ○ शमकुमार रस्तोजी - 05872-  
257568 ○

लखनऊ :

○ इन्द्र  
प्रकाश सिंह यादव ○ याकबेन्द्र सिंह यादव ○ डॉ. नीरा सिंह  
ही. के सिंह - 0522-2372010 ○ बंसत श्रीवाल्लभ 0522-  
3051630 ○

रायबंगली : जन. सी. सिंह 0535-2201089 ○ जगदम्बा सिंह 0535-  
2205330 ○ रामचन्द्र श्रीवाल्लभ (नील) 0535-2212503 ○

उत्तापुर : लाल जी त्रिपाठी ○

वाराणसी : हरिनारायण सिंह ○ मद्दा गोहन श्रीवाल्लभ ○  
कलमण्ड-नेपाल : विष्णु नेपाल - 09771-528372 ○

अम्बेडकर नगर : सुरेन्द्र सिंह ○

जमनियाँ : गार्जीपुर : मनीष कुमार श्रीवाल्लभ - 05497 -

# प्रेत बाधा क्या है?

विंता नव कीजिथे

## प्रेत बाधा

### निवारण अंभव है

अद्भुत और सोचक विवरण भिलजे लग जाते हैं कहीं भी भृत-प्रेत का नाम लेते ही और कैसे कहीं कि मृत्यु के उपशमन व्यक्ति समाप्त हो जाता है ....

जिस भी भृत प्रेत तो भृत प्रेत ही हुए, प्रश्न क्षेत्र रह जाता है कि ...



यदि आप किसी गाव के हैं और बचपन में किसी गोखरे में भारतीय नन्मानन संदर्भ में यह मानता रहा है कि जिस नहाने जाने रहे हों या बोसों की झुग्नट में तुका छिठी खेलने व्यक्ति की अकल मृत्यु हो, वह मरने के बाद भृत बन जाता है जले रहे हों तो आपको याद आता रहा होना कि आपके पर के अथवा जिस व्यक्ति का मरणोपरांत उचित रूप से संस्कार न किया जाय, तो वह भी अनुम भटकता रहता है। भारतीय नामस में छाई रह जात सर्वधा निरापद नहीं है। इसके पाठे तथा निचित रूप में इतर योनियां होती हैं चाहे वह भृत की हो, ग़ज़म की। मन्त्र यह होता है कि जहाँ मनुष्य परम्परात्मक होना है, वही इतर योनियां चतुर्वात्मक या त्रिवर्णात्मक होती हैं, उसमें भूमि तत्त्व का अभाव होने से ही उनकी गति और क्रमनाम उत्तीर्ण हो जाती है। भूमि तत्त्व के अभाव से ही वे दृष्टि गोचर भी नहीं होते हैं।

अनुक स्थान पर मन जाओ, उस पर के नीचे मत खेलना, और आप समझ नहीं पाने होंगे कि ऐसा क्यों? परं आप शब्द के हों तो भी आपने अध्यात्मी में पढ़ा होना कि अनुक मकान में कोई किरायेदार एक गाह भ उधिक नहीं रह पाना या किसी घर में ब्रह्मानक भर लग जाने का पठनाएं पढ़ा होंगी, तो कभी पर्याम का वर्ण का जान पड़े होंगे, कहाँ पूरे पूरे परिवार का एक नाम दुखटन में गर जने का समावर पढ़ डेंग। मुख्य प्रश्न यह नहीं है कि क्या भृत का अलिंगत्व होना है या नहीं? परं यह है कि अधिक क्या कारण है उन विभिन्न घटनाओं और भयभूत घातों का।

अपूर्ण उच्छारण, वासनाएं ही कारण होती हैं, व्यक्ति की इन योनियों में भटकाने की। प्रायः किसी दृव्यन्तरवश अश्व, हत्या आदि से व्यक्ति दी उत्तम भृत्यु हो जाता है और ऐसे में जो

मोह अपने परिवार के प्रति अथवा अपनी बासनाओं के प्रति पक्ष हो पूर्वजों के प्रति सम्मान व उनको तृप्ति देने के लिये रचा समाप्त नहीं हुआ होता, वह उसे विश्व कर देता है कि वह भूत गया। यह भव व्यवस्थाएं केवल प्रशंसित वर्ग के जीवन याप्ति या प्रेत योनि में जा चढ़े। ऐसे परिवारों में जिनमें कोई अलामधिक हेतु नहीं रची गयी वर्ण इमंके पीछे गूहम् चिन्नन होते। इसके मूल दो गयी हो उनमें बहुधा इस तरह की बातें सूनते या पीछे चिन्नन था कि व्यक्ति जिस पिण्ड से निर्मित हुआ है और देखने का मिलता है कि उस परिवार का कोई सदस्य विश्वसित जिस पिण्ड की सूक्ष्मता उसके शरीर में विद्यमान है, उसे बढ़ हो जाय, पागल हो जाय अथवा असामान्य व्यवहार करने लगे सदैव तृप्त रहें, जिससे उसे सूक्ष्म रूप से विश्वनार परिपुष्टि जाय। इसका सौभाग्य यह कारण है कि मृत आत्मा परिवार के मिलती रहे। पिण्ड दान आदि इसी का बाध्यात्मार है। अपने सबसे कोपल वृत्ति बाले भवस्य को अपना माध्यम बना नेता पूर्वजों के प्रति तर्पण, दान आदि करते रहने से जहाँ एक ओर है और इसके छारा जहाँ एक ओर परिवार में रहने की अपूर्ण उन्हें सूक्ष्म जगत में तृप्ति मिलती है और वे मुक्त होते हैं, वही इच्छा पूरी करती है, वही ऐसी योनियों में गये व्यक्तियों के अपने बंशजों के प्रति कृपालु हो उठते हैं। यह भी व्यवस्था है लिप मयादा का कोई बंधन नहीं रहता। उनकी कामेच्छा बहु कि कोई व्यक्ति गृह्यु के उपरान्त ऐसी इतर योनियों में न जा जाती है, जिसकी पूर्ति वे किसी को भी माध्यम बना कर जायें। ऐसी योनियों का नंसार अत्यन्त ही पीड़ितायक है। यह बहु-बेटी कोई रिते अर्थ नहीं रखते और वे अपनी काम संसार जो छल कपट से भरा है और जिससे ऊबकर व्यक्ति प्रायः आत्महत्या कर लेता है, वह यह नहीं जानता कि इस भवंधी इच्छाएं तथा भोजन संबंधी इच्छाओं की पूर्ति करने के निये कुछ भी करने को तैयार रहते हैं।

इसी से भारतीय धारणा सदैव से यहाँ रही है कि व्यक्ति अपने को नृणाओं से मुक्त रखे।

भूतों के अस्तित्व के संबंध में पूरे विश्व में शोध चल रहे हैं और सत्य तो यह है कि तथा कथित आधुनिक व विकसित माने जाने वाले परिचयी वेशों में भूत-प्रेत संबंधी विश्वास छमार समाज से कहीं अधिक दृढ़ है। जिसनी रहस्यात्मकता, विचित्रता परिचय के वेशों में जुड़ी है, उसके सामने तो भारत की घटनाएं नगण्य हैं। इसका एक कारण यह भी है कि जहाँ विशेशों में वहाँ के निवासियों ने इसे मात्र कीतहूल व नेमाप समझ कर अपने जीवन में स्थान किया, वहीं भारत में विवेचन किया गया, यह समझने का प्रयास किया गया कि क्या कारण होते हैं कि जो व्यक्ति को मूल्य के उपरान्त ऐसी योनियों में छकेल देते हैं, ऐसी योनियों का चरित्र क्या होता है, ऐसी योनियों में जाने पर क्या कष्ट होता है और व्यक्ति ऐसी योनियों में न जा पड़े, इसके लिये क्या उपाय किये जाने चाहिए? इसके साथ ही साथ ऐसे क्या उपाय किये जायें कि कोई व्यक्ति इन योनियों से लाभ ग्रहन न हो। छमार यह इसको मात्र समझनी पूरी कथाओं का विषय नहीं बनाया गया।

भारतीय परम्पराओं में गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्तर्यामि संस्कार तक विधान रचे गये, और अन्तर्यामि संस्कार के देवी की उनकी वरदायक शक्ति वे उन्हें नोक उपास्य बना दिया उपरान्त भी मृत व्यक्ति की विमृत नहीं किया गया, वरन् है। ऐसे ही वीर और अनुसित बन-आमा श्री हनुमान की उनकी वार्षिक आङ्ग एवं वर्ष में पितृ पथ के नम से एक पूर्ण साधन यदि व्यक्ति अपने ऊपर या अपने परिवार में किसी

कोई व्यक्ति गृह्यु के उपरान्त ऐसी इतर योनियों में न जा जायें। ऐसी योनियों का नंसार अत्यन्त ही पीड़ितायक है। यह संसार जो छल कपट से भरा है और जिससे ऊबकर व्यक्ति प्रायः आत्महत्या कर लेता है, वह यह नहीं जानता कि इस जगत में परे जो जगत है, उसमें इससे भी ज्यादा व्यापिचार, छल-कपट हिस्सा है। इतर योनियों के नंसार की समझा जाय तो वे मानव से ज्यादा मुक्ति के लिए छटपटाती हुई योनियों हैं। मानव के पास तो तब भी यह शरीर है, अपनी बहुत कुछ गतिविधियों को संचालित करने हेतु, किन्तु उनके पास तो वह भी नहीं।

निश्चन्नार अपनी मुक्ति के लिए छटपटाती हुई अपनी अपूर्ण वासनाओं की तृप्ति के लिए घटकती, कभी इसको माध्यम बनाती तो कभी उसको माध्यम बनाती हुई, योनि का ही नाम है “भूत”।

◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆ ◆

भूत-प्रेत आदि से सम्बन्धित वाद्याओं के निवारण हेतु तीन विशेष साधनाएं दी जा रही हैं जिन्हें कोई भी साधक व्यक्ति इति सम्पूर्ण कर सकता है। प्रत्येक साधना से पहले गुरु पूजन अवश्य सम्पूर्ण करें।

## भूत-प्रेत बाधा निवारणार्थ

### हनुमान प्रयोग

प्रवन पुत्र हनुमान जन-जन के उपास्य देव अचानक ही नहीं बन गये। अपनी तीव्र शक्ति और भक्ति पर सहज अनुकम्पा कर संस्कार तक विधान रचे गये, और अन्तर्यामि संस्कार के देवी की उनकी वरदायक शक्ति वे उन्हें नोक उपास्य बना दिया उपरान्त भी मृत व्यक्ति की विमृत नहीं किया गया, वरन् है। ऐसे ही वीर और अनुसित बन-आमा श्री हनुमान की उनकी वार्षिक आङ्ग एवं वर्ष में पितृ पथ के नम से किसी

सदृश्य के उपर व्याप मूल प्रेत की बाधा निवारण के लिए करता है, तो उसे आज्ञानीत जाम प्राप्त होता है। इस साधना को करने के लिए किसी विशेष विश्व-विधान की आवश्यकता नहीं होती, केवल एक निश्चित ऋम की अपना कर नियम सभी शुद्धता पूर्वक प्रयोग किया जाय तो बाधा को नीबटा के द्वारा बढ़ती ही दिनों में पूर्ण मुक्ति मिल जाती है।

साधना विधि

उन साधनों को करने के लिए उत्तमशक्ति है कि साधक यदि स्वयं के निपुणों प्रयोग कर रही हो अथवा किसी अन्य के लिए प्रयोग कर रहा हो तब भी, लाल धूली पहन कर दक्षिण की ओर मुँह करके बैठ, सामने एक तांबे के पात्र में “हनुमान गृटिका” स्थापित कर धूप अन्नरसी जलाएं तथा गुड व धी को मिला कर नेत्रों और में उर्पित करें तथा कुछ शैषण शोत्र मुद्रा में बैटकर भजनस्त्रिक रूप से श्री हनुमान का वीर व कल्पणकारी रूप में चिन्तन करें।

श्री हनुमान नित्य ध्यान

उद्यन्मार्तणकोटिप्रकटलविद्युतं वालवीरासनसरथं।  
मौज्ज्ञेयह्नोपवीतासणविरशिखाशेषितं कुण्डलाकम्॥  
भक्तानामिष्टदं तं प्रणतमुद्दित्तज्ञं वेदनावप्रमोदं।  
स्वाध्येदलित्तव्यं विथेयं पव्यकलयति जोष्पवी भूतव्यारिम्॥

इसके पश्चात निम्न मंत्र का ११ बार उच्चारण करें। यदि यह प्रयोग किसी अन्य के लिए कर रहे हैं तो उसे भी स्नान करा कर लाल बन्ध पहनाये एवं लाल आळन पर बेठा कर, उसके दोनों हाथ को सबमें छोटी उंगली पकड़ कर मंत्र का उच्चारण करें इस प्रयोग को शनिवार से प्रारम्भ करें।

三

ॐ रामद्रुताञ्जाय दायुपुत्राय पराक्रमाय सीता  
दुःख विवारणाय लकादहन कारणाय महाबल  
प्रचण्डाय काल्यज मस्त्राय कोत्साहल नकल ब्रह्मण्ड  
विश्वरूपाय भगवत्मदुनोरतं घनाय यिगलन्धनायाति  
विक्रमाय सर्वविष्वफल संवेनाय दुष्टविरहणाय  
दृष्टि विरासक नाय लंजीविनी लंजीवितांज दस  
लक्ष्मण महापिलेन्य ग्राणावाय दसकंठ विश्वसन्नाय  
रामेष्टाय काल्यज महा लखाय सीता लहित  
रामवरप्रदाय शट प्रदोगाश्च दक्षिणमुखाय पंचमुख  
हत्तमते करालवदनाय त्रसरिहाय ॐ हाँ हीं हुं है

यह अपने आप में एक अत्यंत सिर्फ़ व नीर संग्रह है। यदि इस संग्रह का प्रति दिन श्री हामान जी के चित्र के समान पाठ किया जाय तब घर में भूत-प्रेस बाधा व्याप्त नहीं होती।

प्रयोग की सफलता प्राप्त हो जाने के बाद हनुमान गुटिका को थी, गृह एवं लालन वस्त्र के साथ कुछ उचित ददिया रख मंदिर में दान कर दे।

साधना समर्थी 300/-

भूत-प्रेत जाथा निवादणार्थ  
नक्षिणी प्रयोग

जिस प्रकार बटुक भैरव अथवा महाभैरव किसी भी रूप में उचित साधना के द्वारा साधक के लमस्त विघ्न शात करने में परम सहायक होते हैं उसी प्रकार भगवन विष्णु का नृसिंहावतार भी उमके अन्य अवतरणों के अपेक्षा तीव्रतम् और विघ्न विनाशक माना गया है। उधररूप में सिंह एवं अर्ध रूप से मानव - हनु अवतरण का अर्थ ही यहाँ है कि व्यक्ति के अन्यर निहित सिंहत्व स्पष्ट हो सके, और तब भूत प्रेत बाधा, यह दोष, अग्निष्ठ भ्रय, शत्रु संकट यी आग जाने हैं कि जिस प्रकार सिंह गजन से हिरण भद्र से पीले पड़ मृक्षित हो जाने हैं। कैसी भी प्रबल भूत-प्रेत बाधा आदि कर्त्ता न हो यदि साधक कात्ती हकीक मात्रा धारण कर निम्न नृसिंह भवत का २१ बार उच्चारण कर ले तो उमके ऐसे समस्त विघ्न शात होने दी है।

四

ॐ नमो लूसिहाय हिरण्यकशिपुवक्षः स्थल  
विदारणाय त्रिभुवनव्यापकाय भूत प्रेत पिशाच  
चडाकिन्ती कुलोन्मूलग्राम स्तम्भोदभवाय  
समस्तदोषान्त हर हर विसर विसर पच पच हन हन  
कम्पय कम्पय मय मथ हीं हीं फट फट ठः ठः  
पांडि कट अबापवामि न्वामि।

यदि किसी दूसरे के लिए इस प्रयोग को करें तो एक कानूनी हकीक माला पीड़ित व्यक्ति को धारण करा दें तथा उपरोक्त मंजूलाव के मात्र भिन्नतर पीली सरसों का प्रधार पीड़ित व्यक्ति पर करते रहें। कानूनी हकीक माला धारण करने करने से भूत-प्रेत आदि योनियों पर लटक कर आक्रमण नहीं कर पाती।

नाथना लामणी १५० :-

## प्रेत बाधा निवारण हेतु गोदृश्वनाथ कृत प्रयोग

नाथ साहित्य में पन्द्रहिया, जीवोंसा, जीवा, उत्तमा जैसे वंशों के उपवेग से तो आप सभी भली-भांति परिचित हैं किन्तु उन्हीं नाथ योगियों के डारा प्राप्त किया गया एक अन्य महत्वपूर्ण यंत्र है सत्रहिया वंश। यह यंत्र इसी प्रकार की समर्पयाओं के लिए अन्यतंत्र उपयोगी पाया गया है और इमशान आदि रथानों पर उग साधना बनते समय नाथ योगी इसी प्रकार के विभिन्न वंशों के माध्यम से समर्पत बातावरण को, पूर्ण-पूर्ण इमशान को अपने वर्णभूत कर लेते थे।

साधक को चाहिए कि वह तापापात्र पर झोकेत ऐसे यंत्र को प्राप्त कर शनिवार की रात्रि में साधना में बैठे। यदि पीड़ित व्यक्ति उसके सामने बैठ सके तो उसे भी बैठा लें, नहीं तो उसकी अनुपस्थिति में यह प्रयोग उसके नाम का संकल्प लेकर किया जा सकता है। विशेषकर ऐसी स्थिति में जहाँ प्रयोग के बीच में पीड़ित व्यक्ति के उग हो जाने की सम्भावना हो, उसे सामने नहीं बैठाना चाहिए।

रात के दस बजे के बाद काने बन्द पड़न कर, परिचममुख हो, काले बन्त्र पर निलों की ढोरों स्थापित करें और उस पर ताप पत्र पर अंकित सत्रहिया वंश रथापित करें। रवयं भी काले ऊनों आसन पर बैठें। साधना से पूर्ण ग्रन्थालय भैरव का समरण कर तथा एक भैरव गुटिका की भैरव स्वरूप मानकर गुड़ की ढोली का भोग लगाएं और उनसे रथा की प्रार्थना कर समस्त दिशाओं से बाधा निवारण हेतु निम्न मंत्र बोलते हुए अपने चारों ओर जल छिड़कें—

अयथर्पन्तु ते भूता वे भूता भूमि संस्थिताः ।  
वे भूता विघ्नकर्त्तरस्ते तश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

अन्तिमा ने विध्व निवारण हेतु ऊपर की ओर देखते हुए “फट” मंत्र उच्चारित करें तथा भूमि से होने वाले विद्वाँ का नाश करने के लिए बाएं पैर की पृष्ठी पर आधान करें। तुष्टपरान्त लोबान धूप जना लें और एक शिख रक्षा चक्र छात में लेकर पीड़ित व्यक्ति के नाम से संकल्प करें कि मैं अमुक नाम, अमुक नेत्र का साधक, अमुक गृह का शिष्य, अमुक व्यक्ति का प्रेत-बाधा से मुक्त कराने के लिए अपने पूज्य गुरुवेव, पूर्वजों एवं पितरों की उपस्थिति में यह प्रयोग समरप्त कर रहा हूँ। वे अपने सूक्ष्म बल डारा इसमें साफलता है। ऐसा कहकर सिद्ध रक्षा चक्र के सामने स्थापित कर दें और एक पात्र में जल सख्तकर, तेल का बड़ा दीपक लगाकर, काले

हकीक की भाला से निम्न मंत्र की पांच भाला मंत्र-जप करें।

### मंत्र

ॐ हाँ हीं क्रीं क्रीं क्रट

ध्यान रखें कि बिना पाच भाला मंत्र-जप किए इसमें कोई हनुचत हो, भय उत्पन्न हो, आडट भाए नब भी साधक मंत्र-जप का क्रम बनाए जाए, किन्तु मंत्र जप के काल में यदि कोई आकृति ल्प्पट लिखाई दे जाए तो बिना किसी हिचकिचाहट या विलम्ब मंत्र-जप की स्थिति कर सामने रखें पाच वंश जल लेकर उस पर छोटे मारें। ऐसा करने से यह प्रयोग पूर्णतया यित्त हो जाता है।

मंत्र जप के उपरान्त साधक शेष जल पीड़ित व्यक्ति को पिला दें और यदि व्यक्ति इसमें कोई बाधा उत्पन्न हो तो उसके शरीर पर छिड़क दें। इस किया से वह प्रेत बाधा से ब्रह्मित व्यक्ति अन्यन्त ब्रांधित और उच हो सकता है, किन्तु विनित न हों, इसके बाद साधक को जब भी अवश्य मिले प्रेत बाधा से ब्रह्मित व्यक्ति के बाएं हाथ में सिद्ध रक्षा चक्र धारण करा दें। अधिकांश स्थितियों में बूनर हो जिस से पीड़ित व्यक्ति की उगता में कभी जाने लग जानी है।

साधना के उपरान्त काल हकीक की भाला, सत्रहिया यंत्र एवं अन्य पूजन सामग्री किसी काले वरत्र में बोंधकर विभजित कर दें।

साधना सामग्री 300/-



तुम्हें यह पौधन आसानी से जिल गारा है,  
पर यह सल्ला तुम व्यर्द्य में काट रहे हो, तुम  
इसका सङ्कुपटोग लहीं कर रहे हो, तुम्हे पाता  
ही नहीं है, कि जीवन का उद्देश्य क्या है,  
तुम्हे मुरकुरगे हरे मुद्दामें समर्पित होला है,  
अपनी जीवन का भेरि हाथों जिमाण करजा  
है, भेरि श्वासों से अपनी जीवन को संवारला  
है, भेरि धड़कनों से अपनी जीवन का शृंगार  
करजा है और मुद्दामें लीज हो कर जीवन को  
सौन्दर्य और सहा में साक्षात्कार करजा है  
एवं तुम “शिष्य” कहला सकोगे।

-सङ्कुलङ्घ-

# श्री कृष्ण-द्वारेश्वर

प्रसीद भजयन्! हथमङ्गानात् कुण्डितात्मने।  
तवांगि - पकड़ - रजो - राजिणी भक्तिमुच्चमाम् ॥१

\* \* \*

अज! प्रसीद भजवन्नमित - धुति - पञ्जर!  
अप्रमेय! प्रसीदासमद-हन् पुरुषोत्तम ! ॥२

\* \* \*

स्व - स्मवेद्य! प्रसीदासमदानन्दात्मझनामय।  
अचिन्त्य-सार, विश्वात्मन! प्रसीद परमेश्वर! ॥३

\* \* \*

प्रसीद तुङ्ग! तुङ्गनां, प्रसीद शिव - शोभन!  
प्रसीद गुण-गम्भीर! गम्भीरणां महा-धुते! ॥४

\* \* \*

प्रसीदाद्यत्त - विस्तोर्ण, विस्ताणन्नामनोचर!  
प्रसीदादुर्द्विं-जातीनां, प्रसीदादानन्दान्त-दायिनाम् ॥५

\* \* \*

जुरोजरीयः सर्वेश! प्रसीदानन्द - देहिनाम्।  
जय माधव मायात्मन्! जय शशवत शङ्ख-भृत! ॥६

\* \* \*

जय शङ्ख - धर श्रीमन्! जय लन्दक - लन्दन्!  
जय चक्र-जदा-पाणो! जय देव जलार्दन! ॥७

\* \* \*

जय रत्न-वराबद्धु-किरीटाक्षरन्त-सस्तक!  
जय पक्षि-पतिच्छाया-निरुद्धार्क - करारुण! ॥८

\* \* \*

नमस्ते नरकाराते! नमस्ते मथु - सूदन!  
नमस्ते ललितापाङ्क! नमस्ते नरकान्तक ॥८

\* \* \*

नमः पाप - हरेशान्! नमः सर्व - भवापहु।  
नमः सम्भूत-सर्वात्मक्! नमः सम्भूत-कोस्तुभा! ॥९०

\* \* \*

नमस्ते नयनातीत! नमस्ते भव - हारक!  
ममो विभिन्न-वेशाव, नमः श्रुति-पथातिज! ॥११

\* \* \*

नमस्त्रिमूर्ति - भेदेन, स्वर्ग-स्थित्यन्त - हेतवे।  
विष्णवे त्रिदशाराति - जिष्णवे परमात्मने ॥ १२

\* \* \*

चक - भिन्नारि - चक्राव, चक्रिणे चक - बन्धवे।  
विश्वाय विश्व-बन्धाव, विश्व, भूतानु-वर्तिने ॥१३

\* \* \*

नमोऽस्तु योगि-ध्येयाव, नमोऽस्त्वध्यात्म-रूपिणे।  
भूति-प्रियाव भूतानां, नमस्ते मुक्ति-दायिने ॥१४

\* \* \*

पूजनं हवनं चेष्टा, द्यानं पश्चात्प्रस्त्रिया।  
देवेश! कर्म सर्व मे, भेदवाराथनं तव ॥१५

\* \* \*

इति हवन-जपाचार्म-भेदतो विष्णु - पूजा -  
निरतो हृदय कर्मा वस्तु मंत्री चिराव।  
स खलु सकल-कामान् प्राप्य कृष्णान्तरात्मा  
जन्म-मृति-विमुक्ता-मुक्तमा मुक्तिमंति ॥१६

\* \* \*

जो-जोप-जोपिका-वीतं, जोपालं जोपु जो-प्रदम्।  
जो-पेरीहच जो-सहस्रेनोमि जोकृत - जावकम् ॥१७

\* \* \*

प्रीणवेदनवा स्तुत्या, जगद्वाथ जगन्मवम्।  
थर्मर्थ - काम - मोक्षाणामाम्बवे पुरुषोत्तम् ॥१८

\* \* \*

## श्रीकृष्ण-स्तोत्र

अर्थ

हे भगवन् प्रसन्न हों। मेरी आत्मा अज्ञान से भ्रमित है। मुझे आपके चरण-कमलों के पदम में आसक्त श्रेष्ठ भक्ति प्राप्त हो ॥१॥

हे अनन्दि भगवन् ! आप असीम तेज पुञ्ज स्वरूप हैं। प्रसन्न हों। मेरे दुःख को नष्ट करनेवाले हैं अनुपम पुरुष-श्रेष्ठ। प्रसन्न हों ॥२॥

हे परमेश्वर ! आप ही स्वयं भगवन के जगन्नेवाले आनन्द मय आत्मा हैं। आप निर्विकार हैं, आपकी भक्ति उचिन्तनीय है, आप विश्व-रूप हैं। मुझ पर प्रसन्न हों ॥३॥

आप उत्तमों से भी उत्तम हैं, आप कल्पागकारी शोभावाले हैं। आप गम्भीर गुणवानों से भी जृण-गम्भीर हैं। हे महा तेजस्वी ! मुझ पर प्रसन्न हों ॥४॥

आप विश्व - रूप में फैले हुए हैं, किर भी अदृश्य हैं। विश्व व्यापक तत्त्वों के लिए भी आप अदृश्य हैं। दुःखों से व्याकुल प्राणियों पर आप प्रसन्न हों। उत्तमों से भी अधम लोगों पर आप प्रसन्न हों ॥५॥

हे परमेश्वर ! आप श्रेष्ठों में भी श्रेष्ठ हैं। आप असरुद्य शरीर धारियों पर प्रसन्न हों। हे माधव ! आप माया-मय हैं, आपकी जय हो। हे शङ्ख - धर ! आप नित्य हैं, आपकी जय हो ॥६॥

हे श्रीमान शङ्ख - धर ! आपकी जय हो। हे नन्द-नन्दक ! आपकी जय हो। हे बक्त-गदा-हरन ! आपकी जय हो। हे देव जनार्थन ! आपकी जय हो ॥७॥

आपके पिर पर श्रेष्ठ रत्न-जटित मुकुट है। आपकी जय हो। गहड़ के पङ्कों की छाया से आपके शरीर पर लूर्य की किरणों नहीं पहुंच पातीं। हे लोहित-वर्ण ! आपकी जय हो ॥८॥

हे नरक-शत्रो ! आपको नमस्कार। हे मधु-नाशक ! आपको नमस्कार। हे चार-नेत्र ! आपको नमस्कार। हे नरक-नाशक ! आपको नमस्कार ॥९॥

हे फाप-नाशक इश्वर ! आपको नमस्कार। हे सर्व-भय-नाशक ! आपको नमस्कार। हे विश्वभूमि ! आपको नमस्कार। हे कौस्तुबधारी ! आपको नमस्कार ॥१०॥

हे स्व-नाशक ! आप दुष्टि से परे हैं। आपको नमस्कार। आप विनिधि प्रकार के वेष्वाले हैं, आप कानों से भी परे हैं। आपको नमस्कार ॥११॥

आप परमात्मा हैं, फिर भी तीन अर्थों में सुषिति, स्थिति और स्थान करते हैं। विष्णु-रूप में आप देवताओं के शत्रुओं को पराजित करते हैं। आपको नमस्कार ॥१२॥

आप सूर्यशन-चक्र द्वारा शत्रुओं के व्यूह का नाश करते हैं। आप चक्र - धरती हैं, आप चक्र - वन्धु हैं। आप विश्व - रूप हैं और विश्व द्वारा वन्धनीय हैं। विश्व के सभी प्राणी आपके ही अनुयायी हैं ॥१३॥

योगि-भण आपका ध्यान करते हैं। आपको नमस्कार। आप अश्रात्ममय हैं। आपको नमस्कार। आप भक्तों का भक्ति विश्व व्यापक तत्त्वों के लिए भी आप अदृश्य हैं। मेरे और मुकुट देते हैं। आपको प्रणाम ॥१४॥

हे देवेश ! पूजा, होम, वेदा, ध्यान और प्रणाम - मेरे सभी कर्म आपकी उत्तरान-रूप हैं ॥१५॥

इस प्रकार होम, जप, पूजा आदि सभी कर्मों को इत्य से विष्णु-पूजा मानते हुए जो सब सुधक संता चिन्तन करता है, वह स्वभी अमोहन कामनाओं को पाकर अपनी आत्मा से कृष्ण - रूप हो जाता है ॥१६॥

जो 'गोप, गोपी' और 'गो-भण' द्वारा वेदिन होकर 'गो-पानन' करते हैं। जो 'गो' अर्थात् पृथ्वी को 'गो' (रजिम) प्रदान करते हैं। 'गोप'-कृन्त तिन्हें 'गो-स्वहस' अर्थात् सहस्रो वाक्यों द्वारा स्तुति कर प्रवन्न करते हैं, उन्हीं 'गो-कृन्त-नाशक' को मैं नमस्कार करता हूँ ॥१७॥

धर्म-दर्थ-काम-मोक्ष का प्राप्ति के लिए नगद में व्याप पुरुषात्म ब्रह्मात्म को इस स्तवन के द्वारा प्रसन्न करना चाहिए ॥१८॥



लिखा  
और दर्शि  
अनेक नि  
है, जिस  
स्थिति  
स्पष्ट है  
होता चा  
आपको  
का पूर्वा  
है। सीनि

जीवा  
ना  
में, अ  
है औ  
तक द  
होगी

गढ़न  
भवि  
में वि  
परिव  
३०८  
भिज  
आप

# भूत-भवित्व माला

भविष्य के गम्भीर से शाक लेने की मनुष्य की प्रारम्भ से ही उत्सुकता ही है, और इसी क्रम में उत्तरकार आई ज्योतिष, स्मृति-शास्त्र विज्ञान, नस्त्र विज्ञान आदि अनेक विद्याएँ, ज्योतिष की तरही गणज्ञाओं की अपेक्षा यह मात्रा ज्यादा थेट्ट है, जिसके प्रभाव से आपको भूत व भविष्य की बदलाओं के आधार होने की स्थिति बदले लगती है। यदि साक्षर जाने व्यक्ति का भूतकाल आपके सामने संपर्ष हो जाता है, तो आप निराचर हो सकते हैं, कि वह व्यक्ति विश्वास चोरध्य होगा या नहीं, उसके साथ कार्य करना उचित होगा या नहीं। इसी प्रकार यदि आपको अपना भविष्य जान हो जात, या भविष्य में बदले जाती किसी दुर्घटना का पूर्वान्यास हो जात, तो उस दुर्घटना को नामन्त्रण का प्रचार-जनन किया जा सकता है। संशित संक्षया में सिद्ध की यह मात्रा साथकों के लिए ब्रह्मण है।

इस माला को किसी तात्परात्र में चावल का आसन देकर रथायित कर दें। नित्य इसी माला से '३० कुंह हुं की ३०' का प्रारंभ काल जप करें। जप के बाद माला को चावल पर धून रथायित कर दें। ऐसा नित्य करें। दो माह बाद माला को किसी मंदिर में योगा दें।

## जीवत का सर्वश्रेष्ठदात - 'ज्ञानदात'

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। २० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं प्राप्त कर मंदिरों में, अस्पतालों में, समारोहों में, पंगल कार्यों में, अपने मित्रों को, धार्मिक परिवारों को दान कर सकते हैं और उस प्रकारउनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से भालौकित कर सकते हैं, जो अभी तक उससे वंचित है। इस किया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता प्राप्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

## आप क्या करें?

आप कवलन एक पत्र (मंलभू पारस्टकार्ड क्रमांक ३) भेज दे, कि 'मैं अपने एक परिचयत का पत्रिका का वार्षिक मंदस्य बनाना चाहता हूँ एवं २० पूर्व पत्रिकाएँ मंगाना चाहता हूँ। आप नि.भूल्क मंत्र रिफ्ल प्राण प्रतिष्ठित 'भूत भविष्य माला' ३५०/- (२० पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क ३००/- + डाक व्यय ५०/-) की बी. पी. पी. से भिजवा दें, बी. पी. पी. आपने पर्य में पोस्टमैन को धन राशि देकर दुड़ा लंगा। बी. पी. पी. छूटने के बाद मुझे १० पत्रिकाएँ रजिस्टर्ड डाक डारा भेज दें एवं मेरे मित्र को एक वर्ष तक पत्रिका भेजते रहें। आपका पत्र आपे पर इम ३००/- + डाक व्यय ५०/- = ३५०/- की बी. पी. पी. से मंत्र रिफ्ल प्राण प्रतिष्ठित 'भूत भविष्य माला' भिजवा देंगे, जिसमें कि आपको यह इलम उपहार मुश्किल रूप में प्राप्त हो सके। आपको ढाई पत्रिका भेजकर आपके मित्र को सदस्य बना दिया जायेगा।

सम्पर्क -

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

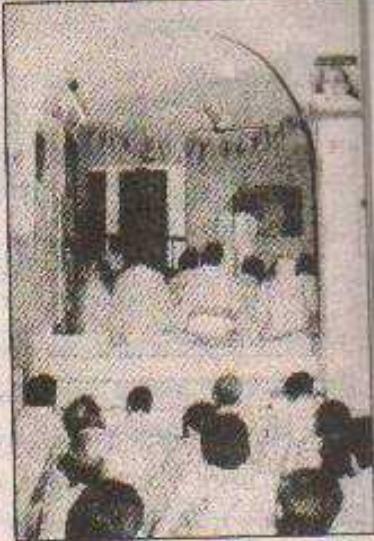
मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली भार्गव, हाईकोर्ट कॉलोनी, मोधपुर - 342001, (उज्ज्याली)

फोन - 0291 - 2432209, 2433623 डेलीफिक्स - 0291 - 2432010

“સાંઘિક” ૨૦૧૩ સત્ત્ર-અનુભૂતિ વિસ્તાર : ૩૮ | ૫

# गुरुद्वारा पिल्ली

जिस भूमि पर सैकड़ों प्रयोग और असंख्य दीक्षाएं  
सम्पन्न हो चुकी हैं, उस सिद्ध चैतन्य दिव्य भूमि  
पर ये दिव्य साधनात्मक प्रयोग



समस्त साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योग्या प्रारंभ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिनों पर दिल्ली 'सिद्धाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विद्यि-विद्याम के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम ६ से ८ बजे के बीच सम्पन्न होती है यदि अद्वा व विश्वास हों, तो उसी दिन से साधनाओं में सिद्धि का अनुभव भी होने लगता है।

शुक्रवार

19-09-2003

शत्रुनाशक छिन्नमस्ता प्रयोग

प्रत्यक्ष व्यक्ति अपने जीवन में शत्रुओं से परेशान रहता ही है, जोहे वे बोला गए ही यो काम, क्षोधादि आन्तरिक, वे द्योषा ही उसे पांडित करने ही रहते हैं और उनकी उचिति में बाधाएं उत्पन्न करते ही रहते हैं। अधिकतर ऐसा होता है, कि व्यक्ति-चाह कर भी उनके चुंगल में नहीं निकल पाता। यदि आपके शत्रु भी आप पर लाती हो रहे हों, तो आपके इस प्रयोग को करें। महाविद्या छिन्नमस्ता शत्रुओं पर वज्र की तरह प्रभाव करती है। उनका नाम निशान नहीं रहता है। आप इस प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न करें। इसकी प्रचलना को अपने गीतन में उनार कर उन पर विजय प्राप्त कर सकते हैं।

**शनिवार** 20-09-2003 साधना सिद्धि प्रयोग  
मध्य तन और गंतों के इस विशाल समृद्धि में अवगाहन करने का प्रयोगन मिलता ही होता है। यह सिद्धि किसी को शीघ्र तथा किसी को बहुत उचिक प्रयास के बाद मिल पाती है, और किसको बहुत प्रयास के बाद भी नहीं मिलनी वे साधनाओं को भव्य जाल ही मान लेते हैं। एन्नु यह स्वतं नहीं है, यदि किसी को मंजिल नहीं मिलती तो इसका एह अर्थ नहीं है, कि मांजिल ही हो नहीं। हाँ यह अवश्य सत्य है, कि मंजिल तक का रास्ता अप्त्वा या और वज्र तक पहुंचते पहुंचते व्यक्ति विशेष ही गया, उद्यवा यह भी ही सकता है, कि उन सही गम्भीर का जान नहीं हो या किस जो रास्ता मंजिल तक आता हो, वह किसी कारण बहुत पहुंचता है। मनुष्य के मन्त्रित नन्तुओं में व्यय के ही विकारों के कल्पना करें तो ये शैय्या एवं अन्तीं हैं, जो साधनाओं में सिद्धि माप के अवकाश कर देती हैं। इस प्रयोग द्वारा ऐसी ग्रियरों के खुनने को छिपा प्रारम्भ ही जाती है और इस प्रयोग को कर साधक को शीघ्र ही साधनाओं में सफलता अनुभूत होने लगती है।

रविवार

21-09-2003

टेलीपेठी साधना

यह यह सम्भावत है, कि दूस लाभने वाले व्यक्ति के मन की बात पहने से ही जान जायें। क्या दूस जान सकते हैं, कि विष्य व्यक्ति के साथ व्यापार कर रहे हैं, उनके मन में कैसी भावनाएं हैं? वह क्या सोच रहे हैं? कहीं उनसे ये शब्दों तो नहीं होगा? आपकी पत्नी के मन में या आपके पति के मन में क्या विवार है, क्या भावना है? आपके उच्चाधिकारी और आपके सहयोगी आपके बारे में क्या सोच रहे हैं? आपके गच्छ आपके बारे में क्या योजनाएं बना रहे हैं?

टेलीपेठी एक प्रसिद्ध विद्या है, जिसके द्वारा दूसरे के मन के विद्यारों को एक खुली गुरुत्वक की भाँति पढ़ा जा सकता है, जोहे वह व्यक्ति निकट से अधिक दूर किसी न्याय भर रहता ही साधना द्वारा मन्त्रित के उन नन्तुओं को चेतना प्राप्त होनी है, और उनके जागत होने पर मनुष्य की यह सुप्रभावीकरणीय जागत होती है, जिससे उसके लिए कुछ भी किए रखरख नहीं रह जाता है।

इन तीनों विवरणों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे

१. आप अपने चिन्हों दो शिरों लाखवा स्वरूपों को / जो परिवार के सदस्य नहीं हैं, पर-त्रै-यंत्र विज्ञन-परिका का वार्षिक सदस्य बनाकर दिल्ली गुरुद्वारा मैं सम्पन्न होने वाले शिरों एवं प्रयोग में भाग ले सकते हैं; परिका की साधना का एक तर्पण शुल्क लघुरे 240/- है, परन्तु आपको मात्र भाग्य 460/- ही बना करना है। प्रयोग में सम्बन्धित विशेष संबंध, पाण प्रतिष्ठित सामग्री विवरिका, आदि आपको निःशुल्क प्रदान की जाएगी।

२. यदि आप परिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं तथा अपने किसी एक मित्र के लिए परिका वार्षिक साधना प्राप्त कर उपरोक्त किसी साधना में भाग ले सकते हैं।

३. परिका सदस्य बनाकर आप किसी एक परिवार के बाहर परिमाण की इस प्रवनसाधनात्मक तान धारा से शुल्क एवं एनोन पर उपयोगवारी कार्य करने हैं। यदि आपके प्रयोग से एक परिवार में अवाक कुछ प्राणियों में इच्छित विषमन, साधनात्मक वितरन वा पाता है, तो यह आपके जीवन की स्फूर्तिनामा जा हो प्राप्त है। उपरोक्त प्रयोग तो निःशुल्क है और गुरु कृपा काली कर्मना स्वयं साधक को प्राप्त होने हैं। प्रयोगों की न्यौठाकर राशि को अर्थ के तराजू से नहीं तोल सकते।

### गुरुधारा में दीक्षा व साधना का यहन्त्व

शुल्कों में बदलन आता है, कि भारतीय मंत्र वपु नियम जाए ना अग्री उत्तम बोला है, उससे भी अधिक पूज्यवादी होना है यदि नहीं कि किनारे के उसमें भी अधिक दृष्टि नहीं और उससे भी अधिक पर्याप्त नहीं करे, तो और पर्याप्त भी यहि विषयालय ने किला जाए, तो और भी कड़ गूढ़ येते जाता है। इन सभासे मात्र नियुक्त होना है यदि लाखवा गुरु कर्मणों में देखकर साधना सम्पन्न नहीं होए यदि गुरुद्वारा आपना भा. अम अर्थात् गुरुधारा में ही यह साधना प्रदान करे, तो उनमें बड़ा सामग्र्य और कुछ होता ही नहीं।

कुछ ऐसे स्थान होते हैं, जहाँ विषय लालियों का कास सर्वेव रहता ही है। जो नदियाँ होते हैं, वे स्थाय जग में अपना महाराष्ट्र प्रतिपाल उपर्युक्त में स्वरूपित रहने द्वारा प्रत्येक गालिविष्टि का सुहाग स्थापना में संचालन करते ही रहते हैं। स्वरूपित यदि शिख गुरुधारा में यहाँ कर गुरु से साधना, मंत्र एवं दीक्षा प्राप्त करता है और गुरु चरणों का अर्थ कर उनकी जाता में साधना प्राप्त करता है, तो उसके मीमांसा में देवता सांहेभारा जगते हैं।

तीव्र स्थल पुण्यग्राम है पर विषय लालियों का स्थान में अपनियाँ होती हैं गुरुद्वारा में साधना में संचालन करते ही रहते हैं। गुरुधारा में साधनामुद्रित का निवास स्थान रहा है, जो विषय स्थान पर गुरु कर्मणों में अपनियाँ होती हैं गुरु पुण्य में गंगा प्राप्त करने की इच्छा ही साधक में तब उत्तम होती है, जब उसके गर्वकारों को साधनात्मक प्रयोगों की अखल निर्धारित की गई है।

### यो जना केवल इन ३ विवरों के लिये 19, 20, 21 सितम्बर

किन्हीं पांच व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य बनाकर उनका साधना सुलक 240x5=Rs. 1200/- जमाकर के या उपरोक्त राशि का एक डाक्टर मंत्र-त्रै-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर सदस्यों के डाक पते लिखवाकर उपरोक्त सदस्य में दीक्षा भाष्य निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं।

यदि दीक्षा फोटो बांधा प्राप्त करना चाहें तो विषयवित्ति के पूर्व ही अपना फोटो पूर्व पांच सदस्यों के सदस्यतात् लुप्त की जाति का डाक्टर मंत्र-त्रै-यंत्र विज्ञान के नाम से बनाकर विज्ञान की रसों पर भेजे आपका फोटो पांच सदस्यों के नाम पते पूर्व डाक्टर हमें उपरोक्त विषय से पूर्व ही प्राप्त ही जानी चाहिए पर विज्ञान से विज्ञान पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकती। यदि शाश्वत निःशुल्क प्राप्त करना चाहें तो विज्ञान पर दीक्षा सम्पन्न न हो सकती।

### शक्तिपात्र युक्त दीक्षाएः

## भुवनेश्वरी दीक्षा

भुवन अर्थात् इस संसार की द्वारामित्री भुवनेश्वरी ज्व. 'ही' इति अंत्र धारिणी है, वे भुवनेश्वरी द्वारा

ही भी अधिरुद्धात्री देखी हैं, महाशिवाओं वे प्रभुत्व भुवनेश्वरी द्वारा और इति दोवै दी सत्रविद्वत् देवी भवती ज्वर्ति हैं, जो भुवनेश्वरी सिद्धि प्राप्त करती है उस साधक वा आज्ञा चक्र जागत होकर द्वारा इति, स्वरण शक्ति अर्थात् शिक्षित हो जाती है। भुवनेश्वरी ज्व. जगतथात्री अर्थात् जगत् सुख प्रदात्र करने देवी द्वारा कहा जाया है। दिव्याननादा, कुबेर सिद्धि, रत्नप्रीति प्राप्ति के द्विष्ट भुवनेश्वरी साधन उत्तर भाजी गई है; इस सहविद्वा ज्व. अराधका एवं दीक्षा प्राप्त करने वाले द्विजि ज्व. द्वारा दीक्षा का वास होता है।

Any Friday

# Annapoorna Sadhana

# A total life!

The most easy of all Sadhanas are the Sadhanas of Goddess Lakshmi, the deity who blesses one with wealth and prosperity. And there is a good reason for this. Not only the common man but even the saints and the ascetics need wealth for their altruistic ventures. For the householder in fact Lakshmi Sadhana is the most important ritual.

The most benevolent form of Lakshmi is Shree Sundari or Annapoorna. In this Avatara the Goddess banishes all the problems from the lives of her devotees and blesses them with everlasting prosperity and comforts.

Shree Sundari or Annapoorna is none other than Goddess Parvati, the divine consort of Lord Shiva. She is a Goddess who not only helps one attain to pleasures and riches but also to Moksha or spiritual success. The ancient texts in fact state that not just one but 108 boons can be had from the Sadhana of Goddess Mother Annapoorna.

It is impossible to list all but the most important boons that can be had are a disease free healthy body, a house, sons and daughters, a good spouse, enough wealth, mental peace and presence of the divine gods in one's house.

This Sadhana is not just powerful rather it is also quick acting. If one obtains the blessings of one's Guru and follows the rules prescribed for the Sadhana then there is no chance that the ritual could fail.

This amazing Sadhana can be started on any Thursday night after 9 pm and it has to go on for 14 days at the same place. Have a bath and wear pure yellow clothes and sit facing the North on a yellow mat.

Cover a wooden seat with a red cloth and on it make a mound of unbroken rice grains. On the mound

place an *Annapoorna Shankh* (special Mantra energised conch shell).

Light two lamps one filled with mustard oil and the other with ghee. First of all chant *Om Gam Ganpataye Namah* eleven times and pray to Lord Ganesh for success. Then offer prayers to the Guru and chant one round of Guru Mantra.

Next make eight marks with saffron on the Annapoorna Shankh representing the eight forms of Lakshmi. Each time chant one of the following Mantras.

*Om Dhan Lakshmyei Namah, Om Dhaanya Lakshmyei Namah, Om Dharaa Lakshmyei Namah, Om Keerti Lakshmyei Namah, Om Aayu Lakshmyei Namah, Om Yash Lakshmyei Namah, Om Putra Lakshmyei Namah, Om Vaahan Lakshmyei Namah.*

Offer rice grains, flowers and vermillion on the Shankh and then chant thus.

*Om Mahaalakshmyei Namah, Om Shivaayei Namah, Om Annapoornaayei Namah*

Next with a *Hakeek or rock crystal (sfatik)* rosary chant 11 rounds of the following Mantra.

*Om Ayeim Hreem Shreem Annapoornaaay Shivaayei Namah*

Do this daily for 14 days. After the completion of the Sadhana drop rosary in a river or pond. Tie the Shankh in a red cloth and place it in your safe or the place where you keep your valuables. Offer food and gifts to eight small girls.

Without doubt this Sadhana manifests its wonderful results very soon provided that it is tried with full faith and devotion.

Sadhana Articles - 360/-

**Vindhavasini Sadhana**

Any moonless night

# Say no to problems!

Life means walking on the sharp edge of a sword. There never is an end to the problems of life. Success means winning in the various ordeals of life in spite of the problems and travails that one has to go through.

Problems and hurdles in life never can be predicted. Nor do they announce their advent. Ailments, poverty, problems from the state side, obstacles in business – there is simply no end to the list of problems that one might have to face in life. And on top of all this if someone uses some evil ritual against you then you would have it.

Can Sadhanas help one get rid of and protect one self from the various problems of life?

Sure they can! In the field of Sadhana the Goddess Vindhavasini is most known for her protective powers. Ask any expert of the science of Tantra and he shall tell you that if a person has attained success in Vindhavasini Sadhana then no problem could deter him, no obstacle could obstruct his way and no evil ritual or person could harm him.

Vindhavasini Sadhana is a wonderful ritual for freeing oneself of all fears, problems, pains and anxiety. Due to the grace of the divine Mother Goddess one is filled with divine energy and then the problems of life fail to disturb one. It is a key that opens up the door to success in life for once one has no longer to worry about problems one could make remarkable progress in one's sphere whether it is in the material world or the spiritual.

This is a eleven day Sadhana that must be started in a **moonless night or Amavasya**.

At night after 10 pm have a bath and wear red clothes. Make a mark with vermillion on the forehead. Sit on a red mat facing South. Cover a wooden seat

with red cloth. In a plate place some rose petals. On them place a *Vindhaveshwari Yantra*. Light a ghee lamp. Offer vermillion, rice grains, rose petals on the Yantra.

Offer prayers to Lord Ganpati chanting *Om Gam Ganpataye Namah* five times. Then chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success in the Sadhana. Next chant following Mantra concentrating on the divine form of the Goddess in your mind.

*Arunn-chandan-vastra-vibhooshitaam,  
Sajal-toyad-tulyanarooruhaam. Smar-  
kurangdrisham Vindhavaasini Kramuknaag-  
lataa-dal-pushpkaraam*

Place seven betel nuts in a line before the Yantra and then offer vermillion on each chanting one of the following Mantras each time.

*Om Kaamdaayei Namah, Om Maandaayei  
Namah, Om Naktaayei Namah, Om Madhuraayei  
Namah, Om Madhuraan-naayei Namah, Om  
Narmadaayei Namah, Om Bhogdaayei Namah.*

Then with a *rock crystal* (*sfatik*) rosary chant 51 rounds of following divine Mantra –

*Ehyehi Yakshi Mahaayakshi  
Vindhavaasini Sheegram Me Sarva Tantra  
Siddhim Kuru Kuru Swaahaa*

Do this for eleven days. After that drop the Yantra and rosary in a river or pond. Tie the seven betel nuts in a black cloth and place the bundle in a sacred place in your house. This shall banish all problems from your house and make your life easier and smoother.

If tried with full faith and concentration there can be no better Sadhana for a householder to get rid of the various problems and obstacles of life.

**Sadhana Articles – 300/-**

# The benevolent Lord!

It is said that no worship, Sadhana or ritual can be complete without first worshipping Lord Ganpati. The reason behind this belief is that Lord Ganesh is a deity who banishes all problems and ensures success in the venture that one has undertaken. Hence if Lord Ganpati is worshipped at the onset of some task or ritual then the chances of success becomes several times more.

If this is so how about trying a Sadhana of Lord Ganpati? Surely there could be no better way of assuring one's success than performing a Sadhana of Ganesh. Be it an exam, start of a career, launch of a business venture or any task, if Lord Ganpati is worshipped as prescribed by the scriptures then nothing could stop one from attaining the highest level of success.

The word Ganesh has a deep meaning. The syllable *Ga* in it means wisdom while the syllable *Na* means spiritual success. Hence it is clear that through the worship of Lord Ganesh one could attain to wisdom, worldly success and spiritual emancipation.

Presented here is Shakti Vinayak Ganpati Sadhana that could bring all round success in one's life. If tried with faith and devotion one could be blessed with wealth, a good spouse, power, success in one's sphere of work and prosperity.

This Sadhana can be started on any Wednesday. Early in the morning have a bath and then wear fresh yellow clothes. Sit on a yellow mat facing the North. Cover a wooden seat with yellow cloth. On it place a copper plate. In the copper plate place *Shakti Vinayak Yantra* on a mound of rice grains.

Chant one round of Guru Mantra and pray to the Guru for success. Thereafter take some water, rice grains, grass blades and yellow flower petals in the

right palm and offer them on the Yantra. Light a ghee lamp and incense.

Next concentrate your mind on the divine form of Lord Ganpati and chant thus:

*Vishnnaankush Vakshootram Cha  
Paasham Dadhaanam Kareirmodakam  
Pushkareen.*

*Swapatnyaayutam Hembhooshaa-  
bharaaddyam Gannesham Samudhya-  
dineshaablimeede.*

i.e. I pray to Lord Ganpati who radiates like the rising sun, who wears gold ornaments, who wields a prod and Aksha Sutra in his left hands and a lasso and a mace in the right hands, who holds a Laddoo in his trunk and who is seated on a divine seat with his divine consort.

Next chant the twelve divine names of Lord Ganpati.

*Sumukhaay Namah, Ekadantaay Namah,  
Kapilaay Namah,*

*Gajkarnnakaay Namah, Lambodaraay  
Namah, Vikataay Namah,*

*Vighnanaashaay Namah, Vinaayakaay  
Namah, Dhunraketave Namah,*

*Gannaadhyakshaay Namah, Bhaal-  
chandraay Namah, Gajaananaay Namah*

Then take the yellow Hakeek rosary in the right hand and chant twenty one rounds of the following Mantra.

*Om Hreem Greem Hreem*

After the Mantra chanting is over light a Yagya fire and make 108 oblations in it with rice grains mixed with butter each time chanting *Om Hreem Greem Hreem Swaahaa*. After the Sadhana go and drop the rosary and Yantra in a river or pond.

Sadhana Articles - 240/-

# Daughter still unmarried!

For parents in India getting a daughter married when she comes of age is a big responsibility. And even parents in other parts of the world might have experienced this feeling of responsibility.

To get one's child married is one thing but to get a good match, a caring husband and a good family is quite another matter. Sometimes even when one's daughter is virtuous, learned, skilled in household work and very talented one cannot find the right match for her. And as the years pass and the age becomes more the prospect of finding a good groom gets even dimmer.

In desperation the harried parents try everything – approaching marriage bureaus, seeking help of relatives and friends, bringing out advertisements in the matrimonial columns and even consulting the local astrologer. But in many cases nothing seems to work. Then the big question rises in one's mind.

Is there no solution to this problem?

Delay in marriage could be due to many factors like evil planetary aspect, Dasa of unfavourable planet, past bad Karmas and ancestral curse. And the ancient scriptures state unanimously that there is but one unfailing means of nullifying all these baneful effects.

All unmarried girls in India know that worshipping Lord Shiva and Mother Parvati is a sure means of ensuring a good marriage. But for the best result instead of simple worship and fasting one should try Vedic Sadhanas. Fasting does little but strengthen one's will power. To get the desired result one need not starve oneself. One just needs to supplicate to the Lord with the help of divine Mantras which never fail to produce the desired result.

A very powerful Sadhana for girls who desire to get married or women who are already married but are facing problems in marriage is the following Shiva

## Gouri Sadhana

This Sadhana must be tried on a **Monday**.

Early in the morning have a bath and wear white clothes. Sit on a white mat facing North. Cover a wooden seat with white cloth. On some white flowers place **Mouli Manni** in a copper plate. Offer on it rice grains and vermillion. Then offer flowers on it chanting **Om Namah Shivaay** five times. Light a ghee lamp. Then chant one round of Guru Mantra. Next join both palms and chant thus –

*Shivaay Gourivadanaabjavinda Suryaay  
Dakshaadhwaa Naashkaay. Shreeneelkanthaay  
Vrishdhwajaay Tasmei Shikaaraay Namah  
Shivaay.*

i.e. I pray to Lord Shiva who destroyed the Yaga of Prajapati Daksha and who sits on a white bull with his divine consort Gouri whose face is beautiful like a lotus.

Then chant five rounds of this Mantra with a **Rudraksha rosary**.

**Om Gloum Gam Om Gouripataye Namah**

Do this for three consecutive Mondays. The wonderful thing about this Mantra is that it also contains the Beej Mantra **Gam** of Lord Ganpati who banishes all obstacles. Thus through this powerful Mantra one worships Lord Shiva, Mother Gouri and their powerful son Lord Ganpati. Such a powerful combination no doubt would bring about the desired result in no time. If the girl who wishes to get married cannot try the Sadhana her parents or brother or sister or relative could try on her behalf. After the Sadhana place the rosary in the worship place and tie the **Mouli Manni** on the wrist or the arm of the girl. Let it remain there till a good match is arranged. After the marriage drop the Manni and rosary in river or pond.

Sadhana articles - 339/

31 अगस्त 2003

## अष्ट लक्ष्मी साधना शिविर

शिविर स्थल : एस. डी. कॉलेज, नगाधरी रोड  
अम्बाला वैन्ट (हरियाणा)

आयोजक :

अम्बाला : इन्द्रराज छिक्कर - 0171-2660305 ○ कृष्ण गम्भीर  
- 0171-2640023 ○ रघुव्याम कौशिक - 0171-2670123 ○  
नरेश दिमान - मो. 09416188249 ○ मेलर ग्रीन नम्बरदार -  
01731-266229 ○  
शाहबाज : अशोक खुराना - 01744-242460 ○  
यमुनानगर : डिरेक्ट कुमार - 01732-242969 ○ रिषीपाल -  
01735-254103 ○  
नारसील : पुल चन्द सैफरा - 01282-255064 ○ विजय शस्त्री  
चंद्रीगढ़ : शशि सिंह - 0172-2695255 ○ विजय मल्होत्रा -  
0172-2612372 ○  
सरहिन्द : अशोक शर्मा - 01763-2222585 ○  
जमू : एम.एम. दत्ता ○ पर्णित - 0191-2591709 ○  
कुस्तीन : कुन्तल पर्यामिन्द पर्मी - 951744-224722 ○  
हिसार : ओम प्रकाश मलिक ○  
लुधियाना : धर्मपाल ○  
पालमपुर : आर.एस.मिन्हास - 018874-238356 ○

\* \* \* \* \*

14 सितम्बर 2003

## नवग्रह शान्ति पितृदीप निवारण साधना शिविर एवं दीक्षा समारोह

शिविर स्थल : ऊमरगांव इण्डस्ट्रीज एसोशिएशन  
हॉल (यू.आई.ए.हॉल), जी.आई.डी.सी (गुजरात)  
आयोजक : बैंकेंट्र पंचाल - 0260-2340249 ○ शक्ति धाई प्रनामिनि  
○ मोहन भाई पठेन - 2640439 ○ पी.जे. पठेन - 2642403 ○  
देव्हर आर्ट - 2784848 ○ जयेश पठेन - 2254618 ○ विश्वानन्द  
देवाई - 2423444 ○ रम्यमाई एवं नितेन्द्र यादव - 2563128 ○  
संजय शर्मा - 98241-31909 ○ सुमन धाई भण्डारी - 2340013

५० 'अमाल' 2003 वंच-तंच-वंच विज्ञान '86' ५१

○ हरिभाई प्रजापति - 02742-253348 ○ भत्तल भाई जानी -  
02752-222107 ○ डिनेश गुरुला - 02642-238989 ○

\* \* \* \* \*

22 सितम्बर 2003

## पूर्वजन्म कृत दोष निवारण एवं मनोकामना सिद्धि साधना शिविर

शिविर स्थल : अग्रवाल, वाटूर वर्कर्स  
चौराहा, आगरा

आयोजक : श्री संजय शर्मा - 0562-215831 ○ फूल के विपाठी  
- 2183312 ○ करुणा नागर - 2368738 ○ एस.के.कुलधेंज  
- 2301464 ○ दिनेश अम्बाल - 2185516

\* \* \* \* \*

26-27 सितम्बर 2003

## निशक्ति साधना शिविर

शिविर स्थल : गंगल मूर्ति राभागृह, खात रोड,  
भण्डारा (महाराष्ट्र)

विवरण पृष्ठ ३१ पर  
\* \* \* \* \*

03-04 अक्टूबर 2003  
मां भगवती नवरात्रि  
साधना शिविर

शिविर स्थल : जयराम जनता हाई स्कूल,  
रामनगर, तहसील: आलापुर, जिला अम्बेडकर  
वगर, (3.प.)

विवरण पृष्ठ ३१ पर  
\* \* \* \* \*

रजिस्ट्रेशन नं. 35305/81  
With Registrar Newspapers of India  
Posting Date 23-24 every Month

A.H.W

Postal No. RJ/WR/19/65/2003  
Licence to Post without Pre Payment  
Licence No. RJ/WR/PP04/2003

## माह , विदुल्बर में दीक्षा के लिए निर्धारित दिवस

पूज्य गुरुदेव निम्न निर्दिष्ट दिवसों पर साधकों से मिलेंगे  
व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों  
पर पहुंच कर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

निर्धारित दिवसों पर यह दीक्षाएं प्रातः 11 बजे से 1 बजे के  
मध्य तथा सायं 5 बजे से 7.30 बजे के मध्य प्रदान की जाएंगी।

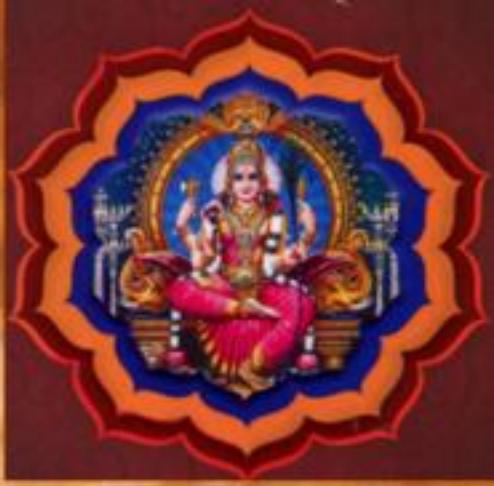
स्थान  
गुरुधाम (जोधपुर)  
दिनांक  
5-6-7 सितम्बर

स्थान  
सिद्धाश्रम (दिल्ली)  
दिनांक  
19-20-21 सितम्बर

बंध - 23

अंक - 8

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान डॉ. श्रीमानीमार्ग डॉड्कोट कोलोनी, जोधपुर-342001 राजस्थान, फोन : 0291-2432209, 2433623, टेलीफ़ोन-0291-2432910  
सिद्धाश्रम 306, कोडाठ एन्कलेय मानमपुरा, नई दिल्ली-34, फोन : 011-27182248, टेलीफ़ोन-11-27196700



## COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with  
By  
  
Avinash/Shashi

Icreator of  
hinduism  
server

